सरस्वती-सिरीज़

स्थायी परामर्शदाता—डा० भगवानदास, पण्डित अमरनाथ झा, भाई परमानंद, डा० प्राणनाथ विद्यालङ्कार, श्री सत्यदेव विद्यालङ्कार, पं० द्वारिकाप्रसाद मिश्र, संत निहालसिंह, पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे, बाबू संपूर्णानन्द, श्री बाबूराव विष्णुपराड़कर, पण्डित केदारनाथ भट्ट, ब्यौहार राजेन्द्रसिंह, श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख़्शी, श्री जैनेन्द्र कुमार, बाबू वृन्दावनलाल वर्मा, सेठ गोविन्ददास, पण्डित क्षेत्रेश चटर्जी, डा० ईश्वरीप्रसाद, डा० रमाशंकर त्रिपाठी, डा० परमात्माशरण, डा० बेनीप्रसाद, डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, पण्डित रामनारायण मिश्र, श्री संतराम, पण्डित रामचन्द्र शर्मा, श्री महेशप्रसाद मौलवी फ़ाज़िल, श्री रायकृष्णदास, बाबू गोपालराम गहमरी, श्री उपेन्द्रनाथ "अश्क", डा० ताराचंद, श्री चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार, डा० गोरखप्रसाद, डा० सत्यप्रकाश, श्री अनुकूलचन्द्र मुकर्जी, रायसाहब पण्डित श्रीनारायण चतुर्वेदी, रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, पण्डित सुमित्रानन्दन पंत, पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', पं० नन्ददुलारे वाजपेयी, पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी, पण्डित मोहनलाल महतो, श्रीमती महादेवी वर्मा, पण्डित अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', डा० पीताम्बरदत्त बडथ्वाल, डा० धीरेन्द्र वर्मा, बाबू रामचन्द्र टंडन, पण्डित केशवप्रसाद मिश्र, बाबू कालिदास कपूर, इत्यादि, इत्यादि।

विश्व-उपन्यास

बुभुक्षा

'जोहन बोयर' की प्रख्यात कृति
'दि ग्रेट हंगर' का अनुवाद।

महेन्द्रचन्द्र राय

यदि आप अभी तक इस सिरीज़ के ग्राहक नहीं बने हैं तो ग्राहक बनने में शीघ्रता कीजिए। या पुस्तक के पृष्ठभाग पर दी हुई सूची में से अपनी पसंद की पुस्तकें चुनकर अपने स्थानीय पुस्तक-एजेंट से लीजिए।

Sarsawati Serise No. 12

सरस्वती-सिरीज़ नं० १९

बुभुक्षा

(Bubhakhsha)

महेन्द्रचन्द्र राय

1 Mahenderchander Ray

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

Indian Press limited
Pariag'

प्रकाशक
इंडियन प्रेस लिमिटेड
प्रयाग

262

acc: no: 14341

Rs 0-10-0

Printed and Published by K. Mittra,
at The Indian Press, Ltd., Allahabad.

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

प्रथम खंड

प्रथम परिच्छेद

शीत-ऋतु के दीर्घ छायाह्न में, जब उत्तर-पछुवाँ तूफ़ान गरजता हुआ फियर्ड के दोनों किनारों के पाषाण-प्राचीरों के बीच में से पानी की बौछारों को सामने की ओर हाँकता हुआ चलता है, तब उसे सर्वनाश के काम में और सारे तूफ़ानों से बढ़कर कहा जा सकता है। उसके मन्थन से जल-राशि फेनिल हो जाती है; लहरें सनसनाती हुई आगे की ओर दौड़ती जाती हैं; वह तट की नावों को उलटकर मछुओं के भूरे झोंपड़ों के सामने ले जाकर फेंक देता है! बखारों के पुराने सेतु-पथों को उखाड़कर पत्तियों की तरह उड़ा ले जाता है। औरतें कहती हैं—हे प्रभु, दया करो। यह उन लोगों के दूध दुहने का समय होता है। आँगन के ऊपर से रेंगते हुए उन्हें किसी प्रकार से बालटी और लालटेन को घसीटकर ले जाना ही होगा; बत्ती बुझ जायगी और बालटी भी हाथ से छूट जायगी। बूढ़ी औरतें झोपड़ियों के अन्दर आग के चारों ओर बैठकर बड़बड़ाती हैं—हे प्रभु, रक्षा करो! उस समय उनका मन सुदूर उत्तर के लोफोटेन के मछुओं के साथ रहता है; संभव है इस रात को वे समुद्र के बीच पड़े हों।

परन्तु वसन्त-ऋतु के शान्त दिनों में यही 'फियर्ड' उज्ज्वल और स्निग्ध रूप धारणकर चुपके-चुपके अन्तरीप और खाड़ी के पास पहुँच जाता है। भाटा के समय छोटे-छोटे आश्चर्य-जनक द्वीप, बालूतट और सेवारों से ढकी हुई चट्टानें सूखकर

पानी के ऊपर निकल आती हैं। बीच-बीच में स्वच्छ जलाशयों में नंगे पैर नटखट लड़के पानी उछालते हैं। चवन्नी जैसी छोटी-छोटी मछलियाँ चारों ओर उछलती रहती हैं; उस समय एक आश्चर्यमय दृश्य सामने दिखाई देता है। गरम पानी के गंध से सुवासित वायु! समुद्रतट पर बिखरे हुए क़ीमती पत्थर! पानी के अन्दर की चट्टानों पर बैठकर झूलती हुई सी-पाई चिड़ियाँ—जो सूर्य की ओर लाल-लाल चोंच उठाकर चहचहाती हैं—'बसन्त आया!'

इसी प्रकार के एक दिन, क़रीब चौदह वर्ष के दो लड़के मछुओं की एक झोंपड़ी से तेज़ी से समुद्र-तट की ओर निकल आये। लड़कों का मन जितना शरारत में लगता है उतना अन्य किसी काम में नहीं। निस्सन्देह ये दोनों बालक भी कुछ ऐसा ही काम करने जा रहे थे। पीयर ट्रोयेन के केश सुन्दर थे; पर रंग पीला-सा था; वह दो पहियेवाली एक गाड़ी ढकेलकर ले जा रहा था; उसका युवक साथी मार्टिन ब्रुभोल्ड था, उसका रंग मैला था और चेहरे पर दाग़ थे; वह एक बालटी लिये जा रहा था। पानी के ऊपर उद्विग्न दृष्टि डालकर दोनों फुसफुसाते हुए कुछ सलाह कर रहे थे।

पीयर ट्रोयेन वास्तव में सरदार था। हमेशा वही अगुआ होता था; गत वर्ष की दवाग्नि का अपराध उसी के मत्थे मढ़ा गया था। उसने अपने कई मित्रों को स्पष्टरूप से समझा दिया था कि बड़ों की तरह बालकों को भी गहरे समुद्र में कटियादार जाल फेंकने का अधिकार है। जब जाड़े भर इन लोगों से बड़ों का काम कराया गया है, कोयला ढोना पड़ा है, लकड़ी काटनी पड़ी है; तब अब उथले पानी में ही वे क्यों मछलियाँ पकड़ें? गहरे समुद्र के जालों पर हाथ लगाना क्यों मना है? इस समय लोफोटेन में ज़ोरों से मछली पकड़ी जाती थी और वहाँ का काम ख़तम होने

के पहले किसी के लौटने की संभावना भी नहीं थी, इसलिए ये बालक कल बोट हाउस में चुपके-चुपके कटियों में चारा लगाकर फियर्ड के सबसे गहरे हिस्से में कटियादार जाल फेंक आये थे।

गहरे समुद्र में जाल फेंकने में मज़ा यह है कि इसमें इतनी बड़ी-बड़ी और भयानक मछलियाँ भी पकड़ी जा सकती हैं, जो पहले कभी न देखी गई हों। ख़ैर, कल की विपत्ति दूसरे क़िस्म की थी। इन लड़कों ने जब देखा कि तट के निकट जाल की डोरी को पानी में डुबोकर रखने के लिए उनके पास कोई भारी वस्तु नहीं है तब वे घबड़ा गये; उन्हें ऐसा मालूम होता था कि शायद उस काम को छोड़ ही देना पड़े। परन्तु पीयर की सहज बुद्धि ने एक तरकीब निकाल ली। अन्तरीप के अन्तिम सिरे पर एक 'फर' वृक्ष था। डोरी के एक सिरे को उसके साथ बाँधकर दूसरे सिरे को खुले फियर्ड के बीच ले जाने का निश्चय हुआ। इसके बाद फेंकनेवाले सिरे से पत्थर बाँधकर, मछलियों का आवाहन करते हुए उसे नाव से फेंक दिया गया। वह डोरी हरे पानी की गहराई में अदृश्य हो गई। काम तो हो गया; परन्तु तट के समीप दो चार कटिया पेड़ और पानी के बीच में लटकती हुई रह ही गईं। यद्यपि उनमें 'आइडर' अथवा 'गिलिमट' की भाँति के पक्षियों के फँसने की संभावना थी, किन्तु यह भी असंभव नहीं था कि कोई मनुष्य नाव-द्वारा आता हुआ उसमें फँस कर शिकार हो जाय। इसी लिए वे दोनों लड़के उद्विग्न होकर जल्दी-जल्दी नाव की ओर जा रहे थे।

अकस्मात मार्टिन बोल उठा—वह पीटर रोनिंगेन आ रहा है।

यह दल का तीसरा सदस्य था। यह युवक देखने में लम्बा पतला-सा था, भौं सफ़ेद-सी और चेहरा कुछ बेवकूफ़ का-सा। वह हक्लाता था और हँसते समय उसके मुँह से एक अद्भुत

शब्द निकलता था। दो बार उसे क्लास से उतार दिया गया था। असल में उसके मन में यह ख़्याल था कि जो वह कहना चाहता है उसे सुनने का धैर्य ही जब किसी को नहीं है तब किताब से पाठ सीखने की ज़रूरत ही क्या है ?

तीनों ने मिलकर नाव को ढकेलकर पानी में उतारा; इसके पश्चात् वे पेवन्द लगे पायजामे पहने हुए पैरों को लटकाते हुए बड़े मुश्किल से नाव पर चढ़े। तीर से किसी ने चिल्लाकर कहा—मुझे भी आने दे।

मार्टिन ने कहा—वह क्लाउस भी आ गया, ले लें उसे भी ?

पीटर रोनिगेन ने कहा—नहीं।

पीयर ने कहा—अरे हाँ, ले लो।

क्लाउस ब्रोक, ज़िला-डाक्टर का लड़का था। निकर-बोकर और सलर-ब्लाउज पहने हुए था। उसकी दोनों आँखें नीली थीं। वह मकान से भागकर आया था। घर पर प्राइवेट ट्यूटर उसे पढ़ाता था, अतः यह निश्चित-सा था कि घर लौटकर पिता के हाथ उसे कुछ मार खानी पड़ेगी।

डाँड़ निकालकर पीयर ने कहा—जल्दी ! क्लाउस नाव में चढ़ आया; सफ़ेद डोरीवाली चार डाँड़ की नाव खाड़ी के ऊपर से तेज़ी से हिलती हुई चली; क्योंकि लड़कों के डाँड़ बेतुके पड़ रहे थे। पीयर की तरफ़ निगाह रखकर मार्टिन सामने की ओर डाँड़ चला रहा था और पीयर पीछे से नेतृत्व कर रहा था। उसकी आँखों से आशंका टपक रही थी। मार्टिन भयभीत था; उसकी समझ में यह बात किसी तरह नहीं आती थी कि वह पीयर—जिसको बड़ा होने पर धर्मयाजक होना पड़ेगा क्यों चौबीसों घंटे उन्हीं कामों के पीछे लगा रहता है जो ईश्वर की दृष्टि में पाप हैं !

पीयर शहर का लड़का है; उसे इस गाँव में मछुओं के पास रखा गया है। लोग कहते हैं कि उसकी माँ विशेष अच्छी नहीं थी। पर उसकी मृत्यु हो गई है; और उसके पिता, वे चाहे और जो कुछ हों, पर इसमें कोई सन्देह नहीं कि धनी हैं। क्योंकि प्रत्येक बड़े दिन के समय वे अपने लड़के को दस-दस क्राउन की त्यौहारी देते हैं। उन क्राउनों को पीयर हमेशा अपने पाकेट में ही रखता है। इसलिए स्वभावतः अन्य लड़के पीयर की इज्जत करते हैं और अपना अधिकार समझकर वह भी सब कामों में अगुआ का काम करता है।

मटमैले पहाड़ी किनारे से नाव आगे बढ़ती गई; तट-भूमि और झोपड़ियाँ नीली होकर सुदूर में अस्पष्ट हो गईं। और ऊपर की ओर, दूर पर पहाड़ के बीच लाल लकड़ी का मकान सफ़ेद भीत के ऊपर स्पष्ट दिखाई देने लगा।

अन्त में वे उस खाड़ी में आ पहुँचे जहाँ पर 'फ़र' वृक्ष खड़ा था। पेड़ पर चढ़कर पीयर ने डोरी को अलग कर दिया; नाव के बगल में झुककर साथियों ने देखा कि डोरी अतल जल में अदृश्य हो गई। अब डोरी को उठाने पर क्या निकलेगा, कौन कह सकता है?

'खींचो'—कहकर पीयर ने हुकम दिया और नाव को उल्टी ओर घुमाना शुरू किया। फियर्ड के ऊपर से नाव अब सीधे आगे की ओर बढ़ने लगी। कटियादार डोरी को खींचकर उसे अच्छी तरह समेटकर एक टब के भीतर रखना शुरू हुआ। पीयर की छाती धड़कने लगी। अब एक खिंचाव मालूम हुआ—यही पहला खिंचाव था; गहरे पानी में मछली का अस्पष्ट हिलना अनुभव हुआ! छि! यह तो एक 'कॉड' है! अत्यन्त उपेक्षा के साथ पीयर ने उसे खींचकर उठाया। इसके बाद आई एक 'डिग' खैर, यह गहरे पानी की मछली तो है। इसके बाद एक टस्क,

इसके बाद और भी बहुत-सी मछलियाँ ! खाने में ये ख़राब नहीं हैं, इसलिए स्त्रियाँ ख़ुश हो जायँगी; इसी से आशा है कि बड़े लोग भी लौट आने पर शायद कुछ न कहें ।

परन्तु अब डोरी में ज़ोरों से झटका लगा; अब क्या आ रही है ? धूसर छाया की तरह कुछ दिखाई पड़ी। पीयर चिल्लाकर बोल उठा—बर्छा दे ! पीटर ने भाले को पीयर की ओर फेंक दिया और तीनों चिल्ला उठे—क्या है, क्या है ! "चुप ! नाव उलट जायगी ! कैटफिश है !" किनारे से भाले की एक चोट हुई और इसके बाद ही एक कुत्सित धूसर देह को नाव के ऊपर खींचकर उठाया गया; वह मछली लोटने लगी और हिस-हिस शब्द के साथ नाव के नीचे के लकड़ी के टुकड़ों को कड़कड़ाती हुई चबाने लगी। क्लाउस चिल्लाने लगा—देखो भाई, सावधान ! नाव पर वह जब-जब चढ़ता है तभी इस प्रकार चंचल हो उठता है।

लेकिन पीयर फिर डोरी उठाने लगा । इतने में वे फियर्ड के प्रायः बीचोबीच आ गये। अब डोरी उस रहस्य-पूर्ण गहराई से गुज़र रही थी जहाँ इसके पहले किसी भी मछुए ने डोरी नहीं डाली थी। खींचने में अब कठिनाई पड़ रही है, यह पीयर के चेहरे से मालूम हो रहा था; दूसरे लड़के उसके मुँह की ओर देख रहे थे। क्लाउस ने पूछा—डोरी ख़ूब भारी मालूम हो रही है क्या ? जहाँ पर तिरछी होकर डोरी पानी में घुस गई थी उस ओर ताककर मार्टिन ने कहा—चुप रह न ! पीयर खींचता ही गया । गंभीर समुद्र के तलप्रदेश से जो कम्पन-सा उसके हाथ तक पहुँच रहा था उसमें एक अप्रत्याशित इङ्गित मालूम हो रहा था और डोरी का स्पर्श कुछ अद्भुत-सा मालूम हो रहा था। ऐसा लगता था मानो एक दानवी हाथ धीरे-धीरे उसको नाव से उतारकर अतल गहराई में ले जाने के लिए खींच रहा है। इसके

बाद अकस्मात् एक भयानक झटका लगा और पीयर नाव से गिरते-गिरते बचा।

तीनों साथी एक साथ चिल्ला उठे—सावधान, यह क्या ?

पीयर ने चिल्लाकर कहा—बैठे रहो !

अनुशासन-प्रिय मछुओं की तरह सबने उस आदेश का पालन किया।

पीयर ने एक हाथ से सख़्ती के साथ डोरी को पकड़ा और दूसरे हाथ से बैठने की एक पटरी को खींचते हुए साँस रोककर किसी तरह कहा—दूसरा भाला है ?

लोहे की कटिया लगी हुई एक गदा निकालकर पीटर रोनिंगेन ने कहा—यह लो।

"मार्टिन, यह लेकर तू इधर मेरे पास खड़ा हो जा।"

"अरे क्या हुआ—यह क्या है ?"

"क्या जाने, कह नहीं सकता; पर बहुत बड़ा कुछ होगा।"

डाक्टर के लड़के ने भयार्त्त होकर कहा—जान बचाना हो तो डोरी काटकर डाँड़ चलाओ।

फिर एक झटका लगा और पीयर पानी में गिरने के क़रीब हो गया। गत वर्ष की आग लगाने की बात उसको याद आई; फिर एक दूसरी दुर्घटना को वह अपने ऊपर नहीं ला सकता। यदि वह भीषण जन्तु उठ आये और नाव को उलट दे ? ज़मीन से वे बहुत दूर हैं। यदि सब डूब मरें तो कैसी भयानक बात होगी ! और सब जान जायँगे कि यह दोष भी उसी का है ! अपनी इच्छा के विरुद्ध डोरी को काटने के लिए उसने छूरा हाथ में लिया। पर दूसरे ही क्षण उसे रखकर वह डोरी को खींचने लगा।

यह आ रहा है ! पानी के भीतर से एक प्रकाण्ड छाया उठी आ रही थी ! वह विशाल जलजंतु ज़ोरों से चक्कर खाने लगा

और पानी के ऊपर बुलबुले उठने लगे। वह है! एक सफ़ेद चमक दिखाई देती थी और उसके नीचे की ओर एक पाँत सफ़ेद दाँतों की दिखाई देती थी। आ हहा! अब समझा! यह उत्तरी समुद्र का सबसे भयंकर जानवर—ग्रीनलैण्ड का मगर है। कई छोटे लड़कों को ख़त्म कर देना इसके लिए मामूली बात है।

“माटिन, सावधान! भाले को ठीक रखना!”

जानवर पानी के ऊपर लोटने लगा। चारों ओर का पानी मानो उबल रहा था। पूँछ की चोट से उसने समुद्र को फेनिल कर दिया; कटिया से बिँधा हुआ उसका नोकीला सिर चक्कर मारकर पानी के ऊपर निकल आया। ‘मा···र्’ कहकर पीयर चिल्ला उठा; दोनों बरछे एक ही साथ जा पड़े; नाव एक ओर को झुक गई और पानी उसके अन्दर घुसने लगा। डाँड़ फेंककर और भगवान् हम लोगों को बचाओ—कहकर चिल्लाता हुआ क्राउस नाव के सामने के हिस्से में कूद पड़ा।

इसके बाद ही उस जन्तु के भारी शरीर को खींचकर उठाया गया। दोनों लड़के उधर झटके से गिरते-गिरते बच गये। लड़कों के हाथों से बरछे छूट गये और वे उस जानवर को जगह देने के लिए हटकर खड़े होगए। वह काला और प्रचंड शिकारी जानवर अपनी भयानक नोकीली नाक और ज्वालामय, क्रूर आँखों से अपना क्रोध प्रकट करने लगा। अपनी प्रबल पूँछ के आघात से उसने डाँड़ और पानी निकालने के पात्रों को पानी में फेंक दिया। लम्बे-लम्बे दाँतों से वह नाव के तले के और बैठने के पल्लों को काटने लगा। बीच-बीच में नाव से ऊपर आसमान की ओर कूदकर फिर नाव ही में गिरकर वह भयानक रूप से लोटने लगा और उसके मुँह से थुन्कार, फेन और हिस्-हिस् शब्द निकलने लगे; भयभीत विजयी लड़कों की ओर ताककर मानो वह कहना चाहता था—आओ न और थोड़ा पास?

मार्टिन ब्रुभोल्ड को यह भय हो रहा था कि मगर नाव को चूर-चूर न कर डाले। छुरा निकालकर वह एक क़दम आगे बढ़ा। छुरा एक बार शून्य में चमक उठा, फिर उसके पिछले हिस्से के पंख के बीच बिलकुल धँस गया और ख़ून की धारा निकल आई। वे बोल उठे—सावधान। इसी बीच मार्टिन कूदकर काली पूँछ से दूर हट गया। अब फिर मृत्यु-लीला का प्रारम्भ हो गया। छुरा पीठ में बिलकुल धँस गया था, एक बरछे की नोकीली फाल दो आँखों के बीच में धँस गई थी और दूसरी बगल में लटक रही थी। प्रत्येक झटके से लकड़ी के डंडे एक बार इधर, एक बार उधर छिटककर गिरने लगे। आर्त्तनाद करती हुई नाव काँपने लगी। पीयर ने कहा—यह शैतान नाव को चूर-चूर कर डालेगा और हम लोग डूब मरेंगे।

अब उसका छुरा चमक उठा और मगर के कन्धों के बीच से ख़ून की धारा पिचकारी की धार की तरह निकलने लगी। परन्तु इस आघात के झटके को वह सँभाल न सका। एक मुहूर्त में दो शरीर नाव में एक साथ लोट-पोट होने लगे। पतवार को पकड़कर क्लाउस चिल्ला उठा—हे भगवान, हमें बचाओ।

इतने में पीयर घुटनों के बल आधा उठा परन्तु नाव के एक किनारे को पकड़ने के लिए ज्यों हीं उसने हाथ बढ़ाया त्यों ही जानवर ने उसके हाथ को दाँतों से पकड़ लिया। उसका चेहरा यातना से विकृत हो उठा। पलभर में ही उसके तेज़ दाँत इस पार से उस पार निकल आते परन्तु पीटर रोनिंगेन ने क्षिप्रगति से डाँड़ फेंक दिये और अपना छुरा उस जानवर की आँख में भोंक दिया। छुरा एकदम मस्तिष्क को बेध गया। दाँतों की पकड़ ढीली हो गई।

पीटर रेंगते हुए डाँड़ के पास लौटा और हकलाकर बोला—हरामज़ादा श्...शैतान ! पीयर भी प्रयत्न करके उठ बैठा

और सामने के बैठने के पल्ले के पास कटे हुए हाथ की फटी आस्तीन को पकड़कर घुटनों के बल बैठ गया। उसकी उँगलियों से ख़ून टपकने लगा।

अन्त में जब वे उस भयानक जन्तु की लाश से लदी हुई नाव लेकर लौटने लगे तो एकाएक सबने डाँड़ चलाना बन्द कर दिया।

पीयर ने कहा—अरे क्लाउस कहाँ है? क्योंकि वह पतवार पकड़कर जहाँ बैठा था, वहाँ नहीं था!

"अरे, वह नीचे है!"

पन्द्रह साल का बहादुर, जो इसी उम्र में आशिक़ होने का गर्व करता था, जिसने जर्मन भाषा पढ़ी थी और जो अपने पिता की तरह शरीफ़ आदमी बनने ही वाला था, नाव के नीचे के हिस्से में बिलकुल मूर्च्छित होकर पड़ा था।

और सब लोग डर गये; परन्तु पीयर, जो अपने जख़्मी हाथ को धो रहा था, पानी उठाकर उस अचेतन बालक के मुँह पर छिड़कने लगा। क्लाउस तुरन्त उठ बैठा और नाव के किनारे को पकड़कर पागल की तरह चिल्ला उठा—अगर बचना चाहो तो डोरी काटकर डाँड़ खींचो!

और लड़के हो-हो करके हँस उठे; डाँड़ खींचना बन्द करके वे बैठे-बैठे सुस्ताने लगे। परन्तु घर लौटने के पहले, तट पर उतरकर सबने यह निश्चय किया कि क्लाउस की मूर्च्छा के बारे में कुछ नहीं कहा जायगा। इसके बाद कई हफ़्ते ग्रामवासियों की प्रधान आलोचना का विषय इन चार वीरों की करामात ही रही। इससे वे समझ गये कि बाप और चचाओं के लौटने पर उनकी मरम्मत होने का विशेष डर नहीं है।

द्वितीय परिच्छेद

बहुत थोड़ी उम्र में पीयर जोयेन में बूढ़े एक दम्पति के यहाँ भेजा गया था। उसके पहले भी वह इसी प्रकार एक परिवार से दूसरे परिवार में कई बार भेजा जा चुका था परन्तु इसकी उसे याद नहीं थी। गाँव के लोग उसे आजकल सनकी समझते थे! बात यह थी कि कुछ दिन पहले वह विरक्त होकर सबसे हट गया था और निःसंग रहा करता था। उसकी माँ की बात चलने पर उसे लोग अभागा कहते थे। उन लोगों के ऐसा कहने का क्या मतलब था, यह पीयर नहीं जानता था। पीटर रोनिंगेन तक ग़ुस्से में आकर हकलाता हुआ कह बैठता था—दोगला कहीं का!

पीयर जोयेन की औरत को माँ और उसको बाबू जी कहकर पुकारता था और ज़रूरत पड़ने पर कारख़ाने में और मछली पकड़ने के समय नाव में उसकी मदद करता था।

उसका शैशव ऐसे ही लोगों में बीता था जो हँसने को पाप समझते हैं और जिनके मन दारिद्र्य, धर्म-संगीत और नरक के भय से समुद्र के धूसर कोहरे की तरह म्लान हो गये थे।

कोयले के मैदान से लौटकर एक दिन उसने देखा कि घर के बड़े लोग अपराह्न के भोजन को सामने लिये ठंढी साँसें भर रहे हैं; मानो उनको सर्दी लग गई है। पीयर ने अपने कपाल से पसीना पोंछकर पूछा—क्या मामला है?

बड़े लड़के ने एक चम्मच 'पारिज' मुँह में डालकर आँख पोंछते हुए कहा—बेचारा पीयर। बूढ़े ने अपने सींग के चम्मच

को दीवार के फटे हिस्से में रखकर, लम्बी साँस लेकर कहा—आहा, बेचारा!

बड़ी लड़की ने खिड़की की ओर ताककर कहा—आख़िरकार माँ-बाप दोनों गये!

"माँ? कैसे?"

बूढ़ी ने गहरी साँस लेकर कहा—हाँ बेटा, वह चली गई है; ईश्वर की अदालत से उसकी पुकार आई थी, इसी लिए वह गई है।

दिन के अन्त में पीयर ने भी रोने की चेष्टा की। सबसे भयानक बात यह थी कि इस मकान के सभी लोग निश्चय के साथ कहते थे कि हम जानते हैं कि तुम्हारी माता की क्या गति हुई है। यह तो निश्चय है कि वह स्वर्ग को नहीं गई है। परन्तु इस विषय में ये लोग ऐसे निःसंशय कैसे हुए?

पीयर ने केवल एक बार अपनी माँ को देखा था। गर्मी की ऋतु में उसकी माँ इस स्थान को देखने आई थी। वह हलके रङ्ग की पोशाक पहने थी और उसके सिर पर एक स्ट्रा-हैट थी। पीयर को ऐसा मालूम होता था कि ऐसी सुन्दरी उसने पहले और कभी नहीं देखी। उसकी माँ ने यहाँ के पड़ोसियों से यह बात छिपाने की कुछ भी कोशिश नहीं की थी कि पीयर ही उसका एकमात्र संतान नहीं है; एक दूसरी जगह पर किन्हीं दूसरे लोगों के पास उसकी लुइसी नाम की एक लड़की रहती है। पीयर की माँ बहुत ही ख़ुश-मिज़ाज थी। जाते समय उसने पीयर को चूमा था और हैट के नीचे से हँसते हुए कई बार उसकी ओर घूम-घूमकर ताका था। पीयर को लगा था कि उसकी माँ दुनिया की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी है।

परन्तु अब वह कहाँ है? जहाँ पर पापी लोग भीषण

यंत्रणा में समय काटते हैं, वहाँ पर? क्या अनन्त काल तक उसको वहाँ रहना पड़ेगा? इससे मुक्ति की कोई आशा नहीं है? पीयर के मन में केवल वह छवि उद्भासित हो उठती है; वह हलके रङ्ग की पोशाक, वह स्ट्रा-हैट, उसकी हँसी और गीत!

अब समस्या यह थी कि इस लड़के का ख़र्च कौन देगा। हाँ, उसके बप्तिस्मा के सार्टीफ़िकेट में यह लिखा है कि उसके पिता का नाम होल्म है और वह क्रिश्चियानिया में रहता है; परन्तु उसकी माँ के कहने से मालूम होता था कि वे बहुत दिनों से ग़ायब हैं। अब इस लड़के का क्या हो?

रात रात भर ऊपर के कमरे में जागकर नीचे के कमरे में अपने बारे में होनेवाली चर्चा वह सुनता रहता था। इसके बाद कम्बल ओढ़ सो जाता था। नीचे सोनेवालों में से रात को जो जागता, उसे ऊपर के कमरे में निद्रित अवस्था में किसी के रोने की आवाज़ सुनाई देती। रोज़ सुबह को जागते ही उसके मन में यह भय होता था कि शायद आज ही बूढ़े पालक पिता-माताओं से विदा होकर अनजान लोगों के पास नौकरी करने के लिए उसे चला जाना होगा।

इतने में फियर्ड के पास की इस कुटिया में अचानक एक अभिनव घटना हुई। बड़ी-बड़ी मुहरें लगी हुई एक रजिस्टरी चिट्ठी आई, उसे किसी ने ऐसा लिखा था कि उसका पढ़ना एक प्रकार असम्भव ही था। चिट्ठी खुलने के समय बड़े लड़के के चारों ओर भीड़ लग गई। चिट्ठी खुलते ही दस दस क्राउन के पाँच नोट लिफ़ाफ़े के अन्दर से टपक पड़े। विस्मित होकर सब लोग बोल उठे—यह क्या! ये हमारे लिए हैं क्या? अब पत्र पढ़ने की समस्या उपस्थित हुई। यह चिट्ठी पीयर के पिता की थी। चिट्ठी में लिखा था—लड़के को अच्छी तरह रखना; प्रति छः महीने के

बाद ५० क्राउन भेजा करूँगा। लड़के के भोजन और पोशाक का प्रबन्ध ठीक से रखिए !

आपके विश्वस्त
पी होल्म्-कैप्टेन।

हकलाती हुई बड़ी लड़की बोली—अरे पीयर, तुम्हारा पिता तो कप्तान है ! अफ़सर है ! यह कहकर पीयर को अच्छी तरह देखने के लिए वह कुछ पीछे हट गई।

नोटों को अच्छी तरह हाथ में लेकर मानो ईश्वर को समाचार देने के उद्देश्य से छत की ओर ताककर बड़े लड़के ने कहा—अब पीयर के खर्च के लिए हम लोगों को पहले से दूने रुपये मिलेंगे।

परन्तु बुढ़िया कृतज्ञता से हाथ जोड़कर सोच रही थी—अब लड़के को छोड़ना नहीं पड़ेगा।

बड़े दिन के अवसर पर पीयर के पास खर्च के लिए दस क्राउन का एक नोट आया। पीयर ने नोट को भुना लिया। उसका रुपये का थैला ऐश्वर्य से मानो फटने लगा। अब वह सिर ऊँचाकर राजकुमार या सर्दार की तरह चला फिरा करेगा। डाक्टर का पुत्र क्लाउस ब्रोक तक पीयर को सन्तुष्ट करने की आशा से उसको ताश का खेल सिखलाने लगा।

इतना होने पर भी कोई यह नहीं कह सकता था कि पीयर बड़ा घमंडी है, या वह मछली पकड़ने के काम में या लोहार के काम में मदद करना नहीं चाहता। परन्तु जब जलते हुए लोहे के पिंड से चिनगारियों की वृष्टि होती थी उस समय वह एक स्वप्न देखता था, भविष्य का स्वप्न ! हाँ वह पादरी बनेगा। सम्भव है कि वह इस समय एक उच्छृङ्खल और निकम्मा लड़का मात्र हो। परन्तु चाहे जो कुछ हो वह धर्मयाजक बनेगा; पर वह चश्माधारी तोंदवाला धर्मयाजक नहीं होगा;

वह एक स्वर्ग-दूत-सा बनेगा, जिसकी पोशाक तुषार-शुभ्र और जिसका मुखमण्डल ज्योतिर्मय होगा। संभवत: एक दिन आयेगा जब वह उस दु:खमय जगत् में जा सकेगा जहाँ पर उसकी माँ है और वहाँ से वह उसको मुक्त कर लायेगा। हेमंत की किसी एक संध्या में शुभ्रकेश विशप के रूप में अपने प्रासाद के बाहर आकर ज्यों ही वह उँगली उठाकर खड़ा होगा, आकाश में सारे नक्षत्र गीत गाना शुरू कर देंगे।

एक दिन ग्रीष्म-संध्या के समय जब पीयर पहाड़ से उतर रहा था, उसने देखा कि एक भद्र पुरुष छोटी गाड़ी में सवार होकर सड़क छोड़कर छोटे रास्ते से जोयेन की ओर जा रहे हैं। एकाएक घोड़ा बिगड़ गया; साईस के लगाम खींचकर हंटर मारते ही उसने पिछले पैरों पर खड़े होकर गाड़ी को नचाना शुरू कर दिया। उन भद्र पुरुष ने ग़ुस्से में आकर कहा—जाने दे, पैदल चलना पड़ा और क्या! यह कहकर उन्होंने लगाम को लड़के की ओर फेंक दिया और कूदकर नीचे उतर आये। ठीक उसी समय पीयर भी नज़दीक आ गया था।

भद्रपुरुष ने कहा—लड़के, इस बैग को ज़रा पकड़ सकोगे? और...इतना कहकर अकस्मात् एक क़दम पीछे हटकर, लड़के की ओर ताककर बोले—नहीं, नहीं, ठहरो, क्या तुम पीयर हो?

पीयर घबरा गया और टोपी उतारकर बोला—ज्...जी हाँ!

"ओहो! अच्छा, अच्छा! मैं होल्म हूँ!"

गाड़ीवान गाड़ी लेकर चला गया। शहराती भद्रपुरुष और पेवंददार पायजामा पहिने हुए वह पीला-सा गँवार लड़का दोनों परस्पर एक दूसरे का मुँह ताकने लगे।

नवागत पुरुष की अवस्था लगभग पचास के होगी; उनका शरीर बहुत ही मज़बूत और कर्मठ था यद्यपि उनके बाल और अच्छी तरह बनाई हुई डाढ़ी में कुछ सफ़ेदी आ गई थी। वेस्ट

कोट के ऊपर सोने की चेन दिखाई पड़ती थी। एक हाथ में छाता और दस्ताना, दूसरे हाथ में हलका बैग था और पैरों में सुन्दर पालिश किये हुए जूते थे। ये पीयर के पिता थे।

"अच्छा, देखने में तुम ऐसे हुए हो! उम्र के लिहाज़ से तो तुम बड़े नहीं हो! तुम्हारी उम्र क़रीब सोलह वर्ष की है न? तुम्हें खाने को तो अच्छा देते हैं?—"

पीयर ने दृढ़ स्वर में कहा—हाँ।

दोनों फ़ियर्ड के पासवाली धुँधली कुटिया की ओर चले। अकस्मात् रुककर अर्धमुद्रित दृष्टि से उस ओर ताकते हुए उसने कहा—कई सालों से तुम वहीं रहते हो न?

"हाँ।"

"उस छोटी कुटिया में?"

"हाँ, वहीं पर; लोग उसे 'ट्रोयेन' कहते हैं।"

"उधर की दीवार जिस प्रकार से झुक गई है, उससे मालूम होता है कि जल्दी ही वह गिर पड़ेगी।"

इस पर पीयर ने हँसना चाहा, परन्तु गले में मानो कुछ अटक गया। अपने माता-पिता की छोटी कुटिया के बारे में बड़े आदमियों को इस प्रकार कहते सुनकर उसको कष्ट होता था।

दरवाज़े पर इन अद्भुत भद्रपुरुष के पहुँचते ही बड़ी हलचल दिखाई दी। चारों ओर ताकते हुए मुसकराकर आगंतुक ने कहा—अब तो आ गये, मेरा नाम होल्म है। अंचल से हाथ पोंछती हुई बुढ़िया ने धीमे स्वर में कहा—ओहो! कैप्टन साहब स्वयं पधारे हैं?

वे स्नेहशील पुरुष थे; जल्दी से उन्होंने सबको शान्त किया। सम्मानित व्यक्ति का आसन लेकर, उँगली से टेबुल को बजाते हुए वे स्वच्छन्दतापूर्वक सबसे बात-चीत करने लगे।

इसके बाद उन्होंने एक पैकेट निकाला—पीयर इधर आओ तो, लो, यह तुम्हारे लिए है। 'यह' माने कोई मामूली चीज़ नहीं, एकदम चाँदी की घड़ी! पीयर उसी दम दौड़कर और लड़कों को वह दिखला न सका, इसलिए उसके मन में कष्ट होने लगा। ताली बजाकर बुढ़िया बोल उठी—ये तुम्हारे पिता हैं। कहते समय बुढ़िया की आँखों में आँसू भर आये। परन्तु बुढ़िया के कंधों पर हाथ रखकर अतिथि ने कहा—पिता! हाँ, पर इस बारे में उतना निश्चय नहीं है!

मार्टिन ब्रुभोल्ड के मकान में इस अतिथि के रहने का बन्दोबस्त हुआ; वहाँ पर लोगों की भीड़ लग गई। मार्टिन स्वयम् भी बाहर खड़ा था। "पीयर, यह तुम्हारा दोस्त है न? लो जी, इससे एक बड़ा खेत ख़रीद सकोगे।"—पाँच क्राउन का नोट था; नोट को हाथ में लेकर मार्टिन खड़ा रह गया; अपनी आँखों पर वह विश्वास नहीं कर सकता था। फिर पीयर की ओर देखकर मुसकराते हुए उन्होंने पूछा—अच्छा बेटा, स्कूल में पढ़ाई अच्छी तरह हो रही है न?

पीछे हाथ करके, एक पैर आगे बढ़ाकर पीयर ने कहा—हाँ, मास्टर साहब तो ऐसा कहते हैं।

"अच्छा, बारह का दूना कितना होता है?"

एकदम वज्राघात हो गया! पीयर को दस के आगे का पहाड़ा मालूम नहीं था।

कुछ देर तक चुपचाप तम्बाकू पीने के बाद अकस्मात् उन्होंने कहा—देखो बेटा, तुम्हारी एक बहन है, जानते हो?

"हाँ, जानता हूँ।"

वह तुम्हारी एक माँ के गर्भ की बहन है। मुझको भी मालूम नहीं कि वह मेरी लड़की कैसे हुई। ख़ैर, तुमको बतला देता हूँ कि मैं बराबर तुम्हारे लिए आज की तरह ख़र्चा देता आया

हूँ। पहले ख़र्च तुम्हारी माँ के पास भेजता था...और हाँ, बेचारी के और एक लड़की भी थी; परन्तु उसका ख़र्चा देनेवाला कोई न था। इसी लिए मेरे ही भेजे हुए रुपये से वह दोनों का ख़र्चा चलाती थी। .ख़ैर, उस बेचारी को इसलिए हम दोषी नहीं कह सकते। मैं समझता हूँ कि तुम्हारी उस बहन की भी देख-रेख हम लोगों को करनी होगी। जब तक वह बड़ी न हो जाय। तुम भी यही सोचते हो न ?

पीयर की आँखों में आँसू आने लगे। सोचना क्या ? वह तो निश्चय ही !

दूसरे दिन पीयर के पिता चले गये। जाने के समय जोयेन के उस सोने के कमरे में .फेल्ट हैट, ओवरकोट इत्यादि लिये हुए वे खड़े हो गये और गिरजा के सामने, 'शेरिफ' जिस प्रकार से लोगों के प्रति घोषणा करते हैं, उसी प्रकार से उन्होंने कहा—हाँ, लड़के को इसी साल 'कनफर्म' (Confirm) कराना चाहिए। बुढ़िया माँ ने जल्दी से कहा—हाँ, ज़रूर कराऊँगी।

"और मैं चाहता हूँ कि उसको उपयुक्त पोशाक दी जाय, सब लड़कों में जिसकी पोशाक सबसे अच्छी हो उसी की तरह। और यह पचास क्राउन अन्तिम दक्षिणा के रूप में स्कूलमास्टर और पादरी को दिया जाय।"—यह कहकर उन्होंने और भी कुछ नोट दिये।

इसके बाद वे कहने लगे—जब तक उसे कोई अच्छा पद नहीं प्राप्त होता तब तक मैं उसकी देखभाल करूँगा; परन्तु पहले देखना होगा कि उसका दिमाग़ किस लायक़ है, वह क्या होना चाहता है। शहर में आकर मेरे साथ इन विषयों पर बातचीत करना अच्छा होगा। ख़ैर, 'कनफर्म' हो जाने के बाद मैं सब बन्दोबस्त करूँगा। अगर इस बीच मेरे अदृष्ट में ऐसी कोई अप्रत्याशित बात हो जाय तो सेविंग बैंक में उसके लिए कुछ

धन जमा है। मेरे एक मित्र हैं, वे इस विषय में सब कुछ जानते हैं; उन्हीं को लिखने से सब काम हो जायगा। अच्छा, गुडबाई, बहुत बहुत धन्यवाद !

इसके बाद मुसकराते हुए और सबके साथ हाथ मिलाते हुए, हैट हिलाकर वे चले गये।

हेमन्त ऋतु के अन्तिम भाग में 'कनफ़र्मेशन' का समय आया। प्रकाण्ड वृक्षों की चोटियों के बीच में से, अलकतरे से ढँकी हुई दीवारों से युक्त पुरानी लकड़ी के गिरजे से घण्टे की ध्वनि नील आकाश में विस्तृत होने लगी। पीयर को ऐसा प्रतीत होने लगा मानो कोई स्नेहमयी बुढ़िया दादी प्रेमपूर्ण स्वर से पुकार कर कह रही है—आ जाओ, बूढ़ो और जवानो आ जाओ—फ़ियर्ड से, घाटियों से, उत्तर से, दक्खिन से, आ जाओ, आ जाओ! सब दिनों से उत्तम यह दिन है, आ जाओ रे, आ जाओ!

यह छोटा गिरजा कितना अच्छा और स्नेहमय प्रतीत होता है! यहाँ जिधर देखो सभी स्वागत कर रहे हैं!

पीयर सदैव सोचता रहता—धनी बनूँ या न बनूँ, कुछ परवाह नहीं, मैं धर्मयाजक अवश्य ही बनूँगा। और संभवतः उस समय मैं अपने सब धन से एक ऐसा गिरजा बना सकूँगा जैसा कि कभी किसी ने न देखा होगा। और यदि मार्टिन ब्रुभोल्ड शादी करने के लिए राज़ी होगा तो मैं अपने गिरजे में सबसे पहली शादी उसके साथ अपनी छोटी बहन लुइसे की करूँगा।

कुछ दिनों के बाद शहर में आकर स्कूल में पढ़ने के लिए पीयर ने पिता को चिट्ठी लिखकर आज्ञा माँगी। लंबी प्रतीक्षा के बाद अपरिचित हस्ताक्षरों का एक पत्र आया। जोयेन के सब प्रौढ़ लोग फिर इस पत्र को पढ़ने के लिए इकट्ठे हुए। परन्तु सभी लोग विस्मित हो गये जब कि उन्होंने अग्रलिखित शब्द पढ़े :—

"संभवतः अब तक तुम्हें अख़बारों से ज्ञात हो गया होगा कि तुम्हारे सहायक कर्नल होल्म घोड़े से गिरकर मर गये हैं। इसलिए तुमसे मेरा अनुरोध है कि यथासंभव शीघ्र मुझसे मिलो। तुमसे कुछ ज़रूरी बातें करनी हैं—तुम्हारा विश्वस्त, जेग्रन्ट, सीनियर मास्टर।"

सब लोग एक दूसरे का मुँह ताकने लगे।

पीयर रोने लगा; लेकिन वह विशेषकर इसलिए रो रहा था कि अब जोयेन के सब निवासियों को, दोनों गायों को, उनके बछड़ों को और भूरे रंग की बिल्ली तक को छोड़कर उसे चला जाना होगा। शायद कल ही उसको सीधे क्रिस्टियाना स्कूल में पढ़ने के लिए चल देना होगा और फिर जब वह लौटकर आयेगा, शायद उस समय फिर बुढ़िया माँ को देख न पायेगा।

इसलिए जब चेचक के चिह्नों से युक्त चेहरेवाली माँ और टेढ़ी टाँगोंवाला बूढ़ा उसको घाट तक पहुँचाने आये, उस समय तीनों का मन विषाद-पूर्ण था। थोड़ी देर वह फियर्ड-स्टीमर के 'डेक' पर खड़ा होकर ताकता रहा। तट पर की दोनों मूर्तियाँ धीरे-धीरे छोटी होने लगीं। इसके बाद अन्तरीप की आड़ में छोटी बस्ती की कुटियाँ भी एक-एक करके अदृश्य हो गईं। अब जोयेन के सब पहाड़ और जंगल भी, जहाँ उसने लकड़ी काटी है, झुण्ड से भटके हुए पशुओं को ढूँढ़ा है द्रुतगति से अदृश्य होने लगे। इसके बाद सारा परगना ही दृष्टि के बाहर चला गया। उसके साथ ही पीयर के बाल्यकाल का भी अवसान हो गया।

तृतीय परिच्छेद

दूसरे दिन सबेरे घर की बुनी हुई पोशाक पहिनकर रिवर स्ट्रीट से होते हुए पुल को पारकर पहाड़ के ऊपर से रास्ता पूछते हुए वह एक बँगले पर आ पहुँचा। अन्त में बग़ीचे के भीतर एक सफ़ेद रंगवाले लकड़ी के मकान के सामने आकर वह खड़ा हुआ। यह वही स्थान है जहाँ उसको मालूम होगा कि उसके अदृष्ट में क्या है!

फिर पीयर एक कमरे के अन्दर प्रविष्ट हुआ। उसकी दीवालों में किताबें क़तार से लगी हुई थीं और बीच में एक बड़ा टेबुल था। 'बैठो-बैठो'—कहकर उत्कण्ठित-भाव से, गले को साफ़ कर, एक मुहूर्त के लिए उसे देखकर और लम्बी पाइप में तम्बाकू भरकर, स्कूलमास्टर ग्रण्ट ने कहा—तुम? तुम पीयर हो न? ठीक है! यह कहकर अकस्मात् फ्रेमयुक्त एक फ़ोटो की ओर उन्होंने हाथ बढ़ाया। पीयर ने देखा कि वह सैनिक-वेश में उसके पिता का चित्र है। स्कूल-मास्टर ने चश्मे को उठाकर फ़ोटो की ओर ताका; फिर चश्मे को लगाकर पीयर के मुख का निरीक्षण करने लगे। कुछ देर के मौन के बाद उन्होंने कहा—ओ, ठीक है, हूँ। पीयर की ओर मुँह करके बोले—तुम्हारे शुभाकांक्षी की मृत्यु बिलकुल अप्रत्याशित थी। यह बहुत ही अकस्मात् हो गई! आज उनकी अन्त्येष्टि है।

पीयर ने सोचा—शुभाकांक्षी क्यों? 'तुम्हारे पिता' क्यों नहीं कहा?

खिड़की की ओर ताकते हुए स्कूल-मास्टर ने फिर कहा—हाँ जी, कुछ दिन पहले उन्होंने तुम्हारी जो कुछ मदद की

थी उसके बारे में उन्होंने मुझको सभी बातें बताई थीं। और यदि उनको कुछ हो जाय तो तुम्हारे ऊपर नज़र रखने के लिए भी मुझसे कहा था। तो तुम अब अपना प्रबन्ध कर लोगे न ?

अपने स्थान पर थोड़ा हिलकर पीयर ने उत्तर दिया—हाँ।

"अब, 'हाँ!' तुम्हें निश्चय करना है कि तुम कौन रास्ता पकड़ोगे।"

"जिनके बीच में तुम इतने दिन पाले-पोसे गये हो, हम आशा करते हैं कि तुम भी उन्हीं की तरह मछुआ बनना चाहते हो ?"

अवज्ञा के साथ सिर हिलाकर पीयर ने उत्तर दिया—नहीं।

"नहीं, तो और कोई काम-धंधा ?"

"नहीं।"

"अच्छा, तो तुम शायद अमेरिका जाना चाहते हो ? बहुत अच्छा, वहाँ जाने के लिए साथी मिलना कुछ मुश्किल नहीं है। परन्तु बड़े खेद की बात है कि जिस प्रकार से झुण्ड के झुण्ड लोग चले जा रहे हैं उससे..."

पीयर ने अपने को सँभालकर शहरवालों के लहजे में कहा—नहीं, नहीं, ऐसा नहीं। मैं धर्मयाजक बनना चाहता हूँ।

स्कूल-मास्टर एक हाथ में पाइप लेकर खड़े हो गये और अच्छी तरह फिर सुनने के लिए दूसरा हाथ कान के पास ले जाकर उन्होंने पूछा—क्या ? क्या कहते हो ?

पीयर ने दोहराया—धर्मयाजक; परन्तु कहने के साथ ही साथ वह कुर्सी से कुछ हटकर जा खड़ा हुआ; क्योंकि ऐसा प्रतीत होने लगा था कि स्कूल-मास्टर पाइप को उसके सिर पर पटक देंगे।

"मेरी समझ में नहीं आता कि किसने तुम्हारे दिमाग़ में यह पागलपन घुसेड़ा है।"

बहुत कोशिश के बाद पीयर के कण्ठ से निकला—यही मैं बराबर से चाहता आया हूँ, और पिता जी भी...

14341

"कौन ? पिता जी ? क्या तुम अपने शुभाकांक्षी की बात कर रहे हो ?"

पीयर अब न रह सका, उसने कहा—क्यों, क्या वे मेरे पिता नहीं थे ?

झूमते हुए स्कूल-मास्टर पीछे की कुर्सी पर बैठ गये और उद्दण्ड पागल की ओर जिस तरह हताश होकर लोग ताकते हैं, उसी प्रकार से ताकते रह गये। अन्त में अपने को ज़रा-सा सँभालकर उन्होंने कहा—देख छोकरे, हाँ क्या कहते हैं...क्या आज से उनको तुम अपना शुभाकांक्षी कहकर सन्तुष्ट नहीं रह सकोगे ?

रोना-सा होकर पीयर ने अस्फुट स्वर से कहा—जी, हाँ।

"तुम और जिन लोगों ने तुम्हारे दिमाग़ के अन्दर ये फ़िज़ूल की बातें भर डाली हैं, वे सभी उस रुपये का ख़्याल कर रहे हैं जो कि उन्होंने...।"

"हाँ, सेविंग बैंक में हिसाब है न ?"

"ओहो, वही कहो, हाँ हाँ, ज़रूर है, मेरे ही पास वह हिसाब है।"—उठकर एक ड्रायर में से ढूँढ़कर उन्होंने एक छोटा-सा हरे जिल्दवाला ख़ाता निकाला। पीयर की दृष्टि उस पर मानो जम गई।

"यह हिसाब है। यह देखो, तुम्हारे नाम अठारह सौ क्राउन जमा हैं।"

सर्वनाश ! पीयर को ऐसा मालूम होने लगा कि मानो वह आसमान से ज़मीन पर गिर गया है। दस लाख क्राउन—धर्मयाजक—विशप—क्रिस्टियानिया—और, और जो कुछ था; सभी स्वप्न की तरह अदृश्य होकर मिट गया।

"जिस दिन तुम कारीगर, किसान या मछुए का काम कोशिश से शुरू कर सकोगे और जिस दिन मैं अपने विचार से ऐसा

समझूँगा कि तुम्हारी मदद करनी चाहिए, उस दिन मैं तुमको यह खाता सौंप दूँगा, उसके पहले नहीं। मैंने जो कहा, समझ गये ?"

"हाँ।"

"क्या ? रोते हो क्या ?"

"न...नहीं, अच्छा नमस्कार—"

"नहीं-नहीं, जाओ मत, बैठो। हम लोगों को अभी दो-चार बातें और तय कर लेनी हैं। देखो बेटा, पहली बात यह है कि तुम मुझ पर विश्वास रक्खो। मैं तुम्हारी भलाई चाहता हूँ, क्या तुम ऐसा विश्वास नहीं करते हो ?"

"जी हाँ।"

"तब तो तुम मानते हो न कि तुम्हें कालेज इत्यादि में पढ़ने के विचार को मन से बिलकुल हटा देना चाहिए ?"

"जी हाँ।"

"और तुम स्वयम् ही देख रहे हो कि यदि यह मान भी लिया जाय कि तुम्हारी बुद्धि अच्छी है, तथापि जो रुपया है, बतौर दान के, वह यथेष्ट होने पर भी, तुम्हें अधिक दूर नहीं ले जा सकेगा।"

"जी, न्-नहीं।"

पीयर ने लम्बी साँस ली, खड़े-खड़े उसका शरीर झुक गया। जब उसने देखा कि वह हरा खाता फिर ड्रायर में बन्द हो गया और गाउन के नीचे के पाकेट में चाभी का गुच्छा शब्द करता हुआ लौट आया, तो उसको ऐसा मालूम होने लगा, मानो कोई व्यंग्य के साथ उँगली उठाकर कह रहा है—कैसा हुआ ?

"हाँ, और एक बात। तुम्हारा नाम क्या है ? अर्थात् किस नाम से तुमने पुकारे जाने का विचार किया है ?"

कनफ़र्मेशन के समय विशप के अपने सिर पर हाथ रखकर पूछने पर, उसने जैसे उत्तर दिया था अब भी वैसे ही सीधे खड़े होकर उसने कहा—मेरा नाम पीयर होल्म !

सामने आकर प्यार से कंधे पर हाथ रखते हुए मास्टर साहब ने कहा—देखो बेटा, यह नहीं हो सकता।

पीयर का हृदय काँप उठा कि कौन-सा अपराध हो गया है।

"सुनो बेटा, क्या तुमने यह सोचा है कि यहाँ पर इसी नाम के और भी मनुष्य हो सकते हैं ?"

"हाँ, लेकिन..."

"ज़रा ठहरो—और यदि यह उनको मालूम हो जाय तो उन लोगों को अत्यन्त कष्ट होगा और कुछ दिक़्क़तें भी होंगी। देखो, मैं तुमको सयाना और शरीफ़ समझकर यह सब कह रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि तुम एक विधवा और उसकी निर्दोष सन्तानों के संताप और शोक के कारण बनना नहीं चाहोगे। अहा, इसमें रोने की बात कुछ नहीं है। मेरे मित्र, जीवन में दुःख तो है ही, उसे सहना पड़ता है। अब तक तुम जिस मकान या गाँव में थे उसका नाम क्या है ?

"त्—त्रोयेन।"

"त्रोयेन, वाह, बड़ा सुन्दर नाम है। तो आज से तुम अपना नाम पीयर त्रोयेन बतलाओगे।"

"अ...च्छा।"

"और यदि कोई तुमसे तुम्हारे पिता का नाम पूछे तो शपथ करो कि कभी अपने शुभाकांक्षी का नाम नहीं बतलाओगे ?"

"अ...च्छा।"

"बहुत अच्छा, तब जितनी जल्दी हो सके इरादा पक्का करके मुझे आकर बतलाना। भविष्य में हम लोगों में गहरी दोस्ती होगी, देखना। अमेरिका नहीं जाओगे, निश्चय है न ? बहुत अच्छा। चलो तो रसोईघर में, देखें तुम्हारे लिए कलेवा का कुछ प्रबन्ध हो सकता है या नहीं।"

चतुर्थ परिच्छेद

वहाँ से निकलकर पीयर सड़क पर आया और सोचने लगा कि अब क्या करूँ ? पहले इच्छा हुई कि त्रोयेन में लौटकर बूढ़े 'माता-पिता' के साथ इस विषय पर बात-चीत करे। वे मेरे लिए दुःखी होंगे और सहानुभूति भी प्रकट करेंगे। परन्तु वह जानता था कि एक या दो दिन के बाद वे लोग सोचेंगे कि अब मेरे लिए ख़र्चा देनेवाला कोई नहीं है। साथ ही यह भी सोचेंगे कि आजकल बड़ी महँगी के दिन हैं। नहीं, अब मेरे लिए कोई भी स्थान नहीं है। परन्तु अब मैं क्या कर सकता हूँ ? बात साफ़ है, दुनिया में बिलकुल अकेला रहना आसान बात नहीं है।

कुछ देर के बाद वह एक गिरजा के आँगन के पास के पहाड़ी ढाल पर पीले वृक्षों के नीचे जा बैठा। स्वप्नाविष्ट की भाँति वह सोच रहा था कि उसके पिता की समाधि कहाँ पर होगी ? उनमें और इस स्कूल-मास्टर में कितना अन्तर है ! उनमें उपदेश देने की आदत न थी, उनका लड़का अपना क्या परिचय देगा और क्या न देगा, इस विषय में उनको कोई परेशानी न थी। वे क्यों मर गये ?

इसी बीच गिरजे के आँगन में लोग जमा होने लगे। उसमें कुछ आफ़िसर थे, कुछ स्त्रियाँ थीं। सभी शोकसूचक काले वस्त्र पहने थे। एक महिला आँखों से रूमाल लगाये रो रही थी। पीयर ने सोचा—वह मेरी माँ होगी। कुछ युवतियाँ और युवक भी शोक-परिधान में दिखाई दिये। पीयर को विश्वास हो गया कि सब उसके पिता की अन्त्येष्टि का आयोजन है। वह भी धीरे से उस भीड़ में मिल गया।

धर्मयाजक उसके पिता के बारे में क्या कहते हैं, यह सुनने के लिए वह व्यग्र हो उठा, यद्यपि किसी प्रकार से वह यह समझ गया था कि बहुत निकट जाना उसके लिए उचित न होगा। तथापि अपने अनजाने ही धीरे-धीरे वह कुछ निकट पहुँच गया।

बैण्ड बाजे के साथ समाधि के पास प्रार्थना-संगीत गाया गया। पीयर ने अपने सिर पर से टोपी उतार ली। वह इतना अधिक तन्मय हो गया था कि उसको यह मालूम ही न हुआ कि शोकार्त्त व्यक्तियों में से एक व्यक्ति उसको बहुत ध्यान से देख रहा है और दल को छोड़कर उसकी ओर आ रहा है। वे थे वही स्कूल-मास्टर साहब। ऐसी विकट और उग्रमूर्त्ति धारण करके वे ताकने लगे कि ऐसा प्रतीत हुआ मानो चश्मे से आग निकल आयेगी।

काले दस्ताने से ढँके हुए हाथों को रगड़ते हुए पीयर के सामने फुसफुसाकर वे कहने लगे—तुम, तुम, क्या तुम पागल हो? यहाँ तुम क्या कर रहे हो? आज जैसे दिन तुम एक भयानक काण्ड करना चाहते हो? जाओ, सुनते हो, चले जाओ यहाँ से। ईश्वर की दुहाई, किसी के देखने के पहले यहाँ से भागो। फिर यदि यहाँ आओगे तो...—यह धमकी सुनते ही पीयर भागा; उसको ऐसा प्रतीत होने लगा कि मनुष्यों की आवाज़ और बैण्ड की ध्वनि प्रार्थना के रूप में विपुलाकार होकर उसकी पीठ पर आघात कर रही है और उसको दूर भगा रही है।

दूसरे दिन त्रोयेन के वे लोग जब भोजन कर रहे थे, बड़ा लड़का खिड़की के बाहर ताककर बोल उठा—वह, पीयर आ रहा है।

अन्दर आते ही बुढ़िया बोल उठी—कहो, क्या समाचार हैं? तुम्हारी तबीअत ठीक नहीं है क्या?

आह ! फिर उसी पुराने चमड़े के कम्बल में रात को आश्रय लेते हुए कैसा अच्छा मालूम हुआ ! बूढ़ी माँ बिछौने के पास बैठकर सान्त्वना देने के लिए ईश्वर की बात करने लगी और कपड़े के नीचे पीयर की मुट्ठी कठिन होने लगी; न जाने क्यों उसके मन में ऐसा होने लगा कि ईश्वर भी उस ग़ाउनधारी स्कूल-मास्टर जैसा ही है। फिर भी ग़नीमत थी कि बुढ़िया माँ सान्त्वना देने के लिए वहाँ मौजूद थी।

इसके बाद जो दिन आये उनमें पीयर को बहुत कुछ बरदाश्त करना पड़ा। जब कभी वह निकलता था तो उसके चारों ओर 'देखो, देखो, धर्मयाजक जा रहे हैं' कहकर लोग उसकी हँसी उड़ाते थे। खाने के समय प्रत्येक ग्रास उसे लज्जा देता था। अपने भरण-पोषण के खर्चे के प्रबंध के लिए दूर-दूर के खेतों में वह मज़दूरी खोजता फिरता था ! इसके बाद जब जाड़ा आया, उस समय सब लोग जो काम करते थे उसे भी वही करना पड़ा—उम्र कम थी तो क्या, लोफोटेन में मछली पकड़ने के काम पर उसे नौकर बनकर जाना ही पड़ा।

परन्तु एक दिन गिरजा में प्रार्थना के बाद क्लाउस ब्रोक ने उसे एक किनारे ले जाकर बहुत कुछ बातचीत की। पहले क्लाउस ने कहा कि मैं यहाँ से जा रहा हूँ; शहर में जाकर मिस्त्री के कारख़ाने में काम सीखूँगा; फिर वहाँ से इंजीनियर होने के लिए टेक्निकल कालेज में पढ़ूँगा। इसके बाद उसने पीयर से उसके पिछले दिनों शहर में जाने का हाल-चाल पूछा। उसने उसका सविस्तर हाल सुनना चाहा; क्योंकि जब लोग भिक्षुक पीयर की धर्मयाजकता को लेकर हँसते और व्यंग्य विद्रूप करते थे उस समय क्लाउस के मन में ऐसा होता था कि उन लोगों को ख़ूब पीटे।

इसी प्रकार सोलह वर्ष के दो नौजवान वार्तालाप करते हुए

टहलने लगे। आज उसका पुराना मगर-शिकार का साथी जिस प्रकार से उसके पास सहायता के लिए आ खड़ा हुआ, उसे पीयर अगले जीवन में कभी न भूला। क्लाउस ने कहा—अरे भाई, मैं जैसा कर रहा हूँ, वैसा तुम भी करो। तुम तो लोहार का काम थोड़ा-बहुत जानते ही हो; 'वर्कशॉप' में चलो, फ़ुरसत में टेक्निकल की प्रवेशिका परीक्षा के लिए तैयारी कर लेना। उसके बाद कालेज में तीन साल के लिए भरती हो जाना। अठारह सौ क्राउन से सब काम अच्छी तरह चल जायगा। बस, उसके बाद तो तुम इंजीनियर हो जाओगे; फिर किसी से एक अधेला भी उधार न माँगना पड़ेगा।

पीयर सिर हिलाने लगा, क्योंकि उसका यह स्थिर विश्वास था कि बैंक का रुपया माँगना तो दूर की बात, स्कूल-मास्टर को अपनी शकल दिखलाने का भी साहस उसमें नहीं है। नहीं, वह मामला तो ख़तम हो चुका है।

"धत्! तुम यह नहीं समझ रहे हो कि उस बन्दर स्कूल-मास्टर को रुपया देना ही पड़ेगा? चलो न; मैं तुम्हारे साथ चलूँगा; एक साथ चलकर उसके साथ बातचीत करेंगे, तब देखूँ कैसे नहीं देता है।"

परन्तु ज्यों ही जनवरी आई, पीयर मोमिया चर्म के वस्त्र पहनकर और एक लोफ़ोटान की ओर जानेवाले मछुए जहाज़ का मल्लाह बनकर बर्फ़ और तुषार के तूफ़ानों से लड़ता हुआ उत्तर प्रदेश के मछली के शिकार के स्थानों की ओर रवाना हो गया। जाड़े भर वह वहीं बना रहा।

कुछ हफ़्तों के बाद शहर में एक इंजीनियरिंग वर्कशॉप के फाटक के सामने, जब कि घण्टा बज रहा था और लोग बाहर निकल रहे थे, एक लड़का आ खड़ा हुआ; उसने पूछा कि क्लाउस ब्रोक कहाँ है?

"अरे पीयर तुम ? लोफोटेन गये थे, कुछ हाथ आया क्या ?"

दोनों बालक पल भर के लिए परस्पर एक दूसरे को देखते रहे। क्लाउस का चेहरा मैला-कुचैला था, वह कारख़ाने की पोशाक पहने हुए था; और पीयर का चेहरा आँधी-पानी और मौसम की कठिनाइयों से उतरा हुआ था।

क्लाउस का चाचा फ़ैक्टरी का मैनेजर था। दिन के तीसरे पहर क्लाउस पीयर को लेकर अप्रेन्टिसी में भर्ती कराने के लिए आफ़िस में हाज़िर हुआ। अपने मैनेजर चाचा से क्लाउस ने यह भी कहा कि पीयर लोहार का काम कुछ दिन तक कर चुका है। प्रतिघंटे दो पेन्स वेतन की दर पर उसी वक़्त उसे भर्ती कर लिया गया।

"तुम्हारा नाम ?"

"पीयर..."—बाक़ी हिस्सा गले में अटक गया।

पूरा करते हुए क्लाउस ने कहा—होल्म

पीयर होल्म ? बहुत अच्छा, बस, हो गया।

दोनों बाहर निकल आये। वे ऐसे प्रसन्न थे मानो कोई क़िला फ़तह कर आये हों। सबसे बड़ी प्रसन्नता की बात यह थी कि वे अब दो हो गये थे—जीवन-निर्वाह में परस्पर साथ देने के लिए और विपत्तियों का कंधे-से-कंधा भिड़ाकर सामना करने के लिए !

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

पञ्चम परिच्छेद

सी-स्ट्रीट से जो तंग गली चली गई है उसी के भीतर भाड़ा-गाड़ी का मालिक गौर्सेथ रहता था।

किराये के लिए कमरा है ?—पीयर ने उसके सामने पहुँचकर पूछा।

हाँ, हाँ, क्यों नहीं—उसने कहा और आँगन में से ले जाकर सीढ़ी के ऊपर एक छोटा-सा कमरा दिखलाया। रास्ते के ऊपर दो शीशेवाली एक खिड़की थी और आँगन के ऊपर एक छोटी खिड़की। कमरे के अन्दर चद्दर से ढँकी हुई एक खाट, एक जोड़ा कुर्सी और उस छोटी खिड़की के सामने एक मेज़। महीने में साढ़े छः शिलिंग देना होगा। अच्छा, वही सही। पहले महीने का पेशगी किराया देकर पीयर ने कमरे को ले लिया। इसके बाद उस आदमी को बिदाकर, बक्स के ऊपर बैठकर वह चारों ओर देखने लगा। कितने ही लोग ऐसे हैं जिनके पास रहने को ज़रा भी स्थान नहीं है; लेकिन पीयर के लिए यह कमरा तो है जिसको वह अपना कह सकता है।

अब खाने का प्रबन्ध! वह बाहर से खाने को साधारण ग्राम्य भोजन ले आया; उसे उसने बक्स में रख दिया। डिनर के समय मछुओं की तरह उसने सन्दूक़ के ऊपर बैठकर मोटी रोटी और मांस भरपेट खाया।

अब उसने अपना नया काम शुरू किया। प्रश्न यह नहीं था कि वह यह काम करना चाहता था या नहीं। संसार में उन्नति करने का उसे एक अवसर मिला था और इसके लिए उसे किसी की आज्ञा माँगने की आवश्यकता नहीं थी। वह उन्नति करना

चाहता था। थोड़े ही दिनों में उसका जीवन नवीन रूप धारण करने लगा। लोहारी के उम्मेदवार के रूप में वह ज़ीने से नीचे काम कर रहा था; और उसके ऊपर था एक इंजीनियर! जिसकी आँखों पर सोने का चश्मा था, शरीर पर सफ़ेद वेस्ट-कोट। एक दिन वह भी वहाँ पर बैठेगा। अब अगर कोई स्कूल-मास्टर उसे दबाने की कोशिश करेगा तो—अच्छा एक बार कोशिश करके देखे न! एक दिन उन लोगों ने उसको गिरजा के आँगन से निकाल दिया था, कभी वह इसका बदला लेगा। संभवतः इसके लिए वर्षों चाहिए परन्तु वह शुभ दिन ज़रूर आयेगा जब उन लोगों के बीच में वह एक श्रेष्ठ मनुष्य होगा और उस दिन वह पूरा बदला ले सकेगा।

कुहरे से आच्छन्न प्रभात के समय जब भोजन-पात्र को हाथ में लेकर भारी क़दमों से वह अपने काम पर जाता था, उस समय लकड़ी के पुल पर उसके पैरों की धप्-धप् आवाज़ दृढ़ता के साथ यही बतलाती थी कि आज वह कोई नई बात अवश्य सीखेगा। नई, बिलकुल नई बात!

बन्दरगाह के बड़े बड़े कारख़ाने—जहाज़ बनाने का कारख़ाना, कलघर—सबों को मिलाकर एक पूरा शहर-सा बन गया था। आग, धुआँ, जलता हुआ लोहा, वाष्पचालित हथौड़ा, प्रबल वेग से घूमता हुआ पहिया, चांचल्य और कोलाहल-पूर्ण इस जगत् में उसने एक लक्ष्य लेकर प्रवेश किया है—वह केवल सीखेगा, सीखेगा, सीखता चलेगा। उसके आस-पास असंख्य पुरुष हैं जो अपने स्थान का थोड़ा बहुत काम सीखकर ही सन्तुष्ट हो गये हैं; उनमें आगे बढ़ने की इच्छा ही नहीं है। जीर्ण—भग्न श्रमिक के रूप में ही वे जीवन व्यतीत कर देंगे; पर वह इसी के बीच में से रास्ता निकालकर एक दिन उन लोगों के साथ जाकर खड़ा होगा जो इन सब मामलों के कर्ता-धर्ता हैं। कई

महीने उसको लोहार के कारख़ाने में बिताने पड़ेंगे, इसके बाद वह कलघर में जायगा, उसके बाद वह जायगा बढ़ईख़ाने में और उसके बाद पेण्टरों के काम को सीखकर अन्त में वह जहाज़ बनाने के कारख़ाने में जा पहुँचेगा। यह सब करने में दो साल का समय लगेगा। वे कारख़ाने और उनमें होनेवाले काम उसके लिए धर्म-पुस्तक बन गये जिसका प्रत्येक पृष्ठ वह कंठ कर लेना चाहता था। ज़रूरत थी कुछ समय की!

एक दिन एक विशाल बायलर में कील बैठाने के काम में जाकर उसे सर्वप्रथम एक ऐसी शक्ति का साक्षात् परिचय प्राप्त हुआ जो कि कल की थी। एक वायुपूर्ण नल बड़ी जल्दी से एक के बाद दूसरी कीलों को बैठाता जा रहा था और कील बैठाने का आघात ऐसा प्रचण्ड था कि बायलर का विकट आर्तनाद सारे शहर में सुनाई पड़ता था। उस उत्कट शब्द से पीयर का माथा और कान ठनकने लगे, तथापि पीयर हँसता रहा। शरीर क्लान्त होने पर भी परिश्रम करने में वह अभ्यस्त था। अब वह अपने मन, आत्मा और इच्छा का स्वयं शासक था! उसका यह अनुभव जीवन में पहला था; इसके विचार से उसके शरीर की प्रत्येक शिरा में विजय का उल्लास प्रवाहित हो गया।

दीर्घ सन्ध्या के समय वह अकेला बैठे-बैठे पढ़ता रहता और नीचे के अस्तबल में घोड़ों की टापों की खट-पट सुना करता था। आधी रात न जाने कब व्यतीत हो जाती था, उसके बाद जब वह अपनी शय्या पर जाता था उस समय केवल एक बात उसे पीड़ा देती थी—उसका अकेलापन। क्लाउस ब्रोक अपने मामा के साथ एक सुन्दर मकान में रहता था, वह पार्टियों में भी जाता था। और पीयर? वह यहाँ पर अकेला पड़ा रहता था। आज ही रात को यदि वह मर जाय तो उसके बारे में सोचनेवाला

ही कौन था ! इस अपरिचित, उदासीन जगत् में वह नितान्त एकाकी था !

पीयर को कभी-कभी बूढ़े माँ-बाप की याद आती थी। उससे उसे कुछ सान्त्वना मिलती थी। घर के गिरजे में बजनेवाले आरगन की भी याद आती थी। गिरजा यहाँ भी था; पादरी भी थे; पर उसे अब सन्ध्या की प्रार्थना में उतना आनन्द न आता था। गिरजाघर का सुनहले-भूरे केशोंवाला विशप यहाँ नहीं था। यहाँ था, सबसे ऊपर, चीफ़ इंजीनियर; जिसे न धर्म से कुछ मतलब था, न ईश्वर से ! न उसे परलोक की ही चिन्ता थी। अब पीयर को दुःख और यातनाओं से परिपूर्ण उस नरक में जाकर—जहाँ उसकी मृत माता की आत्मा यातनायें पा रही है—अपनी माँ का उद्धार करने की भी फ़िक्र नहीं थी। न वह अब वैसा धर्मयाजक बनने का ही स्वप्न देख रहा था जिसके अँगुली उठाते ही आकाश के तारे गाने लगेंगे।

पीयर ने वह जीवन सदा के लिए खो दिया था। उसे लगता था मानो जिस तट पर लाल बादलों से आकाश आच्छन्न रहता है, जहाँ की हवा स्वप्नों से परिपूर्ण है, उस तट से डाँड़ चलाता हुआ वह दूर, और भी दूर, पर एक अपूर्व नवीन देश की ओर हटता जा रहा है। किसी अदृष्ट शक्ति की इच्छा से !

रविवार का दिन था, पीयर पढ़ रहा था। दरवाज़ा खोलकर सीटी बजाता हुआ क्लाउस कमरे के अन्दर आया।

"क्या दोस्त, यहाँ रहते हो ?"

"हाँ, यहीं पर। बैठो, वह कुर्सी है।"

"अगर टेकनिकल की प्रवेशिका पास करना चाहते हो तो तुम्हें किसी से पढ़ना होगा, समझते हो कि नहीं ? तुमको किसी मास्टर की सहायता लेनी पड़ेगी।"

"मास्टर की बात करना तुम्हारे लिए आसान बात है; परन्तु तुम्हें मालूम होना चाहिए कि मेरा वेतन घंटे में दो पेन्स है।"

"मैं तुम्हारे लिए ऐसा मास्टर दूँगा जो तुम्हें हफ़्ते में दो बार साहित्य, इतिहास और हिसाब पढ़ायेगा। मैं ज़ोरों के साथ कह सकता हूँ कि कोई भी अभागा छात्र रोज़ सात पेन्स पर पढ़ाने के लिए तैयार हो जायगा। इतना तो तुम ज़रूर दे सकोगे न ?"

पीयर शान्त होकर, कुछ सोचने लगा—हाँ, अगर मक्खन छोड़ दूँ और कॉफ़ी के बदले पानी पिऊँ तो...

क्लाउस ने हँस दिया; परन्तु उसकी आँखों में आँसू भर आये।

इसी तरह ग्रीष्म-ऋतु बीत गई। रविवार को सबेरे लड़के और लड़कियाँ दिन भर मैदान और जंगलों में घूमने के लिए गाँव की ओर जाया करती थीं और पीयर कमरे के अन्दर किताब लेकर बैठे-बैठे उन्हें देखा करता था। सन्ध्या के समय शीशेवाली खिड़की से सिर निकालकर वह रास्ते की ओर ताकता था और उन लड़के-लड़कियों को देखता था कि हैट में फूल और हरे पत्तों को लगाकर सूर्यालोक और मुक्त हवा से उल्लसित होकर लाल चेहरे लिये वे कलरव करते हुए लौट रहे हैं। और वह तब भी बैठा हुआ पढ़ता ही था। परन्तु हेमन्त में जब कि रात्रि दीर्घ होती थी, सोने के पहिले पीयर रास्ते पर घूमने जाता था और प्रायः वह उस सफ़ेद लकड़ी के मकान तक जाता था जहाँ पर कारख़ाने के मैनेजर रहते थे। यही तो क्लाउस का मकान था; खिड़कियाँ आलोकित थीं और गाना-बजाना भी प्रायः होता था। जो सुखी मनुष्य वहाँ पर रहते थे वे ऐसे विषय जानते थे और ऐसे काम करते थे जो कि पुस्तकों से कभी नहीं सीखे जा सकते। हाँ, इसमें कोई भूल नहीं है कि उसको बहुत दूर जाना था, दीर्घ पथ को अतिक्रम करना है; परन्तु यह निश्चय था कि वह वहाँ जायगा।

एक दिन, ऐसे ही बातचीत करते-करते क्लाउस ने कार्नल होल्म

की विधवा स्त्री के निवासस्थान का पता दिया। एक दिन सन्ध्या हो जाने के बाद पीयर उसी ओर चलने लगा और बड़ी होशियारी से उस मकान की ओर अग्रसर हुआ। रिवर स्ट्रीट में, बड़े-बड़े पेड़ों से ढँका हुआ वह मकान था। बग़ीचे की दीवार पर पीठ देकर वह खड़ा हो गया और किसी अज्ञात एवं गोपन अनुभूति से वह काँपने लगा। नीचे और ऊपर की खिड़कियों की लम्बी कतार आलोकित थी और उसमें से तरुणों के हास्य और तरुणियों के गाने की आवाज़ आ रही थी। निश्चय वे आज कोई पार्टी दे रहे हैं। ठंढी हवा में कॉलर से कानों को ढँके शहर के बीच से गाड़ीवान के अस्तबल के ऊपर के कमरे में वह लौट आया।

कभी-कभी, जब रविवार का दिन बहुत ही लम्बा मालूम होता था, पीयर निकट के गिरजे में जाता था। यहाँ आने से ही उसको ऐसा मालूम होता था कि यह उसका अपना घर है। यद्यपि यहाँ का प्रत्येक व्यक्ति उससे अपरिचित था तथापि इन लोगों के साथ वह एक प्रकार की आत्मीयता का अनुभव करता था।

परन्तु आख़िरकार एक दिन प्रार्थना-संगीत के बीच में उसके मन में मानो किसी ने कहा—बहिन के पास चिट्ठी लिखना तुम्हारे लिए उचित है। वह भी तुम्हारी तरह इस संसार में अकेली है।

एक दिन सन्ध्या के समय पीयर पत्र लिखने बैठा। बिलकुल नवाबी चाल से उसने लिखा कि तुम्हें यदि किसी प्रकार की सहायता की ज़रूरत हो तो मुझे लिख भर दो। उसने और भी लिखा कि यदि शहर में आने की इच्छा हो तो मेरे पास आ जाओ। पत्र के अन्त में लिखा—तुम्हारा भाई पीयर होल्म, इंजीनियर अप्रेन्टिस।

कई दिनों के बाद तिरछे हस्ताक्षरों में पता लिखी हुई एक चिट्ठी आई—'हाल ही में लुइसे का कनफर्मेशन हो गया है। जिस किसान के पास वह है वह उसको जाड़े भर ग्वालिन के काम पर रखना चाहता है; परन्तु उसे आशंका है कि यह काम उसके

लिए कुछ अधिक कठिन होगा। इसलिए रविवार को सन्ध्या के स्टीमर से ही वह शहर को आ रही है। सप्रेम तुम्हारी बहिन, लुइसे हागेन।'

पीयर कुछ चकित-सा हो गया, उसके मन में ऐसा होने लगा कि अब वह अपने ऊपर एक भारी ज़िम्मेवारी ले रहा है।

छोटी हरी स्टीमबोट अन्तरीप के मोड़ से जेटी (घाट) के पास ठहरने के क़रीब हुई, उसके ऊपर चढ़ने के लिए तख़्ते लगाये गये, कुली डेक पर कूद पड़े, यात्री लोग जल्दी से तट पर उतर आये। जिस बहिन को उसने कभी नहीं देखा है उसे वह किस प्रकार पहिचानेगा, यही बात विस्मित होकर वह सोच रहा था।

थोड़ी ही देर में डेक पर भीड़ हलकी हो गई, सब लोग जेटी से शहर की ओर रवाना होने लगे।

तब पीयर ने एक किसान-लड़की को देखा, जिसके एक हाथ में एक ट्रंक और दूसरे हाथ में एक वायोलिन (Violin) का बक्स था। वह एक भूरे रङ्ग की पोशाक पहने थी और उसके सुन्दर केश काले रूमाल से बँधे हुए थे; पीला-सा चेहरा; पर उसके मुख की बनावट बहुत ही सुन्दर बिलकुल माता की शक्ल की, मानो वह उसकी सोलह साल की माँ है। लड़की चारों ओर ताकने लगी; अन्त में कुछ शंकितभाव से उसकी प्रश्नभरी दृष्टि पीयर के ऊपर निबद्ध हुई।

"तुम लुइसे हो?"

"क्या, पीयर?"

पल भर के लिए मुसकराते हुए दोनों ने परस्पर एक दूसरे का निरीक्षण किया और तब हाथ मिलाया।

जब वे पीयर के कमरे में आये तो मुहूर्त भर के लिए लड़की ने चारों ओर देखा। उसे यह देखने की आशा नहीं थी। शहर के कमरों में वह पहले कभी नहीं रही थी; बद्ध वायु के गन्ध से उसकी

नाक संकुचित हो गई। वह कमरा बड़ा अन्धकारमय मालूम होने लगा और मानो उसे ऐसा मालूम होने लगा कि उसकी साँस रुक जायगी।

लुइसे को किसी होटल में ले जाकर खिलाने के लिए उसके पास पर्याप्त धन नहीं है, यह सोचकर पीयर को लज्जा आने लगी। परन्तु दूसरे ही दिन मास्टर को फ़ीस देनी थी और भोजन के बक्स को भी फिर भरने की ज़रूरत थी। थोड़ी देर में उन दोनों ने अपने कमरे में बैठकर पहली बार एक साथ भोजन किया।

यह तय हुआ कि लुइसे ज़मीन पर सोयेगी। ठंढ से बचाने के लिए पीयर जब अच्छी तरह उसको ढँकने लगा तो दोनों ख़ूब हँसे। बत्ती बुझाने के पहले तक दोनों को यह पता ही न लगा कि पतझड़ शुरू हो गया है और 'उत्तर-पछुवाँ' हवा छत के ऊपर से प्रचण्ड शब्द करती हुई बह रही है। सो जाने के पहले उस अन्धकार में लेटे हुए वे दोनों बातचीत करने लगे।

अपने कुटुम्ब की—और वह भी एक युवती—लड़की को यथार्थरूप में अपने निकट पाना, यह पीयर के लिए एक अभिनव और अद्भुत बात थी। वह उसी के पास ज़मीन पर सो रही है; अब से इस संसार में उसके लिए वह ज़िम्मेवार है। इस काम को वह कैसे सँभालेगा ?

पीयर ने सुना कि वह करवट ले रही है। ज़मीन शायद कड़ी मालूम हो रही है।

'लुइसे ?"

"क्या ?"

"तुमने माँ को कभी देखा था ?"

"नहीं।"

"और अपने पिता को ?"

मेरा पिता ?—कहकर उसने हँस दिया।

"क्यों ? उनको तुमने नहीं देखा ?"

"धत्, पागल कैसे देखती ? माँ भी नहीं जानती थी कि वह कौन है ?"

इसके बाद कुछ देर तक दोनों चुपचाप रहे। फिर कुछ घबराते हुए पीयर ने कहा—तो, तुम और मैं—हम लोग बिलकुल अकेले हैं !

"हाँ, हम लोग तो अकेले ही हैं।"

"लुइसे, अब तुम क्या करोगी ?"

"तुम ?"

अब पीयर ने अपना उद्देश्य बतलाया। लुइसे ने कुछ देर तक कुछ नहीं कहा; शायद वह लेटी-लेटी पीयर के महान् भविष्य के बारे में सोच रही थी।

अन्त में उसने कहा—अच्छा, मिड वाइफ़ का काम सीखने में अधिक ख़र्च है ?

दीवार की ओर करवट बदलकर पीयर ने कहा—अच्छा, वह किसी तरह हो जायगा। पीयर ने कहीं सुना था कि मिडवाइफ़री स्कूल के पाठ समाप्त करने में कई सौ क्राउन लगते हैं। इतना धन इकट्ठा करने में कम से कम कई साल तो अवश्य ही बीतेंगे। बेचारी ! बहुत दिन उसको इसके लिए प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

इसके बाद वे चुप हो गये। उत्तर-पछुवाँ हवा छत के ऊपर से गरजती हुई बहने लगी और शीघ्र ही दोनों भाई-बहिन सो गये।

दूसरे दिन सवेरे जब पीयर उठा, लुइसे ने तब तक छोटे स्टोव में क़हवा बनाना शुरू कर दिया था। लुइसे ने अपना बक्स खोला और उसमें से पीले पेटी-कोट को निकालकर खूँटी पर टाँग दिया, एक जोड़ा नया जूता दीवार के सहारे खड़ा कर दिया; कई लिनेन, कई अन्डरवियर और ऊन के मोज़े निकाल-

कर देखे फिर उन्हें अन्दर ही रख दिया। इसी छोटे बक्स में उसकी सारी सम्पत्ति थी।

पीयर के बाहर जाने का समय हो गया था; मकान से अधिक दूर जाकर रास्ता न भूलने के लिए सावधान कर पीयर सीढ़ी से नीचे उतर गया।

कारख़ाने में क्लाउस के साथ भेंट हुई; पीयर ने अपनी बहिन के शहर आने का समाचार दिया।

क्लाउस ने पूछा—"लेकिन अब उसको लेकर क्या करोगे ?"

"वह मेरे साथ रहेगी।"

"तुम्हारे साथ ? लेकिन तुम्हारे पास तो एक ही कमरा और एक ही बिछौना है !"

"वह ज़मीन पर सो सकेगी।"

वह ? इसका मतलब ? तुम्हारी बहिन ? वह ज़मीन पर सोयेगी और तुम बिछौने पर ?—कहते-कहते क्लाउस की साँस घुटने-सी लगी।

पीयर ने देखा कि मैंने ग़लती की है ! जल्दी से कहा—अरे नहीं, मैं मज़ाक कर रहा था। लुइसे ही बिछौने पर सोयेगी।

जब वह घर लौटा तो देखा कि लुइसे ने गाड़ीवान की स्त्री से कड़ाही माँगकर उसमें कुछ मांस और आलू पकाया है। अब तो दोनों राजा के समान भोजन करने बैठ गये।

उन लोगों ने निश्चय किया कि पेट पालने के लिए लुइसे को तुरन्त कोई काम कर लेना चाहिए। पहली बार वे जिस होटल में काम की खोज में गये वहीं पर रसोईघर में लुइसे को फ़र्श साफ़ करने और आलू छीलने का काम मिल गया।

जब सोने का समय हुआ तब वह लुइसे से बिछौने पर सोने के लिए आग्रह करने लगा। उसने समझाया—अरे, कल तो

मज़ाक किया था। यहाँ शहर में लड़कियों को ही अच्छी चीज़ें दी जाती हैं—यही शिष्टाचार है।" जब उसने कड़ी ज़मीन पर अपने हाथ पैर फैला दिये तब उसको एक अभिनव अनुभव हुआ। मानो अतिथि को स्थान देने के लिए यह क्षुद्र और संकीर्ण कोठरी आज विस्तृत हो गई। कड़े फ़र्श पर सोने में भी उसे क्लेश का अनुभव नहीं हुआ क्योंकि वह यह काम किसी दूसरे के लिए कर रहा था।

षष्ठ परिच्छेद

जाड़े के अन्त तक इसी प्रकार चलता रहा। अब लुइसे भी कमाती थी, ख़र्च में मदद देती थी; अतः यदि वे चाहते तो रोज़ होटल में जाकर आदमी पीछे चार पेन्स के हिसाब से मांस की केक ख़रीदकर अच्छी तरह भोजन कर सकते थे। पीयर के लिए भी एक ऐसे बिछावन का प्रबन्ध कर लिया गया था जो दिन को उसे मोड़कर रक्खा जा सकता था। लुइसे ग्राम्य भाषा छोड़ रही थी और भाई की तरह नागरिक भाषा बोलने लगी थी।

कभी कभी, रात को सोने से पहले पीयर के मन में एक चिन्ता आती थी—यह लड़की बिलकुल माँ की प्रतिमूर्ति है। यदि यह भी उसी रास्ते से चलने लगी ? नहीं, वह ऐसा नहीं करेगी।

दिन भर उन दोनों में भेंट नहीं होती थी; क्योंकि बहुत सवेरे वे अलग हो जाते थे और पीयर सन्ध्या को घर लौटता था। वह जब लुइसे को चेताने के लिए कहता था कि अगर कोई पुरुष तुम्हारे साथ बात-चीत करने की चेष्टा करे तो तुम उसकी ओर ध्यान न देना, तब लुइसे केवल हँस देती थी। एक दिन जब क्लाउस इन लोगों से भेंट करने आया और लुइसे के साथ बात-चीत करने के समय आँखों को तरह-तरह से हिलाने लगा तो पीयर के मन में ऐसा हुआ कि उसकी गर्दन पकड़कर नीचे ढकेल दे।

पीयर अब बहुत शहराती हो गया था, इसलिए बड़े दिन में उसने अपनी बहन को कई छोटे-छोटे उपहार दिये। लड़की को यह सब मालूम नहीं था; इसलिए वह पीयर के लिए कुछ भी न लाई। जब यह बात उसकी समझ में आई तो वह

बहुत रोई। मिठाईवाले की दुकान में जाकर उन लोगों ने 'सिरप' के साथ केक और चाकलेट खाये, इसके बाद लुइसे ने अपनी वायोलिन पर यथाशक्ति अच्छी तरह से एक प्रार्थना का राग बजाया और त्रोयेन में बड़े दिन की सन्ध्या में जैसा किया जाता था ठीक उसी तरह पीयर ने प्रार्थना-पुस्तक से बड़े दिन का पाठ पढ़ा।

परन्तु इसके बाद जाड़े के दिनों में शाम को जब लुइसे बैठी-बैठी पीयर की राह देखा करती थी—क्योंकि पीयर प्रायः अधिक देर तक काम करता था—उस समय उसको सचमुच भय लगता था। जब सीढ़ी पर पीयर के पैरों की आवाज़ होती थी तो लुइसे काँपने लगती थी। क्योंकि कमरे में आते ही वह चिल्ला उठता था—सुनो, लुइसे बहिन, आज मैंने एक नई बात सीखी है। "सच, पीयर ?" बस, इसके बाद ही मोटर, शक्ति, चाय, सिलिंडर, क्रेन, स्क्रू और इसी प्रकार की और-और चीज़ों के बारे में आलोचना की बाढ़-सी आ जाती है। लुइसे बैठी-बैठी सुनती थी और मुसकराती थी, परन्तु समझती एक अक्षर भी नहीं थी, और ज्यों ही पीयर को यह मालूम हो जाता था, वह क्रुद्ध होकर कहता था—बेवकूफ़ !

इसके बाद सन्ध्या को बहुत देर तक वह कमरे में कभी स्वयम्, कभी मास्टर के पास पढ़ता रहता था। लुइसे हताश होकर चुपचाप बैठी रहती थी। उसे सूई तक उठाने का साहस नहीं होता था। एक दिन पीयर के दिमाग़ में यह ख़याल आया कि लुइसे को भी पढ़ना चाहिए; बस, उसने बहन को अगली सन्ध्या के लिए इतिहास का एक पाठ दे दिया। परन्तु उसको पढ़ने का समय कहाँ ? इसके अलावा, उसकी स्पेलिंग सुधारने के लिए जब वह डिक्टेशन लिखाने लगता तो लुइसे सो जाती थी। दिन भर उसको इतना अधिक फ़र्श साफ़ करना पड़ता था और इतने आलू

छीलने पड़ते थे कि उसका शरीर सीसे की तरह भारी हो जाता था।

गुस्से के मारे कमरे में टहलता हुआ पीयर उसे कहता—देखो बहन, अगर तुम यह सोचती हो कि बिना शिक्षा के तुम इस संसार में उन्नति कर सकोगी तो यह तुम्हारी भारी भूल है। पीयर उसे रुलाकर ही छोड़ता; परन्तु थोड़ी ही देर में फिर उसका सिर टेबुल पर झुक जाता और वह गहरी नींद में मग्न हो जाती। तब पीयर चाहता कि बिना जगाये जितने धीरे हो सके वह उसे बिछौने पर सुला दे।

वसन्त के कुछ दिन बीतने पर पीयर बीमार पड़ा। डाक्टर आया; कमरे की ओर ताककर, हवा सूँघकर उसने भौंहें चढ़ाईं। लुइसे ने उस दिन छुट्टी ली थी। डाक्टर ने उससे पूछा—यह कमरा क्या आदमी के रहने के लिए है? यहाँ रहकर तन्दुरुस्त रहने की आशा कैसे की जा सकती है?

पीयर का चेहरा आग की तरह लाल था। वह नींद में खाँस रहा था। डाक्टर ने उसकी परीक्षा की। कहा—हाँ, जो कुछ मैंने सोचा था, ठीक वही है। फेफड़ा सूजा है। फिर कमरे की ओर ताककर उसने कहा—इसको अभी अस्पताल भेज दो तो अच्छा है।

डाक्टर के जाने के थोड़ी देर बाद ही अस्पताल की एम्बुलेन्स हाज़िर हुई। स्ट्रेचर में रखकर पीयर को सीढ़ी से उतारा गया। इसके पश्चात् पहियेदार हरे बक्स का दरवाज़ा खुला और उसके अन्दर पीयर अदृश्य हो गया। लोगों ने लुइसे को साथ नहीं जाने दिया। उस अन्धकारमय कमरे में बहुत देर तक वह अकेली बैठी रोती रही।

दिन पर दिन बीतते गये और पीयर अस्पताल में पड़ा रहा। वहाँ पर उसको केवल एक ही अनुभव होता था—उसको ऐसा

प्रतीत होता था कि कोई आग में लाल किया हुआ लोहा लेकर उसकी छाती के अन्दर लगातार छेद करता चला जा रहा है और उसकी साँस बन्द हो रही है।

इसके पश्चात् धीरे-धीरे वह कमरा उसकी दृष्टि के सामने स्पष्ट हो उठा। नाइट-लैम्प के अस्पष्ट प्रकाश में, इस विशाल कमरे में, जब पीयर जागता था तो उसे वह अद्भुत मालूम होता था। उसको ऐसा प्रतीत होता था मानो उसके चारों ओर के बिछौनों पर परलोक के लोग विराज रहे हैं। परन्तु जब दिन के समय मरीज़ों के आत्मीय और मित्र उन्हें देखने के लिए आते थे तो बड़ी मुश्किल से पीयर अपनी रुलाई को रोक सकता था। एक मोची की स्त्री और लड़की आती थीं और वे इस प्रकार से उसकी ओर ताकती थीं कि मानो वे किसी तरह उसे छोड़कर जाना नहीं चाहतीं। और लोगों की भी ख़बर लेने के लिए कोई न कोई आते थे। परन्तु लुइसे कहाँ है ? वह क्यों नहीं आती ?

अन्त में एक दिन लुइसे आई। वह अपनी साफ़ टोपी पहने हुए थी। उसके हाथ में, एक छोटा-सा बण्डल था। अस्पताल के मरीज़ों के वार्ड की बन्द हवा में उसकी साँस रुक जाने के क़रीब हो गई। परन्तु उसी समय पीयर को देखकर मुस्कराती हुई, हाथ बढाकर वह सामने की ओर बढ़ आई। पीयर को बहुत बदला देखकर उसे बड़ा विस्मय हुआ। वह पीयर के सिरहाने बैठ गई। आँखों में आँसू थे; पर होठों पर हँसी।

"ख़ैर, इतने दिनों बाद आई हो ?" – पीयर ने कहा।

लुइसे फूट-फूटकर रो पड़ी और बोली—पहले मुझे आने ही नहीं दिया गया। अब पीयर को मालूम हुआ कि लुइसे रोज़ आती थी; परन्तु उन लोगों ने रोज़ ही उसे यह कहकर लौटा दिया कि पीयर इतना बीमार है कि उसके साथ भेंट की आज्ञा

नहीं दी जा सकती। इसके दो एक दिन बाद एक ऐसी घटना हुई जिसे पीयर आगामी जीवन में प्रायः स्मरण करता था।

सारे अपराह्न नींद के मारे झपकियाँ लेते-लेते जब वह जाग उठा तब बत्ती जल गई थी और सारे वार्ड पर एक म्लान और अस्पष्ट पीला प्रकाश पड़ा हुआ था। मालूम होता था कि सभी लोग सो गये हैं, सब शान्त था। केवल घाववाला आदमी थोड़ा-थोड़ा कराह रहा था। इतने में दरवाज़ा खुल गया और पीयर ने लुइसे को बग़ल में वायोलिन का बक्स लिये धीरे-धीरे सावधानी से अन्दर आते देखा। जहाँ पर उसका भाई सोया हुआ था वहाँ पर वह नहीं आई। वार्ड के बीच खड़ी होकर वायोलिन निकालकर उसने ईस्टर का गान बजाना शुरू कर दिया।

घाववाले मनुष्य ने कराहना बन्द कर दिया। चारों ओर की खाटों पर के मरीज़ों ने आँखें खोलकर ताका। डॉक (dock) का मज़दूर जिसकी नाक टूट गई थी, चारपाई पर उठकर बैठ गया; मोची अपने ज्वर-विकृत स्वप्न से जाग्रत् होकर फुसफुसाता हुआ बोला—"तुम्हीं तो त्राणकर्ता हो, मैं जानता था कि तुम आओगे।" इसके पश्चात् सब निस्तब्ध हो गया। लुइसे अपनी दृष्टि को वायोलिन पर निबद्धकर यथाशक्ति बजाने लगी। क्षयी के मरीज़ ने सिर उठाया, वह खाँसना भूल गया; कॉर्पोरल का शरीर 'अटेन्शन' की दशा में धीरे-धीरे निश्चल हो गया। घुमक्कड़ व्यापारी हाथ जोड़कर सामने की ओर आँख फाड़कर देखने लगा। स्तव के सरल राग से मानो इन सब हतभाग्यों को एक नवीन जीवन प्राप्त होने लगा और उसकी ज्योति उनके चेहरों पर विकसित होने लगी। परन्तु उस अस्फुट आलोक में अपनी खड़ी बहन की ओर ताकते हुए पीयर के मन में

ऐसा लगा कि लुइसे उस स्तवगीत के साथ एक हो गई है और ऊपर की ओर उड़ जाने के लिए उसको पर मिल गये हैं।

बजाना समाप्त करके लुइसे धीरे-धीरे उसके बिछौने के पास आई और ललाट पर फूले हाथ से थपथपाकर जिस प्रकार निःशब्द आई थी उसी प्रकार निकल गई।

दूसरे वर्ष जाड़े में सन्ध्या के समय पीयर जब पढ़ता रहता था तब लुइसे बैठे-बैठे अपने लिए पोशाक, गॉउन और नई हैट बनाया करती थी। अब पीयर को अपने साथ टहलने के लिए यह सुन्दरी युवती मिल गई, परन्तु रास्ते पर जाते समय जब लोग लुइस को मुँह फेरकर ताकने लगते तो पीयर की भौंहें चढ़ जाती थीं और उसके हाथ की मुट्ठी भी कड़ी हो उठती थी। अन्त में एक दिन लुइसे को यह असह्य हो उठा। उसने विद्रोहपूर्ण स्वर में कहा – देखो पीयर, मैं साफ़ कहे देती हूँ, यदि फिर तुम वैसा करोगे तो मैं तुम्हारे साथ न निकलूँगी।

पीयर गुर्राता हुआ बोला—अच्छा-अच्छा, ख़ैर, मैं तो हूँ ही, तुम्हें कोई भय नहीं है। तुमको माँ की तरह नहीं होने दूँगा।

"हाँ, लेकिन अब तो मैं जवान हूँ; मेरी ओर ताकने से लोगों को तुम कैसे रोकोगे?"

उसी साल के हेमन्त-ऋतु में क्लाउस ब्रोक टेकनिकल कालेज में प्रविष्ट हुआ। अब वह अपनी टोपी में कालेज का बैज लगाता, सिगरेट पीता और हाथ में छड़ी भी लेता था। एक दिन सन्ध्या के समय वह आया और लुइसे को थिएटर ले जाना चाहा। युवती का चेहरा आनन्द से लाल हो उठा। पीयर भी इनकार न कर सका। परन्तु जब वे लौटकर आये तो पीयर आँगन के बाहर फाटक पर खड़ा इन्तज़ार कर रहा था। थोड़े ही दिनों बाद रविवार को फिर क्लाउस लुइसे को गाड़ी में घूमने ले जाने के लिए आया। अब की बार पीयर की आज्ञा लिये

बाल सँभालकर उसने अपनी सबसे अच्छी टोपी शान के साथ पहिन ली और चल दिया।

उसके लौटने की प्रतीक्षा में लुइसे ने प्रातःकाल का पूरा समय घर ही पर बिता दिया, अन्त में सीढ़ी पर उसके लौटने का शब्द हुआ।

"ओफ़्!"—कहकर पीयर कमरे के बीच चुपचाप खड़ा हो गया।

"अब ? अच्छा पाया ?"

पीयर हँसा और उसने अपना माथा पोंछकर कोट के पाकेट से हरी जिल्दवाला खाता निकाला। "यह लो, बहन, तीन साल के लिए माहवार पचास क्राउन ! फ़ीस, किताब, खाना-पीना और पहिनना यह सब निबटाने में थोड़ा कष्ट तो होगा; लेकिन हम लोग कर लेंगे। लोग चाहे जो कुछ कहें, पिता जी ठीक आदमी थे पर लुइसे सुनो, इस हेमन्त में और एक होल्म भरती हो रहा है।"

"कौन ? क्या वह तुम्हारा सौतेला भाई तो नहीं है ? अच्छा, यह तो बताओ कि उस बूढ़े मास्टर ने कुछ टालटूल तो नहीं किया ?"

"बूढ़े स्कूलमास्टर ने कहा—ऐसा करने से काम नहीं चलेगा, कभी नहीं। मैंने कहा कि दुनिया में मेरे लिए भी स्थान चाहिए और मैं बैंक का खाता माँगता हूँ।" शायद तुम्हारे मन में ऐसी धारणा हुई है कि उसके ऊपर तुम्हारा कुछ क़ानूनी हक़ है, यह कहकर वे बहुत ख़फ़ा हो उठे। तब मैंने इशारे से उन्हें बतला दिया कि यह बात ठीक है कि नहीं, निश्चित रूप से जानने के लिए किसी वकील से पूछने की मेरी इच्छा है। यह सुनकर गुस्से के मारे वे मानो उबलने लगे और चारों ओर हाथ हिलाने लगे। परन्तु थोड़ी ही देर में नरम होकर उन्होंने कहा

कि मैं अब इस सारे मामले से मुक्त होना चाहता हूँ। फिर उन्होंने कहा,—"हाँ, तुम जानते हो न तुम्हारा नाम त्रोयेन—पीयर त्रोयेन है। हा...हा...हा, पीयर त्रोयेन नाम उनको बड़ा पसन्द है! त्रे...केटे...धा! चलो जी, बाहर खुली हवा में ज़रा घूम आयें।

उस समय और उसके बाद भी पीयर ने क्लाउस ब्रोक के बारे में कुछ नहीं कहा। क्लाउस भी गर्मी की छुट्टी में घर चला गया। एक दिन सवेरे एक बड़ी रूसी नाव के इंजन-घर में कुछ मरम्मत करने के लिए पीयर मज़दूरों के एक दल के साथ स्टेंकियेर के लिए यात्रा कर रहा था। उसी समय लुइसे ने उसको अपना गला दिखलाकर कहा, यहाँ पर बड़ी तकलीफ़ हो रही है।

एक चम्मच से पीयर ने उसकी जीभ को दबाकर देखा कि कुछ ख़राबी नहीं है। फिर कहा—डाक्टर को दिखला आओ कि क्या हुआ है?

परन्तु लड़की ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया, कहा—"धत्! इसके लिए फिर क्या करना है!"

पीयर को एक हफ़्ते से भी अधिक उन साथियों के साथ नाव पर बिताना पड़ा। जब वह लौटकर आया, तब अकस्मात् लुइसे की और उसके गले की तकलीफ़ उसे याद आई और वह डेरे की ओर शीघ्रता से चला। जब वह वहाँ पहुँचा तो वह गाड़ीवान एक गाड़ी के पहिये में तेल लगा रहा था और उसकी औरत खिड़की से झुककर उसकी लानत-मलामत कर रही थी। मोटी नाकवाले प्रकाण्ड चेहरे को घुसाकर गाड़ीवान ने कहा—तुम्हारी बहन डिपथिरिया अस्पताल में गई है। एक हफ़्ते से अधिक हुआ होगा, डाक्टर आकर तुम्हारी बहन को ले गया है। उसके बाद से वहाँ के लोग प्रायः आते हैं और पूछते हैं कि वह कौन है, किसकी है।

और उसे झकझोर कर सचेत किया; कहा—"ताला बन्द करने का समय हुआ है, अब तुमको जाना होगा।"

पीयर उठा, उसने चलने की चेष्टा की; उसके बाद धीरे-धीरे अंधे की तरह ठोकरें खाते हुए फाटक के बाहर आया और रास्ते पर चलने लगा। थोड़ी देर बाद उसको मालूम हुआ कि वह एक अस्तबल के आँगन के ऊपर की सीढ़ी पर चढ़ रहा है। कमरे के अन्दर प्रवेश करते ही, वह जिस अवस्था में था उसी अवस्था में, खाट पर चित्त होकर गिर पड़ा और उसी तरह लेटा रहा।

दिन भर का अवरुद्ध ताप वृष्टि के रूप में टूट पड़ा और उसके सिर पर उस वर्षण का झर-झर शब्द होने लगा; छत के नलों से वह पानी प्रपात की तरह गिरने लगा। अपने अनजाने में ही पीयर चौंक उठा—लुइसे तो इस वृष्टि में रास्ते पर ही होगी; अब तो उसको गाउन की ज़रूरत है! मानों उसे निकालने ही के लिए पीयर झपटकर उठा; लेकिन फिर वह रुक गया और धीरे-धीरे खाट पर फिर सो गया।

उसने पैरों को समेट लिया और सिर को बाहुओं से ढँक लिया। अदृष्ट शक्ति के निष्करुण और निर्मम हाथों से संचालित कालचक्र में असहाय रूप से पिसनेवाले मनुष्यों के कितने ही दृश्य उसके मस्तिष्क के भीतर घूमने लगे।

तब वह मानों पहली बार विधाता के विरुद्ध सिर उठाकर चिल्ला उठा—यह सब निरर्थक है! मैं इसे सहन नहीं करूँगा!!

छोटी उम्र में उसने जिस प्रार्थना-मन्त्र का उच्चारण करना सीखा था, चिरभ्यस्त की तरह जब रात को उस प्रार्थना के लिए वह हाथ जोड़ने जा रहा था, उस समय वह एकाएक अट्टहास कर उठा और इसके बाद मुट्ठियाँ बाँधकर चिल्ला उठा—नहीं, नहीं नहीं; फिर कभी नहीं।

फिर उसके मन में आया कि ईश्वर भी थोड़ा-बहुत उस

स्कूलमास्टर की तरह है जो सम्पन्न लोगों का ही पक्ष लेता है। हाँ, जिनके मा-बाप हैं, घर है, भाई-बहन हैं, सांसारिक सम्पत्ति है, वह उनकी रक्षा करता है, उन्हीं का ख़्याल करता है। परन्तु मैं तो इस संसार में एकाकी हूँ, जो यथाशक्ति संग्राम करता हुआ चल रहा है, मेरे सर्वस्व को वह छीन लेगा? मैं किसी के लिए कुछ नहीं हूँ। मैं ग़रीब हूँ, मुझे सज़ा मिलेगी। मेरी देख-रेख करनेवाला कोई नहीं है तो मुझे ज़मीन पर फेंक दिया जायगा। ओफ़् ओ! वह मुट्ठी बाँधकर दीवार पर आघात करने लगा।

उसका छोटा-सा संसार चूर्ण-विचूर्ण हो गया। या तो ईश्वर बिलकुल है ही नहीं, या वह निर्मम और निर्विकार है, दोनों ही एक-से बुरे हैं। वह अपने मन से कहने लगा—स्वर्ग-राज्य बादलों के पीछे निश्चिह्न हो गया, ऊपर शून्य के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं रह गया। अरे! महामूर्ख की तरह हाथ मत जोड़! ज़मीन के ऊपर से चल! जिस प्रकार स्कूलमास्टर को तूने तुच्छ किया था, उसी प्रकार ईश्वर को, नियति को, तुच्छ करते हुए सिर ऊँचाकर चल। मुक्ति के लिए तेरी मा तुझे नहीं चाहती; क्योंकि वह कहीं है ही नहीं। वह मर गई है; मृत्यु के बाद मिट्टी में मिल गई है। इस संसार में तेरे लिए, तेरी माता के लिए और किसी भी प्राणी के लिए इससे अधिक कुछ नहीं रह सकता।

वह वहीं पर पड़ा रहा। वह सोना चाहता था; परन्तु एक अस्पष्ट और दूर से आते हुए प्रकाश की काली और सुनहली लहरों पर लहराते हुए मानों वह मग्न होने लगा। अब उसने एक शब्द सुना—यह कैसा शब्द है? वायोलिन का! वह प्रार्थना-संगीत! लुइसे क्या तुम बजा रही हो? उस समय उसने उस अस्पष्ट प्रकाश में उसे पहचान लिया। वह कैसी म्लान

हो गई थी! परन्तु वह बजाने लगी। और तब उसने उस अस्पष्ट प्रकाश को समझ लिया।

यह उसकी दैनिक चेतना से परे का जगत् था। यह उसका अपना जगत् था! "पीयर मुझे यहाँ पर रहने दो।" उसके भीतर से किसी ने उत्तर दिया—"हाँ, लुइसे, तुम रहोगी। ईश्वर न रहे, अमरता न रहे, तथापि तुम यहाँ रहोगी।" लुइसे तब मुसकराई। उसका बजाना जारी रहा। मानों स्वर्ग को, ईश्वर को, तुच्छ करके पीयर लुइसे के लिए एक छोटा-सा प्रार्थना-मंदिर बनाने लगा; मानों वह उसके लिए एक चिरंतन प्रार्थना-वाद्य को अपने हाथ से ध्वनित करने लगा। उसके अन्दर यह क्या हो रहा है? उसे सान्त्वना देने को कोई नहीं है; तथापि जो कुछ प्राणमय है, उस सबको, उस धरणी और नक्षत्र-मण्डल को; उसने अपनी अन्तरतम सत्ता से एक अर्घ्य निवेदित कर दिया। उसके मन में ऐसा होने लगा, मानों उसके साथ सब कुछ प्रार्थना की विशाल लहरों के ताल से आन्दोलित हो रहा है। यदि वह जाग्रत् हो जायगा तो देखेगा कि यह सब केवल एक सुन्दर स्वप्न-मात्र था, इस भय से वह हाथ फैलाकर आँखें बन्द किये पड़ा रहा।

सप्तम परिच्छेद

बग़ल में किताबें लिये हुए, शहर से लौटने के रास्ते पर एक दिन क्लाउस ने पीयर से कहा—पीयर देखो, यह तुम्हारा भाई है।

"देखो क्लाउस, तुमसे कह देता हूँ, कृपाकर तुम उसको मेरा भाई न कहना; और एक बात है—मेरा पिता किसान था, इसके अतिरिक्त और एक भी शब्द उसके संबंध में तुम कभी किसी से न कहना। मेरा नाम होल्म है और यह नाम मेरे पिता की खेती के स्थान का नाम है; यह याद रखना, समझे ?"

"बहुत अच्छा, तुम इतने उत्तेजित मत हो।"

"क्या तुम समझते हो कि मैं उस अभिमानी को यह सोचकर ख़ुश होने दूँगा कि मैं उसे संतुष्ट करना चाहता हूँ ?"

"नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं!"—क्लाउस असन्तुष्ट भाव से सीटी बजाता हुआ जाने लगा।

"या ऐसा सोचने दूँगा कि मैं उसके सम्भ्रान्त परिवार में अशान्ति लाना चाहता हूँ ? नहीं, एक दिन, संभव है, मैं उससे इसका बदला लूँ; परन्तु इस प्रकार नहीं।"

"अच्छा, परन्तु भाई और लोग उसके बारे में क्या कहते हैं, यह सुनने की शक्ति तो तुममें है ही ? सुना जाता है, फ़र्डीनण्ड होल्म के बारे में उसके परिवार के लोग हताश हो गये थे। मिलिटरी एकाडमी से उसने पढ़ना-लिखना छोड़ दिया; क्योंकि उसे ऐसा लगा कि सैनिक लोग और उनके काम उपहास योग्य हैं। इसके बाद उसने धर्म-विज्ञान की थोड़े दिनों तक परीक्षा की। यह और भी ख़राब मालूम हुआ। अन्त में

इंजीनियरिंग को सर्वश्रेष्ठ पेशा समझकर टेकनिकल कॉलेज में आकर उसने डेरा डाला है। अब तुम क्या कहते हो ?"

"मुझे तो इसमें कोई विशेष बात नहीं मालूम पड़ती।"

"ज़रा ठहरो भाई, क़िस्से का असल भाग अभी बाक़ी है। कई हफ़्ते पहले उसने एक पुलिसवाले को, किसी छोटे बच्चे का अपमान या ऐसा ही कुछ करने के लिए ख़ूब पीटा था। इसके बाद एक भयानक कुत्सित कार्य हुआ—हाथों में हथकड़ी, पुलिस कोर्ट, जुर्माना इत्यादि। गत शीत ऋतु में उसने क्या किया था, जानते हो ? उसने अपनी माता की दासी के साथ शादी करने का निश्चय किया; और वह भी सबको बतलाकर। माता ने जब उसे ख़बर न देकर उस लड़की को और कहीं भेज दिया, तो उसने विद्रोही होकर एकदम घर ही छोड़ दिया। अब तो वह समाज के अभिजातवर्ग और उनके क्रियाकलाप के ऊपर बहुत ही क्रुद्ध है और उनके ऊपर आग बरसाने के सिवा उसको और कोई काम ही नहीं है। इस पर तुम क्या कहते हो ?"

"अच्छा साहब, क्या मैं पूछ सकता हूँ कि इस सबसे मेरा क्या वास्ता है ?"

"ख़ैर, मेरी समझ में तो यह उसका साहसपूर्ण काम है। हो सका तो मैं उसके साथ वार्तालाप भी करूँगा। लोग कहते हैं कि उसने बहुत पढ़ा-गुना है और उसकी बुद्धि भी बहुत तीव्र है।"

पीयर जिस दिन पहले-पहल कॉलेज गया था, उसी दिन उसने फ़र्डीनण्ड होल्म के बारे में सुना था और ध्यान के साथ उसे देखा भी था। देखने में फर्डीनण्ड लम्बा और सीधा था। बाल लाल-से थे, चेहरा दाग़ों से भरा था और आँखों पर काला 'पैंस्ने' चश्मा लगाये था। वह अपने सिर पर साधारण कॉलेज-कैप नहीं लगाता था। उसके सिर पर भूरे रंग का कड़ा फेल्ट हैट था; उम्र चौबीस या पचीस वर्ष की मालूम होती थी।

पीयर ने अपने मन में कहा—अच्छा ठहरो बच्चू! हाँ, इसमें कोई शक नहीं कि उस दिन तुम भी वहाँ पर थे, जिस दिन लोगों ने मुझको गिरजा के आँगन से भगा दिया था; परन्तु यहाँ तो वे लोग तुम्हारी मदद करने नहीं आयेंगे। शायद तुमने मुझसे पहले पढ़ना शुरू किया है और थोड़ा-बहुत सीख भी लिया है। पर ठहरो! देखेंगे!

परन्तु एक दिन सवेरे बाहर के आँगन में उसने देखा कि फर्डीनण्ड उसकी ओर देख रहा है और उसे अच्छी तरह देखने के लिए चश्मे को ठीक करके लगा रहा है; पीयर तुरन्त वहाँ से मुँह मोड़कर हट गया।

पर फर्डीनण्ड मैट्रिक्यूलेशन पास होने के कारण ऊपर की कक्षा में प्रविष्ट हुआ। उसका विषय भी भिन्न था—रास्तों और रेलवे का बनाना; इसलिए प्राङ्गण और आने-जाने के रास्ते के सिवा उन दोनों की भेंट और कहीं नहीं होती थी।

बड़े दिन के थोड़े ही दिनों बाद, एक दिन अपराह्न के समय, डिज़ाइन बनाने के बड़े कमरे में खड़ा होकर पीयर काम कर रहा था कि उसने अपने पीछे पैरों का शब्द सुनकर मुँह फेरा और देखा कि क्लाउस है और फर्डीनण्ड होल्म।

होल्म ने कहा—मैं आपसे मिलना चाहता था। इसके बाद क्लाउस ने उन दोनों में परिचय करा दिया। उसने तर्जनी पर लाल अँगूठी चढ़ाये हुए सुन्दर हाथ को बढ़ाते हुए कहा—मालूम होता है कि हम दोनों के एक ही नाम हैं। ब्रोक ने मुझसे कहा था कि आपका यह नाम आपके जन्मस्थान होल्म के कारण ही पड़ा है!

पीयर ने कहा—हाँ, मेरे पिता मामूली किसान थे।

इन शब्दों में दीनता का भाव प्रकट होते देखकर पीयर तुरन्त अपने ऊपर लज्जित हो उठा।

जनक व्यापार के सामने खड़ा रहता था। और अब वह स्वयम् विस्मयजनक कार्य करने की शक्ति संग्रह कर रहा है। इसी लिए तो वह पढ़ता है, केवल पढ़ता है; शिक्षक या पुस्तक से जो कुछ पाता है, सभी पीता जाता है और स्वयम् उसके बारे में सोचता रहता है। निर्दिष्ट पाठ और नियत कार्य अच्छे ही हैं; परन्तु पीयर हमेशा सामने की ओर दृष्टि को बढ़ाता है; उसके मन में प्रश्न पर प्रश्न और समस्या पर नई-नई समस्यायें हैं। हर घड़ी वह आगे की ओर चल रहा है, केवल सामने की ओर, अभिनव की ओर, अज्ञात की ओर!

वसंत-ऋतु थी, नगर की छाया वीथी के वृक्षों पर कलियों का निकलना शुरू हुआ। एक दिन क्लाउस ब्रोक और फर्डीनण्ड नार्थ-स्ट्रीट के एक 'काफे' में बैठे थे। फर्डीनण्ड ने कहा—वह तुम्हारा दोस्त जा रहा है। झरोखे से दोनों ने देखा कि पीयर रास्ते के दूसरे किनारे के पोस्टआफ़िस के सामने से जा रहा था। पोशाक मैली और जूते गंदे थे। सुन्दर मस्तक पर कॉलिज कैप लगाये, सिर नीचा किये चला जा रहा था। तथापि रास्ते पर की प्रत्येक वस्तु को देखता हुआ जा रहा था।

क्लाउस ने कहा—मेरी समझ में नहीं आता कि वह किस विचार में मग्न चला जा रहा है।

"देखो, ऐसा मालूम हो रहा है कि इसने उस प्रकार की गाड़ी नहीं देखी है, गाड़ीवान् को रोकने तो नहीं जा रहा है...?"

पीयर उसे देख न ले; इस डर से क्लाउस खिड़की से हट गया और फिर हँसकर बोला--बड़ा सनकी है। वह गाड़ी को रोकने के लिए पहिये के नीचे रेंगता हुआ घुस सकता है।

चश्मे को ठीक करके फर्डीनण्ड ने कहा--वह बहुत थका हुआ और मलिन दिखाई पड़ रहा है; शायद उसके रिश्तेदारों की हालत अच्छी नहीं है!

क्लाउस ने आँखें खोलकर फर्डीनण्ड की ओर ताका और कहा—शायद धन की प्रचुरता नहीं है।

बीयर और सिगरेट पीते हुए, उन लोगों में बहुत-कुछ बातें हुईं। अन्त में एकाएक फर्डीनण्ड ने पूछा—हाँ, सुनो, तुम्हारे मित्र के मा-बाप जीवित हैं?

पीयर की पारिवारिक बातें बतलाने के लिए किसी प्रकार का आग्रह न दिखाते हुए उसने संक्षेप में उत्तर दिया—शायद नहीं हैं।

"मुझे भय है कि मेरे प्रश्नों से तुम परेशान न हो जाओ। परन्तु असल बात यह है कि उस युवक के प्रति मेरा आकर्षण हुआ है। उसके चेहरे पर ऐसा कुछ है, जिसके प्रति मेरा मन बहुत ही आकृष्ट हो रहा है। यहाँ तक कि उसके चलने का ढंग तक......। इसके पहले न जाने कहाँ मैंने और किसी को इसी प्रकार चलते देखा है। सुनता हूँ कि वह स्टीम इंजिन की तरह काम करता है।"

"काम करने की बात कहते हो! वह यदि ऐसा ही पिसता रहा, जैसा आजकल पिस रहा है, तो थोड़े ही दिनों में उसका स्वास्थ्य बिलकुल बिगड़ जायगा। मेरी समझ में वह सोचता है कि अधिक ज्ञान प्राप्त होने से अन्त में.........।"

"अन्त में क्या?"

"और क्या, ईश्वर को जान सकेगा!"

फर्डीनण्ड खिड़की से टकटकी लगाकर देखता रहा; फिर बोला—अद्भुत जीव है।

"गत रविवार को पहाड़ पर उससे भेंट हुई थी। जानते हो, वहाँ वह क्या कर रहा था? भूतत्त्व का अध्ययन हो रहा था! कहीं किसी विषय पर अगर व्याख्यान होता हो—चाहे वह ज्योतिष या किसी फ्रांसीसी कवि के बारे में ही क्यों न हो—तो

निश्चय जानिए, पीयर वहाँ अवश्य उपस्थित होगा। इस क़िस्म के आदमी के साथ बराबरी करना कैसे संभव है ? अकस्मात् कोई नया नाम, मान लो अरिस्टॉटिल का, उसके सामने आ गया। बस, कुछ नया तो है ! अब चला लाइब्रेरी में उसकी खोज करने। इसके बाद रात-रातभर जागना और ग्रीक अनुवादों से मस्तिष्क को भरना, चलने लगा। जो मनुष्य इस प्रकार चलता है, उसके साथ पैर मिलाकर चलना क्या संभव है ? लेकिन एक विषय ऐसा भी है, जिसके बारे में वह कुछ नहीं जानता।"

"वह क्या ?"

"सुरा और नारी—और साधारण तरीक़े से कहा जाय तो आमोद-प्रमोद। तुम्हारी क़सम, चाहे वह और जो कुछ हो, तरुण नहीं है।"

लम्बी साँस लेकर फर्डीनण्ड ने कहा—शायद यह सब करने की अवस्था उसकी नहीं है।

इसके बाद पीयर के संबंध में कुछ और साधारण चर्चायें चलती रहीं।

एक दिन पीयर अस्तबल के ऊपर के कमरे में अकेला बैठा हुआ था। सीढ़ी पर किसी के पैरों का शब्द हुआ और उसके बाद ही दरवाज़ा खोलकर फ़र्डीनण्ड होल्म ने प्रवेश किया। अनिच्छावश पीयर एक कुर्सी के पिछले भाग का सहारा लेकर खड़ा हो गया और सोचने लगा कि क्या वह उस अहंकारी स्कूल-मास्टर का भेजा हुआ आया है अथवा उसके 'होल्म' नाम को छीनने के लिए आया है ? यदि ऐसा हो तो धक्का देकर उसको सीढ़ी से नीचे गिरा देंगे, बस !

आगन्तुक ने हैट रख दिया और कुर्सी खिसकाकर बैठते हुए कहा—मैंने सोचा कि देखूँ आप कहाँ रहते हैं ? मैं देख रहा हूँ कि मैंने आपके ऊपर अप्रत्याशित रूप से आक्रमण किया है। मुझे

खेद है कि मैंने आपको कष्ट दिया। परन्तु आपसे मुझे कुछ ज़रूरी बातें कहनी थीं।

"अच्छा!"—कहकर पीयर जहाँ तक हो सका दूर हटकर बैठ गया।

"हम लोगों में कई बार मामूली भेंट हुई है। मैंने देखा है कि आप मुझे पसंद नहीं करते; परन्तु देखिए, यह मुझसे बर्दाश्त न होगा।"

पीयर को इस पर हँसना चाहिए या नहीं, वह निश्चय न कर पाया, बोला—आपका क्या मतलब है?

"कुछ नहीं, केवल मैं आपका मित्र होना चाहता हूँ। आपके बारे में मैं जो कुछ जानता हूँ, संभव है कि आप मेरे बारे में इससे कहीं अधिक जानते हों; परन्तु उससे कुछ नहीं। अच्छा...! क्या आप हमेशा इसी प्रकार उँगलियों से टेबल ठकठकाते हैं? यह अभ्यास तो मेरे पिता का भी था!"

पीयर चुपचाप फर्डीनण्ड की ओर देखता रहा; लेकिन तब तक उसका उँगली हिलाना बन्द हो गया था।

"देखिए, आप जिस प्रकार जीवन-यापन कर रहे हैं, उससे मुझे रश्क होता है। आप जब लखपती बनेंगे तो उन लाख रुपयों का मूल्य बहुत अधिक होगा। इसके अलावा हम लोगों से आप जीवन के बारे में कहीं अधिक जानते हैं। इस छोटी उम्र से ही हम लोगों के दिमाग़ों में, न जाने क्या-क्या ठूँस दिया गया है। इसलिए हम लोगों से किताबी ज्ञान का मूल्य भी आपके लिए कहीं अधिक है। अच्छा, आप तो इंजीनियरिंग के लिए तैयार हो रहे हैं न?"

पीयर ने कहा—"हाँ"; परन्तु उसके चेहरे ने स्पष्ट कहा—"इससे तुम्हें क्या?"

"मेरे मन में तो ऐसा होता है कि आधुनिक यंत्रविद् एक

प्रकार के धर्मयाजक हैं, नहीं शायद उन्हें प्राचीन प्रोमिथिउस के उत्तराधिकारी ही कहना उचित है। वह भी एक बहुत ऊँचे दर्जे का कुलीन है न? अच्छा, आपके मन में कभी ऐसा भान हुआ है कि प्रकृति के ऊपर मानवात्मा की प्रत्येक विजय के साथ ही साथ देवताओं की सर्वशक्तिमत्ता थोड़ी-थोड़ी करके नष्ट होती जा रही है? मेरे मन में सदा ऐसा होता है, मानों हम लोग आग, इस्पात यांत्रिक शक्ति और मानव-चिन्ताओं को विधाता के अत्याचारों के विरुद्ध शस्त्र की तरह प्रयोग कर रहे हैं। एक दिन आयेगा जिस दिन प्रार्थना करने की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी। वह मुहूर्त आयेगा जब स्वर्गीय शासकमण्डली सन्धि करने को बाध्य होगी और हमारे सामने उसके नत होने की बारी आयेगी। आपका क्या ख्याल है? मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि 'जिहोवा' इंजीनियरों को पसंद नहीं करते हैं!"

पीयर ने संक्षेप में उत्तर दिया—'सुनने में अच्छा है।' परन्तु अपने मन में उसने स्वीकार किया कि उसके मन में जो बात प्रकाश के लिए संग्राम कर रही थी, फर्डीनण्ड ने उसी को भाषा में व्यक्त किया है।

फर्डीनण्ड कहने लगा—कुछ समय के लिए हम दोनों को छोटे-छोटे विषयों को लेकर ही तृप्त रहना पड़ेगा, यह ठीक है। और यह भी मानने में मुझे आपत्ति नहीं है कि थोड़ा-सा रास्ता या थोड़ी-सी रेलवे बनाना, एक खाल या और किसी वस्तु के ऊपर पुल बनाना—यह सब मुझे अच्छा नहीं लगता। पर यदि बाहर के विशाल जगत् में निकला जाय तो करने योग्य पर्याप्त काम मिलेंगे, जिससे हमारे अन्दर, अगर यथार्थ में कुछ है, तो उसके विकास के लिए प्रचुर अवसर मिल सकता है। पृथिवी के भिन्न-भिन्न प्रान्तों में जाकर, नाना जातियों को परास्त करके जिन लोगों ने साम्राज्यों की स्थापना की है और जहाँ गये हैं वहीं

पर जातियों को संगठित और सभ्य किया है, उन बड़े सैनिकों से मैं रश्क करता था। परन्तु हमारे समय में, यदि एक बार दुनिया में निकल सकें, तो इंजीनियर लोग भी बड़े-बड़े काम पा सकते हैं; हज़ारों मील के दलदलों को सुखा सकते हैं; नील जैसी नदी को नियंत्रित कर सकते हैं; दो महासागरों को संयोजित कर सकते हैं। एक दिन मैं इसी प्रकार का काम हाथ में लूँगा। यहाँ का मेरा काम ज्यों ही ख़त्म होगा त्यों ही मैं यहाँ से भागूँगा। इसके बाद जो इंजीनियर आयेंगे, मान लीजिए दो सौ साल के बाद—उनके ऊपर एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र को जाने के लिए रास्ता बनाने का भार रहेगा। सिगार पिऊँ आपको कुछ आपत्ति तो नहीं होगी?

"नहीं, पीजिए, लेकिन मुझे खेद है कि मेरे पास... ।"

"कोई बात नहीं, धन्यवाद; मेरे पास है।"—कहकर फ़र्डीनण्ड ने अपना सिगार-केस निकालकर पीयर के सामने बढ़ा दिया। पीयर के इनकार करने पर फ़र्डीनण्ड ने स्वयम् एक सिगार निकाल लिया।

"देखिए, चलिए न! कहीं 'डिनर' किया जाय?"

पीयर आगन्तुक की ओर टकटकी लगाकर देखने लगा; इस सबका मतलब क्या है?

"साधारणतः मैं एक पक्का 'स्पार्टन' हूँ; परन्तु हाल में लोगों ने पिता जी की जायदाद का बटवारा कर लिया है। अब मेरे पास कुछ पैसा है। इसलिए एक छोटा-सा डिनर खाकर थोड़ा आनन्द क्यों न किया जाय! कपड़ा बदलना चाहें तो मैं बाहर जाकर खड़ा होता हूँ; लेकिन आपकी इच्छा हो तो ऐसे ही चले चलिए।"

पीयर और भी घबराने लगा। इन सबके पीछे और कोई मामला तो नहीं है! अथवा यह युवक वास्तव में भला है। अन्त

मानो वह सान्ध्यप्रार्थना कर रहा है और ऐसे ही भाव से विनम्र चित्त होकर उत्तर देने की चेष्टा करता है—'क्यों, मैं तो बहुत बड़ा इंजीनियर बनने जा रहा हूँ।' अच्छा, उसके बाद ? 'प्रोमिथिउस के सन्तान जो विधाता के अत्याचारों के विरुद्ध विद्रोह चला रहे हैं, मैं भी उनमें से एक बनूँगा।' अच्छा, उसके बाद ? 'मैं वह सोपान बनाने में मदद दूँगा जिसके सहारे मनुष्य ऊपर की ओर, और भी ऊपर की ओर, आत्मा की ओर, प्रकृति-विजय की ओर अग्रसर हो जायँगे।' इसके पश्चात् ? 'वे सुख से रहेंगे, शादी करेंगे, उनकी सन्तानें सुन्दर, ऐश्वर्यपूर्ण गृहों में रहेंगी।' इसके पश्चात् ? 'ओ, हाँ, बुढ़ापा तो आयेगा ही, मृत्यु भी होगी, निश्चय !' इसके पश्चात् ? इसके पश्चात् ? बोलो, इसके बाद क्या होगा ?

जिस स्वप्न-जगत् में खड़ी होकर लुइसे अपने वाद्य की अरुण-लहरों में उसे लहराती हुई केवल बजाती जा रही है, उस जगत् में आश्रय लेकर, ऐसे समयों पर पीयर एक अस्पष्ट सान्त्वना को प्राप्त करता है। परन्तु यहीं पर क्यों वह और भी अधिक उस तृष्णा का अनुभव करता है ?

कालेज का पाठ समाप्त कर, अपने कहने के अनुसार फर्डीनण्ड वृहत् संसार में निकल पड़ा और उसके साथ गया क्लाउस। इसलिए तीसरे साल के अधिकांश समय में पीयर को अकेले ही देखा गया; किताबें बग़ल में लिये, सिर नीचा किये वह चलता था।

ठीक अन्तिम परीक्षा के लिए जब वह तैयार हो रहा था, ऐसे समय पर मिस्र से फर्डीनण्ड का एक पत्र मिला। उसमें लिखा था—मित्र, यहाँ चले आओ। इतने दिनों के बाद लन्दन के ब्राउन ब्रादर्स नाम की एक बड़ी फ़र्म से अच्छा काम पाया है। यह फ़र्म कनाडा में रेलवे, भारतवर्ष में पुल, आर्जेण्टिना में

बन्दरगाह और यहाँ मिस्र में खाल और बाँध बना रही है। हम लोग प्रारम्भ में तुम्हारे लिए ड्राफ़्ट्‌स्‌मैन के एक छोटे-से पद का प्रबन्ध कर सकते हैं। तुम्हारे आने का ख़र्चा भेज रहा हूँ; चले आओ।

परन्तु पीयर तुरन्त नहीं गया। मेकानिक्स का अध्यापक होकर वह और एक साल के लिए ठहर गया और अपने सौतेले भाई की तरह मार्ग और रेलवे बनाने की विद्या पढ़ने लगा। इस विषय में भी वह किसी से पीछे नहीं रहेगा, ऐसी ही एक गुप्त इच्छा से वह प्रेरित हो रहा था।

ज्यों-ज्यों साल बीतता गया, उसके साथियों के पत्रों में उतनी ही ललचानेवाली और ज़रूरी ताक़ीदें आने लगीं। क्लाउस ने लिखा—यहाँ पर इंजीनियर एक मिशनरी है; पर वह 'जिहोवा' का प्रचार करने के लिए नहीं; परन्तु योरप की शक्ति और साधना के प्रचार करने के लिए। भैया, तुम्हें भी इसमें मदद देनी पड़ेगी। यहाँ पर एक भारी जेनरल का काम तुम्हारे लिए रखा हुआ है।

अन्त में एक हेमन्त के दिन को, जब नगर के चारों ओर हरियाली फैल गई थी, पीयर अपने बृहत्काय ट्रैवलिंग ट्रंक को गाड़ीवान की जगह पर बाँधकर घर से रवाना हुआ। यात्रा के पहले लुइसे की समाधि के लिए एक छोटा-सा फूल का गुच्छा लेकर वह गिरजा के प्रांगण तक गया। कौन कह सकता है कि फिर वह इस समाधिस्थान को देख पायेगा या नहीं!

स्टेशन पर पहुँचकर एक मुहूर्त के लिए पीयर ने पुराने शहर की ओर मुँह फेरकर देखा—वह गिरजा है, और वह दुर्ग है जहाँ पर आकाश की पट भूमि पर संतरी चलता हुआ पहरा दे रहा है। क्या उसका यौवन आज समाप्त हो रहा है? लुइसे, अस्तबल के ऊपर का घर, अस्पताल, घाववालों का अस्पताल,

कालेज;...इसके बाद वह फ़ियर्ड और इसी समुद्र के तट पर बहुत दूर पर कहीं एक मछुए की छोटी धूसर वर्ण की झोपड़ी, जहाँ उसने विदाई के उपहारस्वरूप तम्बाकू और कॉफ़ी का एक पार्सल भेजा है।

पीयर राजधानी की ओर रवाना हुआ, और वहाँ से विशाल जगत् की ओर।

कई साल बीत गये। फिर गर्मी आई—और जून भी। एक दिन संध्या को, एण्टवर्प से क्रिस्टियाना की ओर जानेवाला पैसेंजर जहाज़ धीरे-धीरे समुद्र पर चल रहा था। शान्त समुद्र एक विशाल आईने की तरह फैला हुआ था। रंग-बिरंगे मेघों के सहित आकाश उसमें प्रतिबिंबित हो रहा था। समय सुहावना था। सब यात्री डेक पर रहना चाहते थे। कुछ चित्रकार यात्री चित्र खींच रहे थे। कुछ पीने के लिए वाइन की माँग कर रहे थे। युवतियाँ अपनी माताओं से नाचने के लिए आज्ञा माँग रही थीं, और यद्यपि मातायें उन्हें ऐसा करने से रोकती थीं, पर कुछ समय बाद वे स्वयं भी नाचने के लिए उतावली हो जाती थीं। एक चश्माधारी डाक्टर साहब बेरल के पास खड़े होकर लेक्चर झाड़ रहे थे। रात ऐसी सुहावनी थी कि सभी यात्रियों के हृदय उल्लास और प्रसन्नता से परिपूर्ण हो रहे थे।

द्वितीय खण्ड

प्रथम परिच्छेद

चित्रकार स्टोराकेर ने अपने मूर्तिकलावेत्ता मित्र प्रोस से पूछा—वह कौन भिखमंगा-सा बैठा है जो इस आमोद-प्रमोद में कोई भाग नहीं ले रहा है ?

“वह ! वे वही महाशय हैं जो, जब हम लोग डिनर के समय मिस्र के बरतनों पर बातचीत कर रहे थे, तब हमें कुछ शिक्षा देने लगे थे।”

“हाँ, हाँ, ठीक कह रहे हो ! मालूम होता है कि आप एक परदेशी स्कूल मास्टर हैं। जब हम एथेन्स में ग्रीक-भास्कर्य के विषय में बातचीत कर रहे थे उस समय भी आप कृपा करके हमारा भ्रम-संशोधन करने लगे थे।”

“आज सवेरे मैंने आपको डाक्टर के साथ असीरियालोजी (Assyriology) पर चर्चा करते सुना था।”

जिस यात्री के सम्बन्ध में ये लोग चर्चा कर रहे थे, वह मामूली कद का पुरुष था। उम्र तीस-चालीस के बीच में मालूम होती थी। थोड़ी ही दूर पर डेक-चेयर में लेटा हुआ था। सिर पर की टोपी से लेकर जूते के ‘गेटर’ तक उसकी सारी पोशाक भूरे रंग की थी। चेहरा पीला-सा था और दाढ़ी के छोटे-छोटे भूरे बाल पकने लगे थे। परन्तु उसकी आँखें नाचनेवालों की ओर थीं और उनमें आनन्द का भाव झलक रहा था। वह पीयर होल्म था।

जब जहाज़ क्रिश्चियाना में जेटी के पास आया, दूसरे यात्री रेलिंग के पास क़तार बाँधकर खड़े हो गये; उनके इष्ट-मित्र डेक पर आने लगे। अश्रु, हास्य, चुम्बन और आलिङ्गन के दृश्य दिखाई दिये। उतरने के समय अभिवादन के उद्देश्य से पीयर ने भी अपनी हैट उतार ली। उसकी ओर ताकने का अवसर किसी को न था। एक होटल के कुली को अपना सामान सौंपकर पीयर अकेला शहर की सड़कों पर चलने लगा। मानों वह यहाँ परदेशी हो।

नारवे की आलोकमयी रात्रि में उसके लिए सोना कठिन हो गया। वह वास्तव में भूल गया था कि यहाँ पर प्रकाश दिन-रात रहता है। क्रिश्चियाना यद्यपि राजधानी थी, परन्तु इतनी छोटी कि एक स्थान से दूसरा स्थान कुछ ही क़दम की दूरी पर मालूम पड़ता था। ये लोग उसके स्वदेशवासी थे लेकिन वह इनमें से किसी को नहीं जानता था। उसका स्वागत करनेवाला यहाँ कोई नहीं था। फिर भी पीयर सोचता था कि एक दिन यह सभी बदल सकता है।

अन्त में एक दिन वह एक पुस्तक की दूकान के सामने खड़ा होकर खिड़की की ओर देख रहा था। इसी समय उसने पीछे से किसी को यह कहते सुना—'यह क्या, पीयर होल्म है?' यह आवाज़ टेकनिकल कालेज के उसके एक सहपाठी लांगबेर्ग की थी। वह पहले ही की तरह दुबला-पतला और पीला था। कालेज-जीवन में वह एक प्रतिभावान् छात्र था—और अब? अब वह मलिन, हीन और जराग्रस्त लगता है!

पीयर ने उसका हाथ पकड़कर कहा—मैंने पहचाना नहीं।

"अब तुम लखपती और विश्वविख्यात हो गये हो न!"

"अरे नहीं, यार ऐसा कुछ नहीं; आज-कल तुम क्या कर रहे हो?"

"मैं? मेरी बात छोड़ दो।" रास्ते में एक साथ चलते हुए

लांगबेर्ग अपना सब हाल बताने लगा—'समय बड़ा ख़राब हो गया है। देश की अवस्था मनुष्यों का गला घोंटकर मार रही है। स्टेट रेलवे आफ़िस में दस-बारह साल पहले उसने ड्राफ़्ट्स्मैन होकर प्रवेश किया था, अब भी वहीं पर है। इधर परिवार बढ़ता जा रहा है और...भाई साहब, वेतन की यह हालत है...!, कहते हुए उसने निराशाभरी दृष्टि से पीयर की ओर देखा और उसके हाथ पकड़ लिये।

बाधा देकर पीयर ने कहा—देखो, क्रिश्चियाना में संध्या बिताने के लिए सबसे अच्छा स्थान कौन है, कह सकते हो?

"सेण्ट हान्स हिल। वहाँ पर संगीत भी होता है।"

"बहुत अच्छा, तो आज रात को वहाँ पर मेरे साथ तुम्हारा भोजन का निमंत्रण है, आ सकोगे? ठीक आठ बजे होगा।"

"धन्यवाद, अवश्य आने का प्रयत्न करूँगा।"

पीयर ठीक समय पर आया और बरामदे के एक टेबल पर अधिकार करके बैठ गया। थोड़ी देर में लांगबेर्ग भी अपनी सबसे अच्छी पोशाक पहनकर, जिसे उसने यत्नपूर्वक रविवारों पर पहनने के लिए रख छोड़ा था, आगया। वह पोशाक थी—एक मलिन फ्रॉक कोट, घुटनों के पास फूला हुआ पैजामा और बहुत दिनों की स्ट्रा-हैट, जो कि पुरानी होने के कारण पीली पड़ गई थी।

पीयर ने कहा—बातचीत करने के लिए एक साथी मिल गया, ग़नीमत है। क़रीब डेढ़ साल हो गये, अकेला ही घूम रहा हूँ।

"क्या मिस्र से आये इतने दिन हुए?"

"हाँ, इससे भी ज्यादा; मिस्र छोड़ने के बाद मैं एबीसीनिया में था।"

"अरे हाँ, अब मुझे याद आया। अख़बार में निकला था। राजा मेनेलिक के लिए तुम्हीं रेलवे बनवा रहे थे न?"

"हाँ, पर गत अठारह महीने से मैं अलस होकर समय बिता रहा हूँ। कभी थिएटर, कभी म्यूज़ियम, यही सब। याद आ रही है, एक दिन पार्थेनन की सीढ़ी के ऊपर बैठकर मैं ऐण्टिगोन की आवृत्ति कर रहा था। बहुत दिनों के बाद उस दिन एक ऐसा मुहूर्त आया था जिसका कुछ अर्थ मेरी समझ में आया था।"

"छोड़ो, इसे। क्या तुम इसकी तुलना नील नदी के बाँध के साथ करना चाहते हो? कई साल तक तुम उस काम में थे न? कहो न उसके बारे में कुछ, सुनूँ! वहाँ पर पत्थर की खदानें बहुत-सी हैं? यहाँ स्वदेश में बैठकर भी मैं बाहरी दुनिया से अलग नहीं रहता हूँ! परन्तु तुमने तो बहुत कुछ देखा है! क्या नाम है उस शहर का, जहाँ तुम थे?"

उस समय बगीचे में और भी बहुत-से लोग आ-जा रहे थे। उनकी ओर देखते हुए, निर्विकार-भाव से पीयर ने कहा—आसुवान।

"सुनते हैं कि वह बाँध पिरामिड की तरह एक आश्चर्य-वस्तु है। उसमें जल निकलने के लिए कितने फाटक हैं—एक सौ कितने?"

"दो सौ सोलह।" इस चर्चा को बन्दकर पीयर बोल उठा—'देखो, वहाँ जो लड़कियाँ बैठी हैं उन्हें जानते हो?' नज़दीक ही के एक टेबल के सामने हलकी पोशाक पहने कुछ लड़कियाँ बैठी थीं। उस ओर ताककर पीयर ने सिर हिलाया।

लांगबेर्ग ने सिर हिलाकर अपनी अनभिज्ञता प्रकट की। बाहर के जिस विशाल जगत् को उसने कभी देखा नहीं था उसके संबंध में जानने के लिए उसका मन उत्सुक हो रहा था। तुम्हारा असल विषय तो मेकनिकल इञ्जीनियरिंग था; परन्तु रेलवे, बाँध इत्यादि बनाने के काम में तुम किस प्रकार सबसे आगे बढ़ गये, यह सोच-

कर प्रायः मुझे विस्मय होता था। हाँ, तुमने एक साल अधिक लेकर रास्ता और रेलवे का बनाना भी सीखा था, लेकिन...।"

'हाय, हाय! यह स्कूल का उज्ज्वल रत्न!'

पीयर ने कहा—एक गिलास शैम्पेन मँगाऊँ? कैसा पसन्द करते हो? मीठा या ऐसा ही?

"क्यों, इनमें क्या कुछ फ़र्क़ है? मैं तो नहीं जानता। लेकिन लखपती होने पर...।"

मैं लखपती नहीं हूँ—कहकर पीयर मुस्कराया और उसने एक वेटर को पास आने का संकेत किया।

"ओ! मैंने तो ऐसा ही सुना है। तुम्हीं ने तो वह नया मोटर पम्प निकाला है न, जिसने और सब पम्पों को बाजार से हटा दिया है? और इसके अलावा—वह एबीसीनिया की रेलवे भी! ख़ैर, कोई भी अगर भाग्यवान् होता है, तो अच्छा ही है! दूसरों को इस पर शिकायत नहीं करनी चाहिए। लेकिन फर्डीनण्ड और क्लाउस ब्रोक का क्या हाल है? वे अब क्या कर रहे हैं?"

"क्लाउस एडफिना में खिदीभ (मिस्र का वाइसराय) के स्टेट की निगरानी कर रहा है। वाष्पीय शक्ति से खेती हो रही है और अपनी ही रेलवे से उन उपजों की रफ़्तनी की जा रही है। क्लाउस ने अपने लिए अच्छी जगह कर ली है। उसकी ज़मींदारी डेनमार्क के राज से भी बड़ी है।"

"अरे बाप रे!"—कहते-कहते लांगबेर्ग अपनी कुर्सी से गिरने के क़रीब हो गया; "और फर्डीनण्ड होल्म—उसकी क्या खबर है?"

"ओ! उसके हाथ में तो और भी बड़े-बड़े काम हैं। लाइबिया के रेगिस्तान में खोज करते हुए उसने पता लगाया कि बहुत-सी जगहों में कुछ गज़ खोदने से ही पानी मिल सकता है। यदि यह बात सही हो, तो फ़सल उत्पन्न करके उस देश को स्वर्ग में परिणत किया जा सकता है; केवल उपयुक्त कलें चाहिए।"

"ओफ़! कैसा आविष्कार है!" लांगबेर्ग की साँस मानो बन्द होना चाहती थी।

फ़ियर्ड की ओर दृष्टि रखकर पीयर कहने लगा--गत वर्ष उसने खिदीभ को पटाया है। अब उन लोगों ने एक साझे की स्टॉक कम्पनी खोली है, उसका मूलधन कई करोड़ है। फर्डीनण्ड उसका चीफ़ इञ्जीनियर है।

"उसका वेतन क्या है? पचास हज़ार क्राउन होगा?"

उसका साथी शायद सुनकर मूर्च्छित हो जायगा, ऐसी कुछ शंका दिल में रखते हुए पीयर ने कहा--उसका सालाना वेतन दो लाख फ़्रांक है। हाँ, फर्डीनण्ड लायक़ आदमी है।

साँस लेने में लांगबेर्ग को कुछ समय लगा। अन्त में तिरछी निगाह से उसकी ओर ताककर उसने पूछा--और मैं समझता हूँ, तुमने और क्राउस ब्रोक ने अपना सब धन उसकी कम्पनी में लगाया है?

बग़ीचे की ओर देखते हुए पीयर ने मुस्कराकर गिलास हाथ में लिये जवाब में केवल यही कहा--तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए यह पान!

दूसरा कहता गया--तुम अमेरिका भी गये थे? शायद नहीं!

"अमेरिका? हाँ, कई साल हुए, जब मैं ब्राउन ब्रादर्स के यहाँ था, उन लोगों ने मुझे एक कल ख़रीदने के लिए भेजा था। इसमें आश्चर्य की बात क्या है?"

"नहीं, आश्चर्य नहीं है। मैं केवल यही सोच रहा हूँ कि तुम वहाँ गये और वे लोग विज्ञान में जो चमत्कार कर रहे हैं उन्हें तुमने देखा है!"

"भाई, तुम नहीं जानते हो कि मैं उन वैज्ञानिक चमत्कारों से कितना तङ्ग आगया हूँ! मैं अब उस देशी पानी की कल को चाहता हूँ, जिससे एक बोरा गेहूँ पीसने में चौबीस घण्टे लगते हैं।"

"क्या, क्या कहते हो तुम ?"—कहकर लांगबेर्ग एकदम कुर्सी से कूद उठा। "हा-हा-हाः, मैं देख रहा हूँ कि तुम पहले के वही पीयर रह गये हो।"

पीयर ने अपने साथी के उद्देश्य से गिलास उठाकर कहा—सच, मैं मज़ाक़ नहीं कर रहा हूँ; ख़ैर, हमारे पहले के दिनों की यादगारी में यह पान करते हैं।

"हाँ, हाँ, धन्यवाद, हज़ारों धन्यवाद उन पुराने दिनों को, जो हमने एक साथ बिताये! आह कैसा स्वादिष्ट! अच्छा, शायद उन असभ्यों के मुल्क में तुमने किसी से प्रेम भी किया है? नहीं? हा-हा-हा!"

"मिस्र को असभ्यों का देश कह रहे हो?"

"क्यों, क्या फ़ेल्ला लोग अपनी औरतों को हल में नहीं जोतते हैं?"

"फ़ेल्ला रात-रात भर घर के बाहर बैठकर नक्षत्रों को देखता रहता है और स्वप्न में लीन हो जाता है; और वियेना का वणिक् थिएटर जाते समय मोटर पर बैठकर भी व्यापारिक पत्र लिखवाता रहता है और थिएटर में बैठे-बैठे टेलिग्राम छोड़ता है। ऐसा शुभ दिन भी आयेगा जब वह अपने प्राइवेट बक्स में बैठा एक कान में टेली-फोन लगाकर दूसरे कान से ऑपेरा सुना करेगा। वैज्ञानिक चमत्कार हमारे लिए यह कर रहे हैं, क्या यह भयानक नहीं है?"

"जिसने नील नदी को बाँधा है, रेगिस्तान के बीच में से रेलवे निकाली है; वह ऐसा कह रहा है?"

उकताकर पीयर ने कन्धा हिलाया और सिगार-केस निकाल-कर लांगबेर्ग को सिगार लेने के लिए कहा। वेटर कॉफ़ी लेकर हाज़िर हुआ।

"मानव-जाति को द्रुत उन्नति के रास्ते पर ले जाने में मदद करना, क्या यह कुछ भी नहीं है?"

"अच्छा, मैं पूछता हूँ कि ये मनुष्य जल्दी-जल्दी चलकर कहाँ जा रहे हैं ?"

"नील नदी के बाँध के कारण मिस्र की उपज दूनी हो गई है, जिससे लाखों मनुष्यों की जीवन-यात्रा सम्भव हुई है, क्या यह कुछ नहीं है ?"

"भाई साहब, क्या आप सोचते हैं कि इस पृथ्वी पर पर्याप्त मूर्ख मौजूद नहीं हैं ? क्या हम लोगों के बीच दुःख, दुर्दशा, असन्तोष और श्रेणीगत घृणा कुछ कम है जो कि उन्हें दूना करने की जरूरत है ?"

"ख़ैर जाने दो, जाने दो यह सब; पर भाई, योरप की संस्कृति के बारे में क्या कहते हो ? अवश्य ही तुम जहाँ पर थे वहाँ अपने को सभ्यता का मिशनरी (प्रचारक) समझते थे ?"

"प्राच्य जगत् में योरपीय सभ्यता के प्रचार करने का साफ़ मतलब यही है कि लन्दन अथवा पेरिस के छः-सात बड़े-बड़े महाजन अफ़्रीका या एशिया के कुछ स्थानों को पसन्द कर बैठे। उन्होंने एक बटन दबाया। मन्त्री, सेनाध्यक्ष, मिशनरी और इंजीनियर सलाम करते हुए उनके सामने हाज़िर हो गये और बोले 'हुज़ूर, क्या आज्ञा है।' कलचर! एक पहिये से दस पहियों का भन्भन्, फिर दस पहियों से सौ पहियों का भन्भन्! गतिवेग बढ़ता गया, प्रतिद्वन्द्विता बढ़ती गई—किस लिए ? 'कलचर' (संस्कृति) के लिए ? नहीं दोस्त, रुपये के लिए! मिशनरी !! मैं कहता हूँ कि जब तक पश्चिमी योरप उसके आधुनिक विज्ञान के सब चमत्कार, उसका ईसाई-धर्म और उसके राष्ट्रीय सुधार आज-कल के नीच मनुष्यों से अच्छे मनुष्य उत्पन्न नहीं कर सकता तब तक हम लोगों को अपना मुँह बन्द करके घर बैठना ही सबसे अच्छा होगा।"—यह कहकर पीयर ने गिलास को ख़ाली कर दिया।

बेचारे लांगबेर्ग के लिए इन बातों का सुनना प्रीतिकर नहीं था

क्योंकि अपने दैनिक कर्मों के बीच यही सोचकर मन को धीरज देता था कि वह भी अपनी क्षुद्र सीमा के अन्दर रहकर दुनिया को सभ्य बनाने के काम में यथाशक्ति मदद दे रहा है।

अन्त में अपनी सिगरेट के धुएँ की ओर ताककर मुस्कराता हुआ वह बोला—मुझे कालेज के एक युवक की बात याद आ रही है। वह प्रोमिथिउस के ऑलिम्पस से नवीन अग्नि के चुरा लाने और उसके द्वारा मानवता को स्वाधीनता दिलाने के महान् कार्य के विषय में बहुत कुछ बातें किया करता था।

पीयर ने हँसकर कहा—हाँ, वह मैं ही था; वस्तुतः मैं केवल फर्डीनण्ड होल्म की बातों को दुहराता था।

"अब क्या तुम उन बातों में विश्वास नहीं रखते हो ?"

"मैं समझता हूँ कि आग और इसपात मनुष्य को द्रुतगति से पशु में परिणत कर रहे हैं। मनुष्य में जितनी दैव भावनायें हैं, मशीनें प्रतिदिन उनका विनाश ही कर रही हैं।"

"परन्तु, भाई, मनुष्य रहेगा धार्मिक, चाहे वह...।"

"जितना चाहो उतना धार्मिक बनो न ! पर क्या तुम ऐसा नहीं सोचते हो कि क्रास पर के एक संन्यासी की पूजा करने से और भी महत्तर कुछ पूजने का समय आ रहा है ? अपने को शारीरिक तकलीफों से बचाकर स्वर्गराज्य में प्रवेश कर पावें, क्या इसी लिए हमेशा ईश्वर का यशः-कीर्तन करना पड़ेगा ? इसी का नाम धर्म है ?"

"नहीं, नहीं, शायद नहीं। परन्तु क्या जाने...।"

"मैं भी नहीं जानता। परन्तु उससे क्या ? आज-कल धार्मिक विश्वास नाम की कोई वस्तु नहीं रह गई है। मशीन हमारी आकांक्षाओं को सदा के लिए नष्ट कर रही है। बड़े-बड़े शहरों के लोगों से पूछो; वे आज-कल ग्रामोफोन में डॉलर प्रिन्सेस बजाकर बड़े दिन की सन्ध्या बिताते हैं।"

लांगबेर्ग कुछ देर तक उसकी ओर आँखें गड़ाये बैठा रहा। पीयर धीरे-धीरे सिगरेट पीने लगा; सुरापान के कारण उसका चेहरा तमतमा गया था। बीच-बीच में उसकी आँखें बन्द हो आती थीं और उसकी भावनायें मानों और कहीं घूम रही थीं।

अन्त में उसके साथी ने प्रश्न किया—अब स्वदेश में क्या करने का विचार है ?

पीयर ने आँखें खोलकर देखा और कहा—करना-धरना ? ओह मालूम नहीं। पहले तो अपने को देखूँ; इसके पश्चात् शायद किसी कुटीरवासी से थोड़ी-सी ज़मीन मिल जायगी और किसी ग्वालिन से शादी कर वहीं पर बस जायँगे। यह कहकर पीयर ने लांगबेर्ग की सौभाग्यकामना करते हुए सुरापान किया।

फियर्ड के ऊपर पीले प्रकाश की झलक की ओर देखकर पीयर ने कहा—कैसा सुन्दर यह स्थान है ! और स्वदेश लौट आने पर कैसी प्रसन्नता होती है !

द्वितीय परिच्छेद

रेल में सफ़र करता हुआ पीयर खिड़की से सिर निकालकर सरकते हुए खेतों, मैदानों और पेड़ों को देख रहा था। वह कहाँ जा रहा है, वह स्वयम् नहीं जानता था। पर मनुष्य लक्ष्य-हीन यात्रा भी क्यों न करे, जहाँ इच्छा हुई चल दिये। अब वह व्यय की परवाह न करके अपने देश भर में भ्रमण कर सकता था। न कोई परेशानी थी, न फ़िक्र; न समय का कड़ा तक़ाज़ा। अब उसके पास जहाँ जी चाहे वहाँ घूमने और जहाँ सौन्दर्य मिले वहाँ उसके उपभोग करने का पर्याप्त अवसर था।

पीयर के मस्तिष्क में खजूरों से भरे रेगिस्तान से लेकर वेनिस की नहरों तक के विदेश के कितने ही चित्र थे। परन्तु यह प्रदेश, यद्यपि उसने पहले इसे कभी नहीं देखा था, उसे मातृभूमि की तरह प्रतीत हो रहा था। उसके निर्वासन के दीर्घ वर्षों में मानो यह स्थान निरन्तर उसे आने के लिए आह्वान करता रहा हो।

अन्त में अकस्मात् बोरिया-बँधना लेकर, स्टेशन का नाम तक बिना पूछे वह निकल पड़ा। आगेवाली सड़क पहाड़ के भीतर से जा रही थी। घाटी ज्यों-ज्यों नीचे उतरती थी, भूरे और नीले रंग के पहाड़, मटमैली और काई के रंगवाली ऊँची-नीची पहाड़ी भूमि अस्तंगामी सूर्य के आलोक में लहराती हुई चली गई थी। इसके बाद विस्तीर्ण हिम-क्षेत्र था जो कि आसमान की छाती पर फेनिल और तरंगपूर्ण समुद्र की तरह फैला था। पीयर को ऐसा लगा मानो उसने इन सब दृश्यों को पहले देखा है।

आह—हा, अब याद आगई; यह तो वही लोफोटेन के समुद्र की तरह ही है। वैसी ही फेनयुक्त चोटीवाली सफ़ेद लहरें, वैसी ही

लम्बी और भारी साँस लेनेवाले समुद्र की स्फीति है; मानो लहराता हुआ समुद्र पर्वत में रूपान्तरित हो गया है। पीयर अर्द्ध-निमीलित नेत्रों से लाठी के सहारे खड़ा हो गया। क्या वह अपने हृदय के अन्दर भी ऐसे ही उच्छ्वसित समुद्र के उत्थान-पतन का अनुभव नहीं कर रहा है? क्या ये ही लहरें गरजती हुई युग-युग से वंशपरम्परा-द्वारा मानव-जाति को बड़ी-बड़ी यात्राओं की ओर नहीं ले जा रही हैं? दैनिक जीवन में क्या यह तरंग अपने चिरन्तन परिचित राग से हम लोगों को नहीं बहा ले जा रही है। हज़ार में एक भी मनुष्य सिर उठाकर यह प्रश्न नहीं करता कि यह यात्रा किस ओर है और क्यों? अभी इस बार वैसी ही एक छोटी-सी लहर उसे ले चली है—कहाँ? क्यों? भविष्य संभवतः इस पर प्रकाश डालेगा। तब तक अनन्त आकाश के नीचे वह पाषाण-समुद्र अपने शाश्वत छन्द से प्रवाहित होता रहेगा।

कपाल पोंछकर पीयर ने अपना मुँह फेर लिया और आगे की ओर चला।

क़रीब आधी रात हो चुकी थी। बर्फ़ से आच्छन्न पहाड़ की ढाल के नीचे एक विशाल पहाड़ी झील के तट पर जाकर वह खड़ा हुआ। वहाँ पर दो 'सेटर' थे और झील के दूसरे तट पर के जंगली द्वीप पर एक छोटा-सा मकान था जो कि शहराती लोगों के ग्रीष्मावास की तरह था। झील के ऊपर उस समय भी सन्ध्या की लालिमा मौजूद थी; उसके ऊपर से द्वीप की ओर जाती हुई एक नाव दिखाई पड़ी जिसमें सफ़ेद पोशाक पहने दो युवतियाँ डाँड़ चलाती हुई गा रही थीं। एक अद्भुत अनुभूति ने उसको आच्छन्न कर दिया। यहीं पर—हाँ, यहीं पर वह ठहरना चाहता है।

'सेटर' की कुटिया में एक बेढब मोटी औरत कमर पर रस्सी लपेटकर सोने के लिए तैयार खड़ी थी। आज की रात यहाँ रहने

की जगह मिल सकती है ? क्यों नहीं ? वह औरत दूसरे कमरे में चली गई। थोड़ी ही देर में एक छोटी-सी कोठरी में पहाड़ी चटाई और कम्बलयुक्त बिछौने पर पीयर सो गया। ताज़े धुले हुए फ़र्श पर बिछी हुई 'जूनिपर' की पत्तियों से और कोठरी के चारों ओर के ताकों पर क़तारों में रखे हुए पनीर से बहुत अच्छी और ताज़ी महक आने लगी। हाँ, वह कितने स्थानों में कितनी तरह से सोया है; लोफ़ोटेन के समुद्र में नाव पर, ऊँट की डोलती हुई पीठ पर, चन्द्रालोकित मरुभूमि में खेमे के अन्दर, आरब्य उपन्यास के प्रासाद-कक्षों में, जहाँ बौने लोग उसे गर्मी से बचाने के लिए ताड़ के पंखों से हवा करते थे और उसे 'पाशा' कहकर पुकारते थे; परंतु अन्त में यहाँ पर उसने एक स्थान पाया है जहाँ पर ठहरना उसे अच्छा लग रहा है। बाहर उज्ज्वल ग्रीष्म-रात्रि में जो छोटी नदी कलकल शब्द करती हुई जा रही थी, आँख बन्द कर उसकी कलध्वनि सुनते हुए पीयर सो गया।

दूसरे दिन पीयर दिन चढ़े के बाद मोटी औरत के क़हवा लाने के शब्द से जाग उठा। इसके पश्चात् वह पहाड़ी झील के हरे-नीले पानी में कूदकर तैरा और लौटकर 'टाउट' मछली, गरम-गरम रोटी और मक्खन का भोजन किया।

बुढ़िया ने कहा—मैं जैसा खाना पकाती हूँ, अगर वह पसन्द हो तो और कुछ दिन ठहर जाइए। यहाँ पर बिस्तर खाली है ही।

तृतीय परिच्छेद

पीयर ठहर गया। उसका काम बना मछलियाँ फँसाना। यद्यपि उसे इसमें सफलता कम मिलती थी; पर समय काटने और दिल बहलाने को बहाना तो था ही! समय आराम से बीतता था। पहाड़ियों पर ग्रीष्म भी सुहावना लगता था। पीयर को पता चला कि उस द्वीप में रिंगेवी इउथोग नाम के एक संभ्रान्त व्यक्ति अपनी लड़की और स्त्री-समेत रहते हैं। पर इससे उसे क्या ?

वह प्रायः नौकाविहार किया करता था। वह नाव में लेट रहता और आँखें बन्द किये चुरट में से धुआँ निकालता रहता। मस्तिष्क में भाँति-भाँति के स्वप्न आते-जाते रहते थे—एक सफ़ेद डोंगी है! उसमें एक तरुणी बैठी है! नाव संध्या के कारण लाल रंग के जल की छाती पर धीरे-धीरे तैर रही है! एक द्वीप है! पीयर की गुप्त भेंट इसी द्वीप में उससे होती है! किसी को इसकी ख़बर नहीं! क्या ऐसा भी उसके जीवन में हो सकता है ? शायद नहीं !

पर ऐसा भी एक दिन आया। वह चहलक़दमी के लिए निकला। कम्पास के सहारे दिशायें मालूम करता हुआ और लौटने के लिए मार्ग के चिह्नों को अच्छी तरह पहचानता हुआ चला जा रहा था।

चलते-चलते पीयर लाल-लाल झाड़ियों से ढकी हुई एक ऊँची ज़मीन पर आ पहुँचा। सामने कुछ दिखाई दिया—धुआँ है क्या ? पीयर उस ओर चला। आख़िरी टीले पर खड़े होकर देखा। आग ठीक उसके नीचे थी। वह वहाँ पहुँचा। दो लड़कियाँ चौंककर खड़ी हो गईं। आग के ऊपर एक चमकती हुई क़हवे की

केटली और पास ही काई से ढकी हुई ज़मीन पर बिछे हुए काग़ज़ के ऊपर रोटी, मक्खन और सैंडविच थी।

पीयर विस्मित होकर रुक गया। दो युवतियों ने पल भर के लिए उसकी ओर देखा, पीयर ने भी उनकी ओर देखा; तीनों के चेहरों पर अनिश्चित हँसी दिखाई दी।

अन्त में लाचार होकर पीयर ने टोपी उतारकर अभिवादन किया और रूस्टासेटर का मार्ग पूछा। लड़कियों ने इसका उत्तर कुछ विलम्ब से दिया। इसके बाद उन्होंने पीयर से समय पूछा। पीयर ने ठीक-ठीक समय बतलाया और इसलिए कि वे स्वयम् ही देख सकें, अपनी घड़ी भी उनके सामने कर दी। इस प्रकार करने में और भी कुछ समय लगा। इतने में उन्होंने परस्पर एक दूसरे को अच्छी तरह देखा। साथ ही यह भी देखा कि उसी समय उनके अलग हो जाने की विशेष आवश्यकता नहीं है।

एक लड़की पतली-सी थी, रंग कुछ श्यामला, चेहरा बेज़ावी और बाल गहरे भूरे थे। दोनों भौंहें नाक के ऊपर आकर मिल गई थीं, जो देखने में बड़ी सुन्दर लगती थीं। वह नीले रङ्ग के 'सर्ज' की पोशाक इस प्रकार पहने थी कि टखने खुले थे। दूसरी लड़की उतनी लम्बी न थी; रङ्ग गोरा था; यद्यपि सर्वदा हँसती रहती थी, पर चेहरा गम्भीर था। उसने अकस्मात् पूछा—क्या आपके पास चाक़ू है?

हाँ, क्यों नहीं?—पीयर जा ही रहा था। थोड़ी देर रुक सकने का यह अवसर उसने सहर्ष ग्रहण किया।

श्यामा लड़की ने कहा—हम लोगों के साथ 'सार्डिन' मछली का एक टिन है, लेकिन उसे खोलने के लिए कुछ नहीं है।

पीयर ने कहा—देखूँ, खोल सकता हूँ कि नहीं।—दैवयोग से पीयर का हाथ ज़रा-सा कट गया। दोनों लड़कियाँ कटे हुए स्थान को बाँध देने के लिए प्रतिस्पर्धा-सी करने लगीं। परिणाम यह

हुआ कि पीयर को उनकी क़हवा की पार्टी का निमन्त्रण प्राप्त हो गया।

श्यामा लड़की ने कहा—मेरा नाम मार्लें इउथोग है।

"अच्छा, तो झील के द्वीप के ऊपर का मकान आप ही के पिता जी का है ?"

गोरी लड़की ने कहा—मेरा नाम केवल मोर्क—थीयामोर्क है। मेरे पिता वकील हैं। झील से कुछ हटकर हम लोगों की कुटी है।

पीयर भी अपना परिचय देने ही जा रहा था कि श्यामा लड़की ने रोककर कहा—आपको हम लोग जानते हैं। प्रायः आपको झील में नौविहार करते देखते हैं। इसी लिए खोज भी थोड़ी-सी लेनी पड़ी। हमारे पास एक अच्छी दूरबीन है . ।

उसकी सखी ने झिड़कते हुए कहा—क्या कर रही हो, मार्लें !

पर श्यामा लड़की कहती गई—कल हम लोगों ने एक नौकरानी को सब बातों का पता लगाने के लिए भेजा था।

"मार्लें, यह सब क्या बक रही हो ?"

एक छोटा-मोटा प्रीति-भोज हो गया। अब सूर्य पश्चिम के पहाड़ के निकट पहुँच चुका था और सन्ध्या हो रही थी। सब सामान बाँधा गया, पीयर की पीठ पर 'बेरी' के फलों का बोझ लादा गया, और उसके हाथ में एक टिन की बालटी दी गई। मार्लें ने कहा—अरे, और भी कुछ दे दे, मेहनत करने से आपको लाभ होगा।

"मार्लें, तू बड़ी ख़राब है।"

यह लीजिए—कहकर मार्लें ने पीयर के दूसरे हाथ में एक टोकरी का हैंडिल भी थमा दिया।

'सेटर' के पास से वे पानी के पास उतर गये और पीयर ने नाव से उन लोगों को पहुँचा देने का प्रस्ताव किया। नाव से वे

पार होने लगे। सारा समय बात-चीत और हँसी-मज़ाक़ में इस प्रकार बीत गया मानो वे कई वर्षों से एक दूसरे से परिचित थे।

मकान के ठीक नीचे जाकर नाव लगी। सफ़ेद डाढ़ी और दोहरे शरीरवाले एक व्यक्ति स्ट्रॉ-हैट पहने उनके पास आये। पिता जी, आप लौट आये!—कहकर मार्लें तट पर कूद पड़ी और अपने पिता के गले लग गई और उनके कानों में उसने कुछ कहा। हैट उतारकर पीयर की ओर बढ़कर नम्र स्वर में वृद्ध ने कहा—लड़कियों को ले आने के लिए मैं आपका बड़ा ही अनुगृहीत हुआ हूँ। मार्लें ने परिचय कराया—आप हेर होल्स, मिस्र के इंजीनियर हैं और आप मेरे पिता हैं।

इउथोग ने कहा—सुना है, हम पड़ोसी हैं। अभी चाय बन रही है, आपकी विशेष हानि न हो तो, आशा है, आप हम लोगों का आग्रह स्वीकार करेंगे।

कुटी के बाहर चश्मा लगाये एक महिला खड़ी थीं। बाल सफ़ेद थे और चेहरा पीला। मोटा ऊनी दुशाला लपेटने पर भी उनको जाड़ा मालूम होता था। 'आइए, आइए'—कहकर उन्होंने स्वागत किया; पीयर को ऐसा प्रतीत हुआ कि उनका स्वर काँप रहा है।

दो छोटे और नीचे कमरे थे, एक में एक खुला हुआ अग्नि-कुण्ड था और वहीं पर एक टेबुल भी तैयार था। परन्तु घर पर आते ही मार्लें ने सारा भार अपने ऊपर ले लिया और दौड़-धूप करने लगी। रसोईघर से मछली पकाने का शब्द आने लगा; थोड़ी देर में एक थाली में मछली लाकर मार्लें ने कहा—मिस्त्री जी, आप हम लोगों के लिए अरबी सलाद बना सकेंगे?

पीयर ने प्रसन्न होकर कहा—देखिए, शायद बना सकूँ।

"नमक, मिर्च, सिरका और तेल उस टेबल पर रक्खा है। ये ही मसाले हमारे पास हैं। परन्तु बिलकुल अरबी सलाद होनी

चाहिए। यह कहकर वह निकल गई और पीयर सलाद बनाने में लग गया।

फ़ू इउथोग ने अपना पीला चेहरा पीयर की ओर मोड़कर चश्मे के अन्दर से ताकते हुए कहा—आशा है, आप लड़की को माफ़ करेंगे; वह वास्तव में इतनी उद्धत नहीं है जैसी इस समय दिखाई दे रही है।

हेर इउथोग अपने कमरे में टहलते हुए पीयर के साथ बातचीत करने लगे। उन्होंने मिस्र के बारे में बहुत-से प्रश्न किये। माहदी, जेनरल गॉर्डन, खार्टूम, खिदीभ और सुलतान के बीच कशमकश के बारे में वे कुछ जानते थे। यह स्पष्ट मालूम होता था कि वे अखबारों के एक उत्साही पाठक हैं। पीयर ने समझ लिया कि वे उदार-दल के हैं और अपने दल के गौरवशाली व्यक्ति हैं। उनको देखकर ऐसा मालूम होता था मानो उनकी आँखों की पलकों के नीचे एक प्रचंड आग प्रच्छन्न रूप में जल रही है। पीयर ने सोचा—ऐसे व्यक्ति के साथ विरोध होना अच्छी बात नहीं है।

सब भोजन करने बैठे। पीयर ने देखा कि लड़की की हँसी-मज़ाक़ और क़िस्सों के साथ-साथ फ़ू इउथोग के चेहरे का पीलापन कम होने लगा और उनका उद्वेग भी कम होता गया। अन्ततः पीले गालों पर थोड़ी-सी रक्तिम आभा भी लौट आई। ऐनक से ढकी आँखें लड़की की आँखों से रोशनी लेकर उज्ज्वल हो उठीं। परन्तु उनके पति ने कुछ नहीं देखा; वे पूरे समय तक माहदी, खिदीभ और सुलतान के बारे में बातचीत करते रहे।

अनेक वर्षों के बाद नारवे के परिवार में भोजन करने का सुयोग पीयर को प्राप्त हुआ था। उसे यह बहुत अच्छा लगा! विस्मय के साथ वह अपने मन में सोचने लगा—क्या मेरा भी कभी ऐसा एक घर होगा?

भोजन के बाद एक मैंडोलीन लाई गई। सब लोग अँगीठी

को घेरकर बैठे और कुछ देर तक संगीत हुआ। अन्त में मार्ले ने उठकर कहा—मा, अब तुम्हारा सोने का समय हो गया। नम्र स्वर में उत्तर मिला—हाँ, बेटी। फ़ू इउथोग ने सबको उठकर अभिवादन किया और मार्ले उनको सोने के कमरे में लिवा ले गई।

जब पीयर बिदाई लेने के लिए उठा तो मार्ले फिर आई और बोली—क्या आप थीमा को घर पहुँचाये बिना ही चले जायँगे ?

सखी ने बाधा देकर कहा—देख मार्ले......। परन्तु जब वे दोनों अपने स्थानों पर बैठकर नाव चलाने लगे तो मार्ले भी दौड़ती हुई आई और बोली कि मैं भी चलूँगी।

थीमा को तट पर पिता के पास पहुँचाकर, आधे घण्टे के बाद सोनहरे प्रकाश और छाया में, नीले रंग की झील के बीच से उस निस्तब्ध रात्रि के समय, पीयर और मार्ले लौटने लगे। नाव के पिछले भाग में झुककर मार्ले चुपचाप एक डाली को पानी में डुबोकर उससे जल के ऊपर एक रेखा खींचती हुई चली। थोड़ी देर बाद खेना बन्द कर पीयर ने कहा—कैसा सुन्दर दृश्य है! सिर उठाकर मार्ले ने चारों ओर देखा और कहा—हाँ। पीयर को मार्ले के कण्ठस्वर में कुछ नवीनता प्रतीत हुई।

आधी रात हो चुकी थी। फैले हुए कोमल और अरुण आलोक में पहाड़, जंगल, सेटर—सभी निर्जीव की भाँति पड़े हुए थे। झील की मछलियाँ शान्त थीं। झाड़ियों में कभी-कभी पक्षियों की आवाज़ सुनाई पड़ती थी।

तरुणी ने अकस्मात् पूछा—यह सोचकर मुझे आश्चर्य होता है कि छुट्टी बिताने के लिए आप यहीं पर क्यों आये ?

"फ्रोकेन इउथोग, मैं सब कुछ दैव पर छोड़ देता हूँ। यह भी ऐसे ही हो गया। यहाँ मैं जहाँ कहीं जाता हूँ, अपना घर-सा लगता है। अपने स्वदेश में आकर मुझे बड़ा अच्छा मालूम हो रहा है।"

"क्या आपको ज्ञात है कि आपके आने के पहले ही मा ने आपको स्वप्न में देखा था ?"

"मुझको ? उन्होंने मेरे विषय में क्या देखा था ?"

लड़की के चेहरे पर अकस्मात् लाली दौड़ गई। सिर हिलाकर उसने कहा—मैं आपसे क्या फ़जूल की बातें कर रही हूँ! परन्तु इसी लिए आपके आने पर हम लोगों ने आपके बारे में इतना जानने की कोशिश की थी। मुझे ऐसा मालूम हो रहा है कि मानो हम दोनों परस्पर एक दूसरे को बहुत दिनों से जानते हैं।

"फ्रोकेन इउथोग, ऐसा मालूम होता है कि आप सदा ही बहुत ख़ुश रहती हैं।"

"मैं ? आपका ऐसा ख़्याल क्यों है ?...ओह हाँ, समझ गई। देखिए, जब बहुत ज़रूरत होती है तो मनुष्य के लिए बहुत कुछ संभव हो जाता है।"

"प्रसन्नता भी ?"

तरुणी ने मुँह फेरकर तट की ओर देखते हुए कहा—शायद किसी दिन, अगर हम परस्पर सुपरिचित बन सके तो, इस विषय में मैं आपको और भी बतलाऊँगी।

डाँड़ पर झुककर पीयर नाव खेने लगा। रात्रि की निस्तब्धता ने उन दोनों को और भी निकट कर दिया और वे नीरव हो गये। केवल बीच-बीच में वे परस्पर एक दूसरे की ओर देखकर मुस्करा लेते थे।

पीयर ने सोचा—कैसे इस एक अद्भुत जीव के साथ मेरी भेंट हुई! तरुणी की उम्र इक्कीस-बाईस होगी। सिर झुकाकर चुपचाप बैठी थी। उस कोमल प्रकाश में उसके चेहरे पर एक आश्चर्यजनक स्वप्नमय ज्योति दिखाई देने लगी। परन्तु अकस्मात् उसकी दृष्टि लौटकर पीयर के ऊपर स्थिर हुई और उसके चेहरे

पर मुसकराहट दिखाई दी। पीयर ने देखा कि उसका मुँह बड़ा-सा है। ओठ भरे हुए और लाल हैं।

लड़की ने कहा – आपकी तरह मैं भी सारी दुनिया देखना चाहती हूँ।

पीयर ने पूछा—क्या आप कभी बाहर नहीं गई हैं ?

"एक बार जाड़े का समय बर्लिन में बिताया था और कुछ महीने दक्षिण जर्मनी में। वायोलिन बजाना सीख रही थी; मेरा ख़्याल था कि विदेश जाकर वहीं अच्छी तरह सीखूँगी और उसी से कुछ करूँगी। पर..."

"अच्छा तो है, कर क्यों नहीं रही हैं ?"

थोड़ी देर चुप रहकर अन्त में उसने कहा—एक दिन तो अवश्य ही आपको मालूम हो जायगा, इसलिए अभी कह देना अच्छा है। मा का दिमाग़ ख़राब हो गया है।

"प्यारी फ़्रोकेन..."

"मा जब घर पर रहती हैं तो उन्हें कुछ प्रकृतिस्थ रखने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि मैं बहुत ख़ुश रहूँ।"

पीयर की इच्छा हुई कि उठकर उसके पास जावे और उसके सिर को दोनों हाथों से ढक ले। परन्तु विषादपूर्ण हँसी के साथ लड़की ने उसकी ओर ताका और बहुत देर तक वे एक दूसरे की ओर देखते ही रह गये और लड़की अपनी दृष्टि को हटा लेना भूल गई। अन्त में उसने कहा—मुझे अभी उतरना होगा।

"इतनी जल्दी ! अभी तो हम लोगों ने बातचीत शुरू की है !"

उसने फिर कहा—मुझे अभी तट पर जाना होगा। कण्ठ-स्वर नम्र होने पर भी आग्रह-पूर्ण था।

अन्त में पीयर अकेला नाव खेकर 'सेंटर' को चला। नाव ले जाते समय उसने देखा कि लड़की धीरे-धीरे कुटीर की ओर

बढ़ती जा रही है। दरवाज़े के पास पहुँचकर उसने पहली बार मुँह फेरा और पीयर की ओर देखकर हाथ हिलाने लगी। उसके बाद पल भर के लिए उसे देख, दरवाज़ा खोलकर वह अदृश्य हो गई। फिर दरवाज़ा खुलेगा, इसी आशा से पीयर और थोड़ी देर तक उसकी ओर देखता रहा, परन्तु फिर किसी प्राणी का चिह्न दिखाई न दिया।

संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं है जिसकी तुलना प्रेम के पहले दिन के साथ की जा सके। पीयर मन में सोचने लगा—मेरी सारी विद्या, सारा भ्रमण, सारा कर्म और सारे स्वप्न—ईंधन भर था जिसे मैंने जीवन भर इकट्ठा किया। आज चिनगारी आई जिसके स्पर्श से सब जल उठा। पृथ्वी और आकाश में उसकी लाल आभा फैल गई। इसी लिए तो हिमार्त हाथों को बढ़ाकर उन्हें गरम करते हुए आनन्द के मारे मैं काँप रहा हूँ और मेरे मन में ऐसा हो रहा है कि पृथ्वी पर एक अभिनव आनन्द का आविर्भाव हुआ है।

जो अब तक मेरी समझ में नहीं आता था। मेरे आभ्यन्तर में वर्त्तमान शाश्वत ज्योति-शिखा के साथ अनन्त की महाशक्ति का और अनन्त आकाश का जो सम्बन्ध है, वह आज अकस्मात् इतना स्पष्ट हो उठा है कि रहस्य का अन्तस्तल तक देखकर मैं आनन्द से काँप रहा हूँ।

मुझे केवल उसका हाथ पकड़कर खड़ा होना और जीवन-मृत्यु की शक्तियों से कहना है कि—हम दो हैं, वह और मैं! बस, मेरा स्तव-संगीत छोटी लुइसे के वायोलिन के सुर के साथ सम्मिलित होकर ऊपर की ओर उड़ता जायगा—किसी गिरजा की छत की ओर नहीं, एकदम असीम आकाश की ओर। हे महाशक्तिमान्, इतने दिनों के बाद मैंने समझा है। मैं तुम्हारे बारे में यह धारणा कैसे कर सकता था कि तुम ऊपर बैठकर 'पाप' और

'कृपा' का खेल कर रहे हो! परन्तु अब मैं तुमको देख रहा हूँ; तुम तो ख़ून के प्यासे जिहोवा नहीं हो; तुम तरुण हो, तुम्हारे केश सुनहरे हैं, तुम्हारा स्वरूप ज्योतिर्मय है! हम दो तुम्हारी पूजा करते हैं—प्रार्थना की आर्तध्वनि से नहीं। एक ऐसे महान् स्तव-संगीत से तुम्हें हम पूज रहे हैं जिसमें समग्र विश्व सम्मिलित हुआ है। हमारी सारी शक्ति, सारा ज्ञान और सब स्वप्न उसमें आकर सम्मिलित हुए हैं; इस विशाल सम्मिलित संगीत में हर एक का अपना-अपना वाद्य है, अपना-अपना सुर है। यह हमारा प्रेम का प्रथम दिवस है, यहाँ पर कृपा, संशय, विश्वास अथवा सहायता की कोई आवश्यकता नहीं; हमारी हृदय-तंत्रियों से केवल एक संगीत-ध्वनि स्वर्ग की ओर बहती जा रही है।

उसका रोम-रोम प्रेम की पावन स्वर्गङ्गा में अभिषिक्त होने लगा।

चतुर्थ परिच्छेद

रिंगेवी एक बड़ी झील के तट पर बसा है। यह उन शहरों में से एक है जिनमें अब से पचास साल पहले झरनों के किनारे केवल एक लकड़ी चीरने की मिल थी और एक आटे की; और जो गत पचास वर्षों के अन्दर ही बढ़कर व्यापारिक शहर बन गये हैं। अब यहाँ नदी के किनारे-किनारे बहुत-से नये-नये कारखाने फैले हुए हैं। जन-संख्या लगभग चार हज़ार है। एक सुन्दर गिरजा है, एक बड़ी पाठशाला है और चारों ओर मज़दूरों के अगणित पीले-पीले मकान हर दिशा में बिखरे हुए हैं।

लोरेंज इउथोग का पीला लम्बा लकड़ी का मकान बाज़ार के चौक के ठीक सामने था। लोहे की दुकान और आफ़िस नीचे थे और ऊपर के मंज़िलों में परिवार के रहने का स्थान था। यद्यपि उनके पास एक लकड़ी चीरने की मिल, एक मशीन की दूकान, एक आटे की कल और शहर से कुछ दूर पर एक मकान था, तथापि उन्हें वास्तव में धनी नहीं कहा जा सकता था। फिर भी इनमें कुछ ऐसी बात थी जिससे वे बड़े आदमी प्रतीत होते थे। पादरी-पुरोहितों से उन्हें घृणा थी; वे गम्भीर दार्शनिक ग्रंथों का अनुशीलन करते थे और परिवार के लोगों को गिरजा जाने से मना करते थे। वियोर्नसन स्वयम् उनसे मिलने आये थे। वे जिसके पक्ष में रहते थे उसके लिए अच्छे थे, पर जिसके विपक्ष में रहते थे उसके लिए भयंकर भी। उनके विरोधी का कुशल शहर से चले जाने में ही था। क्योंकि शहर में जो कुछ होता था सभी में इनका हाथ रहता था; इस प्रकार ये सारे शहर के मालिक-

से थे। रिंगेवी के सब लोग इनका आदर करते थे; परन्तु वे और भी महत्त्वाकांक्षी थे।

अब इस दामाद, बृहत् जगत् से आये हुए इस अपरिचित व्यक्ति को पाकर वे अच्छे प्रकार उसका निरीक्षण कर रहे थे और अपने मन में उससे प्रश्न कर रहे थे—असल में तुम कौन हो ? तुमने क्या-क्या देखा है ? क्या पढ़ा है ? तुम प्रगतिशील हो अथवा प्रतिगामी ? मैंने यहाँ पर जो कुछ किया है तुम उसका आदर करते हो, या मुँह छिपाकर उस पर हँस रहे हो और मुझे अन्धों में काना राजा समझ रहे हो ?

रोज़ सवेरे जब होटल में पीयर की नींद खुलती वह अपनी आँखें मलता था। बिछौने के पास ही टेबुल के ऊपर एक तरुणी का फोटोग्राफ है। क्या पीयर, तुमने सचमुच एक संगिनी पाई है ? दुनिया में एक ऐसा व्यक्ति है जो तुम्हारे लिए चिन्तित होगा ? सर्दी लगने पर लोग अब तुम्हें देखने आयेंगे, चिन्तित हो तुम्हारे कुशल-समाचार पूछेंगे। तुम्हारी तक़दीर में यह भी था !

वह रोज़ इउथोग के यहाँ भोजन करता था; उसके भोजन-पात्र के पास हमेशा फूल रक्खे जाते थे। वहाँ प्रायः छोटी-छोटी अप्रत्याशित वस्तुएँ भी रहती थीं—कभी तो चाँदी का काँटा या चम्मच, कभी उसका नाम लिखा हुआ नैपकिन। मानो नया घोंसला बनाने के लिए ये तृण एकत्र किये जा रहे थे। चश्मा पहने हुए पीली महिला दयापूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखकर कहती थी—तुम मेरी लड़की को मुझसे ले जा रहे हो; ख़ैर, मैं तुम्हें क्षमा करती हूँ।

एक दिन होटल में बैठा वह पढ़ रहा था; मार्तें वहाँ पर आई। ज़रा घूमने चलोगे ?—उसने पूछा।

"अवश्य, पर आज कहाँ का प्रोग्राम है ?"

"त्रुसेथ में मेरी बुआ मारिट रहती है। उसको हम लोग

चतुर्थ परिच्छेद

रिंगेवी एक बड़ी झील के तट पर बसा है। यह उन शहरों में से एक है जिनमें अब से पचास साल पहले झरनों के किनारे केवल एक लकड़ी चीरने की मिल थी, और एक आटे की; और जो गत पचास वर्षों के अन्दर ही बढ़कर व्यापारिक शहर बन गये हैं। अब यहाँ नदी के किनारे-किनारे बहुत-से नये-नये कारखाने फैले हुए हैं। जन-संख्या लगभग चार हज़ार है। एक सुन्दर गिरजा है, एक बड़ी पाठशाला है और चारों ओर मज़दूरों के अगणित पीले-पीले मकान हर दिशा में बिखरे हुए हैं।

लोरेंज इउथोग का पीला लम्बा लकड़ी का मकान बाज़ार के चौक के ठीक सामने था। लोहे की दुकान और आफ़िस नीचे थे और ऊपर के मंज़िलों में परिवार के रहने का स्थान था। यद्यपि उनके पास एक लकड़ी चीरने की मिल, एक मशीन की दूकान, एक आटे की कल और शहर से कुछ दूर पर एक मकान था, तथापि उन्हें वास्तव में धनी नहीं कहा जा सकता था। फिर भी इनमें कुछ ऐसी बात थी जिससे वे बड़े आदमी प्रतीत होते थे। पादरी-पुरोहितों से उन्हें घृणा थी; वे गम्भीर दार्शनिक ग्रंथों का अनुशीलन करते थे और परिवार के लोगों को गिरजा जाने से मना करते थे। वियोर्नसन स्वयम् उनसे मिलने आये थे। वे जिसके पक्ष में रहते थे उसके लिए अच्छे थे, पर जिसके विपक्ष में रहते थे उसके लिए भयंकर भी। उनके विरोधी का कुशल शहर से चले जाने में ही था। क्योंकि शहर में जो कुछ होता था सभी में इनका हाथ रहता था; इस प्रकार ये सारे शहर के मालिक-

से थे। रिंगेवी के सब लोग इनका आदर करते थे; परन्तु वे और भी महत्त्वाकांक्षी थे।

अब इस दामाद, बृहत् जगत् से आये हुए इस अपरिचित व्यक्ति को पाकर वे अच्छे प्रकार उसका निरीक्षण कर रहे थे और अपने मन में उससे प्रश्न कर रहे थे—असल में तुम कौन हो? तुमने क्या-क्या देखा है? क्या पढ़ा है? तुम प्रगतिशील हो अथवा प्रतिगामी? मैंने यहाँ पर जो कुछ किया है तुम उसका आदर करते हो, या मुँह छिपाकर उस पर हँस रहे हो और मुझे अन्धों में काना राजा समझ रहे हो?

रोज़ सवेरे जब होटल में पीयर की नींद खुलती वह अपनी आँखें मलता था। बिछौने के पास ही टेबुल के ऊपर एक तरुणी का फ़ोटोग्राफ़ है। क्या पीयर, तुमने सचमुच एक संगिनी पाई है? दुनिया में एक ऐसा व्यक्ति है जो तुम्हारे लिए चिन्तित होगा? सर्दी लगने पर लोग अब तुम्हें देखने आयेंगे, चिन्तित हो तुम्हारे कुशल-समाचार पूछेंगे। तुम्हारी तक़दीर में यह भी था!

वह रोज़ इउथोग के यहाँ भोजन करता था; उसके भोजन-पात्र के पास हमेशा फूल रक्खे जाते थे। वहाँ प्रायः छोटी-छोटी अप्रत्याशित वस्तुएँ भी रहती थीं—कभी तो चाँदी का काँटा या चम्मच, कभी उसका नाम लिखा हुआ नैपकिन। मानो नया घोंसला बनाने के लिए ये तृण एकत्र किये जा रहे थे। चश्मा पहने हुए पीली महिला दयापूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखकर कहती थी—तुम मेरी लड़की को मुझसे ले जा रहे हो; .ख़ैर, मैं तुम्हें क्षमा करती हूँ।

एक दिन होटल में बैठा वह पढ़ रहा था; मार्लें वहाँ पर आई। ज़रा घूमने चलोगे?—उसने पूछा।

"अवश्य, पर आज कहाँ का प्रोग्राम है?"

"ब्रुसेथ में मेरी बुआ मारिट रहती है। उसको हम लोग

अभी देखने नहीं गये। हम लोगों को जाना चाहिए, समझे ? आज तुम्हें वहाँ ले चलूँगी।"

प्रथानुसार इन नये कुटुम्बों के साथ भेंट-मुलाक़ात करने में पीयर को मज़ा आता था। मानो वह चाचियों और मौसियों को बटोर रहा है। आज फिर एक नई बुआ मिलेंगी। अच्छा तो है, इसमें क्या आपत्ति है ?

शीघ्र ही वे परस्पर बाहुबद्ध होकर ग्राम्य रास्ते से ब्रुसेथ में बुआ के यहाँ जाने लगे। सितम्बर का महीना था। वनाच्छन्न पर्वत ने पीला रंग धारण किया था और फ़सल के खेतों में सोनहरा रंग फैला हुआ था। बेरीफल गहरे लाल हो उठे थे। लेकिन हवा में गरमी का आभास था।

हाँफते-हाँफते रुककर मार्ले ने कहा--ओफ़, तुम बहुत तेज़ चलते हो !

एक फाटक के पास आकर रास्ते के किनारे घास के ऊपर वे बैठ गये। मार्ले ने अकस्मात् पूछा---मा की यह हालत कैसे हुई, जानते हो ?

"नहीं, मैं पूछना ही चाहता था।"

"मेरे नाना पादरी थे। इसके बाद पिता जी ने जब मा को गिरजा में जाने से मना कर दिया, तो मा ने उनकी बात मान ली। परन्तु इसके बाद से फिर मा को नींद नहीं आई। उनको ऐसा मालूम होने लगा कि उन्होंने अपनी आत्मा को बेच डाला है।"

"इस पर तुम्हारे पिता जी क्या कहते थे ?"

"वे कहते थे कि हिस्टिरिया की बीमारी है। पर हिस्टिरिया हो चाहे न हो, फिर मा को नींद नहीं आई। अन्त में मा को पागलखाने में रखना पड़ा।"

मार्लें के हाथ को अपने हाथ में लेकर पीयर ने कहा—हाय बेचारी !

"इसके बाद जब मा वहाँ से लौट आईं तो उनमें ऐसा परिवर्तन हो गया था कि उन्हें पहचानना मुश्किल था। पिता जी अब कुछ नरम हुए, उनके लिए यह आशातीत बात थी। उन्होंने कहा—अच्छा, अगर तुम चाहती हो, तो अवश्य ही गिरजे जाओ, परन्तु यदि मैं तुम्हारे साथ न जा सकूँ तो बुरा न मानना। तब एक दिन रविवार को उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और हम दोनों एक साथ चले। परन्तु गिरजे के दरवाज़े पर पहुँचकर जब भीतर ऑर्गन बजता हुआ सुनाई दिया तो मा मुँह फेरकर खड़ी हो गईं और बोलीं—नहीं, अब समय नहीं है, मार्लें, बहुत देर हो गई है। इसके बाद मा फिर वहाँ कभी नहीं गईं।

"उसी समय से वे ऐसी हैं ?"

मार्लें ने लम्बी साँस ली। सबसे बुरी बात तो यह है कि हमेशा मा को ऐसा मालूम होता है कि नाना प्रकार के संकटों ने उन्हें घेर रक्खा है। वे कहती हैं कि इन्हें भगाने का एकमात्र उपाय हँसना है। परन्तु वे हँस नहीं सकतीं। इसी लिए मुझे हँसना पड़ता है। परन्तु मैं जब उनको छोड़ जाऊँगी तो—...ओह इसकी कल्पना भी मैं नहीं कर सकती।

मार्लें ने पीयर के कन्धे में अपना मुँह छिपा लिया और पीयर उसके बालों पर हाथ फेरने लगा।

मार्लें ने मुस्कराकर पीयर की ओर देखा और बोली—अच्छा, बोलो तो कौन ठीक है—मा या पिता जी ?

"क्या तुम इस समस्या को सुलझाने की कोशिश कर रही हो ?"

"हाँ, परन्तु कोई आशा नहीं है—किसी प्रकार सिद्धान्त का

निश्चय बिलकुल असम्भव मालूम होता है। तुम्हारी राय क्या है ?"

हेमन्त ऋतु के सुनहले दिनों में वे एकान्त में बैठे थे। मार्ले का सिर पीयर के कन्धे पर था। यहाँ पर लम्बी-चौड़ी बातों से मार्लें को धोखा देने की ज़रूरत नहीं थी।

"प्यारी मार्लें, वास्तव में मैं तुमसे अधिक कुछ नहीं जानता। एक समय था जब मैं ऐसा सोचता था कि ईश्वर एक हाथ में दंड और दूसरे हाथ चीनी की रोटी लिये खड़े हैं। दण्ड और पुरस्कार का निर्णय कर रहे हैं। इसके बाद मैंने उन भगवान् को दूर फेंक दिया; क्योंकि मुझको ऐसा मालूम हुआ कि वे अत्यन्त अन्यायी हैं। इसके पश्चात् वे ऊपर के सौर जगत् में और यहाँ धरणी पर के अणु-परमाणुओं में अदृश्य हो गये। इन सबके सामने मेरा जीवन और मेरा स्वप्न क्या था ? मेरे सुख-दुःख का क्या मूल्य था ? मैं कहाँ जा रहा था ? मेरे अन्दर प्रति-मुहूर्त मानों कोई कहने लगा, वे हैं ! पर कहाँ ? जो कुछ हम जानते हैं, उन सबको अतिक्रम करते हुए, उन सबके अन्तराल में कहीं वे हैं—वहीं पर वे हैं ! इसलिए मैंने संकल्प किया कि मैं ज्ञान प्राप्त करूँगा, जानूँगा और भी अधिक जानूँगा—पर मुझे क्या ज्ञान मिला ? मान लो कि स्टीम-हथौड़े से एक दिन मेरा सिर चूर-चूर हो जाय; तो मैंने विज्ञान, सभ्यता और उन्नति के लिए जो अपनी शक्ति का प्रयोग किया, उसका नतीजा क्या हुआ ? क्या मैं चिउँटी और मक्खी ही की तरह एक आकस्मिक घटना-मात्र हूँ ! उस चिउँटी और मक्खी की तरह ही मैं भी एक निशान तक न छोड़कर मिट जाऊँगा ? प्यारी मार्लें, बोलो तो तुम्हारी क्या राय है ?"

मार्लें धीरे-धीरे साँस लेती हुई, आँखें मूँदे वहाँ बैठी रही। इसके पश्चात् उसके चेहरे पर मुस्कराहट दिखाई पड़ी और अन्त में अपने सुपुष्ट और रक्तिम अधरों से उसने पीयर को चूम लिया।

ब्रुसेथ शहर से बहुत ऊपर एक बड़ा 'फार्म' था। सफ़ेद मकान के चारों ओर लम्बा बरामदा, छायाच्छन्न पथ और बग़ीचा था। वहाँ से झील के ऊपर से चारों ओर के सुदूर-विस्तृत ग्राम्य दृश्य बहुत ही सुन्दर दिखाई पड़ते थे। मुहूर्त भर के लिए पीछे की ओर ताककर फाटक के पास दोनों खड़े हो गये।

मार्लें की बुआ विधवा थीं; वे धनवान् और प्रबन्ध में चतुर थीं। मिजाज़ कुछ सनकी-सा था, एक दिन बड़ी दानशीला हो सकती थीं, दूसरे दिन फिर वैसी ही कंजूस भी। जीवन में उनको यही दुःख था कि उन्हें कोई सन्तान नहीं है। वे निश्चय न कर सकी थीं कि उनका उत्तराधिकारी कौन होगा।

उन्होंने कहा—ख़ैर, तुम आ ही गई। तुमने यह कैसे जाना मार्लें, कि मैं जीवित हूँ? तुम्हें मेरी याद आई कैसे—इसके बाद कमर पर हाथ रख पीयर की ओर मुँह फेर कर उसे निरीक्षण करते हुए उन्होंने कहा—तुम्हीं पीयर हो? तुमने ही मार्लें को पकड़ा है? ख़ैर, देखो, मैं तो तुमको 'पीयर' कहकर ही पुकार रही हूँ। यद्यपि तुम बहुत दूर से आये हो! अच्छा बैठो!

सुरा लाई गई। ब्रुसेथ की बुआ मारिट ने दोनों की ओर गिलास उठाकर शुभेच्छा प्रकट करते हुए कहा—अवश्य तुम लोगों में लड़ाई-झगड़े होंगे, पर अधिक न होने चाहिए। पीयर होल्म, मेरी बातों को ध्यान से सुनो; अगर तुम इसको अच्छी तरह नहीं रखोगे तो किसी शुभदिन पर मैं जाकर तुम्हें दण्ड दूँगी। बच्चो, तुम लोगों के स्वास्थ्य की कामना करती हूँ!

इसके बाद बाहु से बाहु बाँधे वे दोनों पहाड़ की ढाल से नीचे की ओर आनन्द से नाचते-गाते घर की ओर चल दिये।

एक दिन रविवार को प्रभात के समय मार्लें एक गाड़ी पर बैठकर होटल में आई। वह स्वयं गाड़ी को हाँक रही थी। पीयर भी निकल आया और गाड़ी के अन्दर बैठ गया। फियर्ड के

किनारे से वे मार्ले के पिता की जायदाद देखने के लिए चले। प्राचीन काल में यह जायदाद गवर्नर का सरकारी क्वार्टर था। वे एक जंगल को पार करते हुए उसके किनारे पर जा पहुँचे। वहाँ मार्ग के दोनों ओर ऐश के वृक्षों की घनी पाँत थी। यह तङ्ग रास्ता सड़क से मुड़कर पहाड़ के ऊपर एक मकान की ओर चला गया था। मकान पर झंडा उड़ रहा था। वह विशाल भवन सिर ऊँचा किये इस प्रकार खड़ा था मानो वह जगत् का निरीक्षण कर रहा हो। विशाल आँगन को घेरे हुए तीन तरफ़ 'फार्म' के लाल लाल मकान थे और नीचे की ओर बग़ीचे। विस्तीर्ण भूमि ढाल बनाती हुई झील की ओर चली गई थी।

उस तरफ़ टकटकी लगाकर पीयर ने पूछा—यह कौन जगह है?

"लोरेंग।"

"इसका मालिक कौन है?"

बेंत खटखटाते हुए लड़की ने कहा—नहीं मालूम। इसके बाद ही घोड़ा उस संकीर्ण रास्ते से चला; पीयर ने अनिच्छावश रास को पकड़कर कहा—ब्राउनी, कहाँ जा रहा है?

मार्ले ने कहा—चलो न, इसे देखा जाय।

"लेकिन हम लोग तो तुम्हारे पिता जी का स्थान देखने जा रहे हैं।"

"हाँ, यही पिता जी का स्थान है।"

विस्मय से निर्वाक् होकर पीयर ने मार्ले की ओर देखा और रास को छोड़ दिया। कहा—क्या? क्या? यह सब तुम्हारे पिता जी का है? सच कहती हो? मार्ले, तुमने कहा था न, कि तुम्हारे पिता जी यह जगह सरकार को बेच देने का विचार कर रहे हैं?

मार्ले ने उत्तर दिया—हाँ, मालूम तो ऐसा हो रहा है। पिता जी का कहना है कि यहाँ पर रहकर देख-रेख किये बिना कुछ लाभ नहीं होता।

"तो इसे ख़रीदकर यहीं अपना घर बनाया जाय, राय ठीक है न !"

उस दिन सन्ध्या के समय बहुत देर तक होटल में नोट-बुक लेकर पीयर ने सब हिसाब-किताब ठीक कर लिया। उसने लोरेंग ख़रीद लिया है। उसके ससुर ने जिस मामूली दाम पर ख़रीदा था, उसी दाम पर मकान, ज़मीन, जंगल सब बेच दिया। स्टेट के ऊपर तीस हज़ार क्राउन का क़र्ज़ था, वह वैसा ही रह गया; क्योंकि पीयर का अधिकांश धन फर्डीनण्ड होल्म की कम्पनी में फँसा हुआ था।

कई दिनों के बाद लोरेंग में बढ़ई, मिस्त्री और चित्रकारों को काम में लगाकर मार्ले को साथ लिये पीयर राजधानी को गया।

क्रिस्टियानिया के होटल में, जब एक दिन मार्ले सामान ख़रीदने के लिए बाहर चली गई थी और पीयर अकेला बैठा था, दरवाज़े पर हलका आघात हुआ। पीयर ने कहा—आइए। काला फ़्रॉक कोट पहने हुए तीस या कुछ अधिक उम्र का एक मध्यमाकृति पुरुष अन्दर आया। सिर के खल्वाट को छिपाने के लिए उसके बाल सावधानी से सँभाले गये थे। चेहरा लाल और प्रफुल्लित था और आँखें उज्ज्वल नील थीं। इस व्यक्ति की मूर्ति से प्रसन्नता टपक रही थी।

अभिवादन के साथ हँसकर उसने कहा—मैं इउथोग जुनिअर (इउथोग का पुत्र) हूँ।

"ओहो ! आइए ! स्वागत है।"

अभी मैंचेस्टर से आ रहा हूँ, यह जल-यात्रा बड़ी कष्टप्रद है। कहकर वह बैठ गया।

पीयर ने सुरा मँगवाई। घण्टे भर में दोनों की मित्रता गहरी हो गई। इउथोग जुनिअर को सारे जीवन का इतिहास दोहराने में अधिक समय नहीं लगा।

वह अभिनेता बनना चाहता था। पर पिता इससे सहमत न थे। अतः वह भाग गया था। इसके बाद अनुभव से उसको जब मालूम हुआ कि थिएटर भी अधिक नहीं है तब उसने व्यापार करना शुरू किया। अब उसने इँग्लिश ट्वीड बेचने की जेनरल एजेन्सी ली है। उसका मत यह है कि स्वाधीनता चाहिए। पिता अथवा और किसी के आदेश के बिना भी चलने-फिरने के लिए दुनिया में काफ़ी जगह है।

एक हफ़्ते के बाद रिंगेबी में लोरेंज इउथोग के मकान का रास्ता मनुष्यों से भर गया, सभी की दृष्टि आलोकित वातायनों की लम्बी क़तारों पर निबद्ध थी। उस बड़े आदमी के मकान में आज रात को भोज था। क़रीब आधी रात को एक गाड़ी मकान के दरवाज़े पर आ खड़ी हुई। पास के एक व्यक्ति ने फुसफुसाकर कहा—यह दुलहा की गाड़ी है। ये घोड़े डेनमार्क से खरीदे गये हैं।

सड़क पर का दरवाज़ा खुल गया। गाढ़े 'क्लोक' से ढकी हुई एक शुभ्रमूर्ति निकल आई। जनता फुसफुसाकर कहने लगी—दुलहिन! और इसके पश्चात् काला ओवरकोट और सिल्क हैट पहने हुए एक पतला-सा पुरुष निकला। यह था दुलहा! ज्यों ही दम्पति-युगल निकल गये, इँग्लिश ट्वीड के जेनरल एजेण्ट के कण्ठ से ध्वनि निकली—हिप् हिप् हिप् और इसके बाद बहुत-से कण्ठों से सहर्ष ध्वनि हुई—हुर्‍रे!

गाड़ी निकल चली। एक बाहु से बहू को आलिंगन कर पीयर फियर्ड के किनारे से घोड़ों को दुलकी चाल से चलाता हुआ चला अपने घर, अपने प्रासाद की ओर—अभिनव और अनिर्दिष्ट भविष्य की ओर!

पंचम परिच्छेद

नेकर के पाकेट में हाथ डाले और टोपी को पीछे की ओर हटाकर लगाये पीयर उजड़े उद्यान में घूम रहा था। वह कभी यहाँ पर खड़ा होता, कभी वहाँ पर; फिर अपने ख्याल के अनुसार आगे बढ़ता। कभी किसी गीत के एक टुकड़े को गुनगुनाता, फिर सीटी बजाना शुरू कर देता। कभी एक छोटी डाली को तोड़कर उसी को देखता, तो कभी किसी चिड़िया अथवा पुराने सेब के पेड़ के साथ खड़े-खड़े बातें करता। मानो वह अपने चारों ओर की वस्तुओं में से अपने मस्तिष्क के लिए पौष्टिक रस प्रयत्न के साथ संग्रह कर रहा हो। उसके हृदय की शून्यता भर गई थी; उसकी अपनी अधिकृत भूमि के दृश्य उसके मन को सन्तोष और उल्लास से भर रहे थे।

अब—इसके बाद क्या है ?

मन ही मन वह कहने लगा—इसके बाद क्या है ? वह उद्यान के पथ पर टहलने लगा। इसके बाद ? इसके बाद ? अच्छा, क्या कुछ दिन वह थोड़ा विश्राम नहीं कर सकता ? प्रत्येक मनुष्य की दृष्टि के सामने कुछ लक्ष्य तो रहना चाहिए ? किसी एक लक्ष्य को प्राप्त करने की चेष्टा तो करनी चाहिए ? अस्तवल के ऊपर के कमरे में कठोर दिन-यापन से आज तक उसने किस लिए इतना परिश्रम किया ? वह क्या है ? कितनी बार उसके मन में ऐसा हुआ कि यह सब विना किसी झंझट के आपसे आप चल रहा है और एक दिन अवश्य ही वह भी एक विराट् आनन्दमय विश्व-व्याप्त समन्वय में अपने स्थान को प्राप्त कर लेगा। क्या अभी उसने उस स्थान को प्राप्त नहीं किया है ? तो, और क्या चाहिए ? नहीं, वह अवश्य ही अपने लक्ष्य पर पहुँच गया है।

क्या, यही सब कुछ है ? तो पीछे और आगे क्या है ? शायद इस सम्बन्ध में पूछने की आवश्यकता नहीं। चारों ओर के सौन्दर्य को देखो; यहीं पर शान्ति है, शान्ति और विराम।

जल्दी से वह मकान की ओर गया। फिर मकान के अन्दर पहुँचा; प्रिया को छाती लगा लेने से, सम्भव है, कुछ शान्ति मिले। थोड़ी देर के लिए उसे लेकर बाहर चला जाय !

मार्ले उस समय भाण्डार में एक बड़ी 'एप्रन' पहनकर ताकों में अचार के भाँडों को सजा रही थी।

मार्ले को गले लगाकर पीयर ने कहा—प्रिये ! चलो बाहर थोड़ा-सा भ्रमण किया जाय !

"इस समय ? निठल्ले की तरह घूमने के अलावा गृहिणी को और काम नहीं है ? क्या करते हो ? बाल खुल जायँगे जी !"

पीयर उसे बाँह पकड़ खिड़की के पास ले जाकर झील की ओर ताकते हुए बोला—देखो, यह झील कैसी सुन्दर है।

"यह बात तो तुम बीसों बार कह चुके हो !"

"हाँ, और तुमने कोई जवाब नहीं दिया। एक बार भी तो दौड़ती हुई आकर मुझे गले लगाकर तुमने नहीं कहा कि मैं बहुत सुखी हुई हूँ; एक बार भी तो तुमने आपसे चुम्बन नहीं किया ?"

"जी, शायद नहीं, इसी लिए चोरी से ढेर-सा वसूल कर रहे हो !"

पीयर को हटाकर, उसकी बाँहों के बीच से निकल मार्लें कमरे से भाग गई। जाते हुए उसने कहा--आज मुझको मा के पास जाना है।

"हाँ, ठीक है !"—पीयर कमरे में टहलने लगा और उसकी चाल द्रुत और अस्थिर होने लगी।—"मा के पास, मा के पास !

हर वक़्, मा, मा, केवल मा, और कुछ भी नहीं ! धत्”—पीयर सीटी बजाने लगा।

पीयर जब अस्तबल से गुनगुनाता हुआ आया, मार्ले उस समय काली ऊनी पोशाक पहनकर और गले में लाल फीता बाँधकर ड्राइङ्गरूम में बैठी थी। पीयर ने रुककर कहा—वाह मार्ले, यह पोशाक़ तुम्हारे शरीर पर कैसी अच्छी मालूम हो रही है !

पल भर पीयर की ओर देखकर मार्ले बढ़ी और उसने पीयर को गले से लगा लिया।

“आज तुमको अस्तबल में अकेला ही जाना पड़ा ?”

“हाँ, घोड़े के बच्चे के साथ बातचीत कर रहा था।”

“पीयर, मैं तुम्हें बहुत परेशान करती हूँ न ?”

“तुम ? तुम !”

“मा के पास ले जाने के लिए कहती हूँ, तब भी नहीं ?”

“वाह ! मैं तो वही चाहता हूँ। कैप्टेन मायर से मैंने जो काला घोड़ा ख़रीदा है, वह आने ही वाला है, उसी के आने की राह देख रहा हूँ।”

“नया घोड़ा—चढ़ने के लिए ?”

“हाँ, मुझको थोड़ा घोड़े की सवारी की ज़रूरत है। सालों तक मैंने अरबी घोड़ों पर सवारी की है पर आज इस घोड़े को पहले इस गाड़ी में जोतकर देखेंगे।”

मार्ले पीयर को गले लगाये खड़ी थी; अब उसके उष्ण अधरों ने पीयर के अधरों को स्पर्श किया। इस प्रकार आत्मसमर्पण करने का मार्ले के लिए यह पहला अवसर था।

आवेग से साँस लेते हुए पीयर ने कहा क्या अच्छा होता, यदि इसी आनन्द के साथ मरा जा सकता।

जाड़ा आया, और अच्छी तरह आया। 'ऐसे समय पर ही तो घोड़ागाड़ी पर चलने में मजा है। मार्ले! चलो! गुडब्रान्डूसडाल से जो नया घोड़ा लाया गया है उसे सिखलाने की ज़रूरत है। उसी को हम लोग जोतेंगे!' बस, ऊनी पोशाक़ पहनकर वे बर्फ़ से ढँकी हुई झील के ऊपर से तीव्रगति के साथ चले। कभी शीशे की तरह स्वच्छ बर्फ़ के ऊपर चलते चलते गाड़ी उलटने के क़रीब हो जाती है; मार्ले चिल्ला उठती है। परन्तु फिर वे वहाँ पर पहुँचते हैं जहाँ नरम बर्फ़ है और वहाँ घोड़े के खुर ज़मीन को पकड़ सकते हैं। अब छलाँग-फलाँग नहीं, अब दुलकी चाल से चल! पीयर घोड़े को कोड़े से डराता है; लम्बे बालों से युक्त गरदनवाला गुडब्रान्डूसडाल-निवासी गरदन ऊँची कर दुलकी चाल से बढ़ता जाता है। सन्ध्या हो जाती है। विस्तीर्ण तारकापूर्ण आकाश के नीचे वे लोरेंग की ओर द्रुत चलने लगते हैं; लोरेंग की उज्ज्वल दीपावली की लम्बी क़तार उनको घर की राह दिखलाती है। —"डियर, आज का दिन कैसा अच्छा बीता!"

"मार्ले! आज का दिन एक शान का दिन था! कल तो मरना है!"

"क्या कहते हो! कल?"

"नहीं तो पचास साल बाद! बात एक ही है।" उसने मार्ले का हाथ पकड़ा। उसकी आँखें आधी बन्द हो गई थीं।

"परन्तु आज की सन्ध्या को तो हम एकत्र हैं, और अधिक हम चाह ही क्या सकते हैं?"

इसके बाद पीयर अपनी मिस्र-सम्बन्धी कहानियों का वर्णन करने लगा।—"एक बार वह एक महीने की छुट्टी में विख्यात मास्पेरो के साथ ध्वंसप्राप्त नगरों को देखने के लिए लक्सोर, कानीक, एल् आमानी और शुब्रा में गया था। उसने उन पुराने मन्दिरों, शहरों और राजाओं के समाधि-मन्दिरों को देखा था, जहाँ पर हज़ारों

वर्ष पहले मनुष्य आँखें खोलकर, मानो चिन्तामग्न होकर सोये थे। ऐसा मालूम होता था कि किसी समय वे उठ जायँगे और पुकारकर कहेंगे—नौकर, नहाने का पानी ठीक हुआ? वहाँ एक फ़सल के खेत के बीच में एक खम्भा खड़ा है; पूछने पर मालूम हुआ कि किसी राजधानी का यह शेष चिह्न है। वहाँ भी एक लाख साल पहले शायद युवक-युवती एक साथ बैठते थे और सुरापान करके परस्पर आमोद-प्रमोद करते थे। अब वे कहाँ हैं? कह सकती हो, अब वे कहाँ हैं?

"जब मेरी यात्रा ख़त्म हुई, तब मेरे मन में ऐसा होने लगा कि नील नदी से लाई हुई मिट्टी ही से केवल फ़सल के खेत उपजाऊ नहीं हुए हैं, परन्तु जो लोग मर गये हैं उनके शरीर से जो मिट्टी बनी है उससे भी वे उपजाऊ बने हैं। मैं जिस धूल के ऊपर से घोड़े पर चला हूँ, वह किसी समय मनुष्यों की उँगलियाँ थीं, सम्भव है वह मिट्टी ओंठ थे जो किसी समय परस्पर चुम्बन करते थे। लाखों नर-नारी किसी समय उस नदी के तटों पर बसते थे; अब उनकी क्या दशा है? भू-तत्त्व! वह सब लाखों सकरुण प्रार्थनायें जो सूर्य-ताराओं के उद्देश्य से, मन्दिरों की प्रस्तर-मूर्त्तियों के उद्देश्य से, घड़ियाल और सर्पों के उद्देश्य से, यहाँ तक कि उस नदी के उद्देश्य से उच्चारित हुई थीं, उनके बारे में मैं सोचने लगा। और उस हवा के बारे में भी सोचा जिसने उन प्रार्थनाओं को मुहूर्त भर के लिए ध्वनित किया था! इसी प्रकार आज तक हमारी प्रार्थनायें भी ऊपर की ओर चली जा रही हैं। हम अपने उष्ण अधरों से पत्थर पर चुम्बन कर रहे हैं और यह ख्याल कर रहे हैं कि उस पर चिह्न बना रहे हैं!"

उसके भ्राम्यमान जीवन की कहानी एक बार शुरू होने पर बन्द होना नहीं चाहती थी। वह चलती जाती थी। पर जब कुछ

उत्फुल्लता के साथ वह कहने लगता था तब मार्ले भी मुस्कराने लगती थी।

पीयर सिगरेट जलाकर प्रसन्नता से अपनी सर्वश्रेष्ठ विजय की कहानी कहने लगा। उसने कैटरैक्ट (नील नदी के झरने) पर जो काम लिया था वह खतम हो चुका था और फिर अलक्ज़ेण्ड्रिया में उसने अँगरेज़ी कम्पनी की शाखा के साथ काम शुरू किया था। एक दिन सवेरे चीफ़ इंजीनियर अन्दर आये; उन्होंने कहा—महाशयो, यश कमाने की शक्ति जिनमें है उनके लिए एक मौक़ा है, कोई तैयार है? आधे दर्जन कण्ठों से उत्तर मिला—मैं हूँ। "बहुत अच्छा, अबीसीनिया के राजा को अकस्मात् यह सूझ रहा है कि उन्हें भी आधुनिक बनना चाहिए और इसलिए उन्हें रेलवे की ज़रूरत है, दो सौ मील की समझिए; आप लोग क्या कहते हैं?" सम्मिलित स्वर में हम लोगों ने कहा—बहुत ही उत्तम है। "अच्छा, परन्तु हम लोगों को जर्मन, स्विस और अमेरिकनों के साथ प्रतियोगिता करके जीतना है।" और भी ऊँची आवाज़ से सम्मिलित उत्तर हुआ—अवश्य ही होगा। "अब मुझको दो आदमियों की ज़रूरत है जिन्हें मैं पूर्ण-स्वतन्त्रता दूँगा। वे वहाँ जाकर 'सर्वे' के पश्चात् लाइन ठीक करेंगे और टेकनिकल और आर्थिक दृष्टि से खूब अच्छी तरह सोच-विचार कर पूरा 'प्लैन' बनावेंगे। यह प्लैन प्रतियोगी दलों के प्लैनों से अच्छा होना चाहिए, सस्ता भी होना चाहिए। उपयुक्त व्यक्ति के लिए यह आठ महीने का काम है, परन्तु मैं चाहता हूँ कि चार महीने के अन्दर हो जाय। मददगार, कर्मचारी, असबाब जो कुछ चाहिए, आप लोगों को मिलेगा। इस तरह जो इस काम को कर सकेंगे उन्हें एक हज़ार पौंड प्रिमियम मिलेगा।"

उत्तेजना के मारे मार्ले खड़ी हो गई और बोली—पीयर—तुम भेजे गये थे?

"मैं और एक दूसरा आदमी।"

"वह कौन था ?"

"उनका नाम है फ़र्डीनएड होल्म।"

मार्लें मुस्कराती हुई अर्द्धोन्मीलित नेत्रों से उसकी ओर देखने लगी। वह जानती थी कि पीयर का जीवनव्यापी स्वप्न इस सौतेले भाई को न्याययुद्ध में परास्त करने का था। इतन दिनों के बाद...!

बच्ची की ओर उदासीन-सी दृष्टि डालकर मार्लें ने पूछा—इसके बाद क्या हुआ ?

पीयर ने सिगरेट फेंक दिया। "पहले तो नील नदी से उजान की ओर यात्रा, इसके बाद जानवरों की पीठ पर सवारी, ऊँट, खच्चर, सहायक कर्मचारी, भोजन-सामग्री, औज़ार, खेमा और किनीन—पर्याप्त परिमाण में किनीन। जानता नहीं कि, इस प्रकार के काम के माने तुम समझ सकती हो कि नहीं। जंगल, सुरंग, दलदल, भयानक स्रोत और गहरी खाइयों के ऊपर से यह रेलवे बनानी थी और इन सब का 'सैन' और 'एस्टिमेट'—माल-असबाब, मज़दूर, समय, धन, इत्यादि जो कुछ है सबका एस्टिमेट जहाँ तक जल्दी हो सके करना था। पुल बनाने के लिए ठीक प्रबन्ध और गार्डरों का बन्दोबस्त करना, इसके बाद अच्छी तरह काम करने का भी एस्टिमेट हो सकता था, परन्तु इतने ही से कुछ फल नहीं होता। अगर जर्मन लोग आकर कह देते कि उनका पुल हम लोगों के पुल से सुन्दर होगा तो सब गुड़ गोबर हो जाता। चतुर से चतुर व्यक्ति को भी इस काम के लिए आठ महीने लगते। लेकिन मुझे उस काम को चार महीने में करना था। दिन में बारह ही घंटे होते हैं यह सच है। परन्तु रात के भी तो बारह घंटे थे। बुख़ार ? हाँ, वह भी था। कड़ी धूप से मृत्यु ? हाँ। मनुष्य और जानवर दोनों उससे

खतम होने लगे। मानचित्र पानी से धुलकर साफ़ हो गये। मेरा सबसे अच्छा सहायक साँप के काटने से मर गया। परन्तु ये ही सब बाधायें नहीं थीं। इनके लिए काम में देरी हो ही नहीं सकती थी। यदि एक आदमी कम हो जाता तो उसके सीधे माने यह थे कि उसका काम मुझको ही करना पड़ता था। दो महीने तक मेरे सिर के पिछले हिस्से में मानो अविराम लोहे की हथौड़ी पड़ती रही। रात को दो घंटे के लिए आँख बन्द करता था उस समय भी सिर के भीतर आग की तरह छोटे-छोटे साँप वंकिम गति से चलने लगते थे। थकावट की बात! शीशे में जब मैं अपना चेहरा देखता था तो मालूम होता था कि मेरे सिर में दो ख़ून के गोले बैठा दिये गये हैं। चार महीने बाद में चीफ़ इंजीनियर के पास आया।

"और—और फर्डीनण्ड होल्म ?"

"वह मुझसे एक दिन पहले आया था।"

मार्ले अपने आसन पर चञ्चल हो उठी। "तो, उसी की जीत हुई ?"

पीयर ने दूसरा सिगरेट जलाया। सिगरेट से मानो धुआँ निकलना नहीं चाहता था।

पीयर ने कहा—नहीं, मैं ही जीता। उसी समय से तो मैंने अबीसीनिया में रेलवे का काम करना शुरू किया।

मार्ले ने कहा—यह ले शैम्पेन। गिलास में सुरा जब फेनिल हो उठी तो मार्ले उठकर पीयर की शुभाकांक्षा करते हुए उसे पीने लगी। मार्ले ने कुछ कहा नहीं, केवल अर्द्ध-उन्मुक्त दृष्टि से उसकी ओर देखकर मुस्करा दिया। परन्तु पीयर के सिर से पैर तक मानो आग लहराती थी।

मार्ले ने कहा—आज बाजा बजाने को दिल चाहता है।

पीयर प्रायः उसे बाजा बजाने को कहता था, परन्तु

मार्ले कदाचित् ही बजाती थी। विवाह होने के पश्चात् मार्ले वायोलिन छूना ही नहीं चाहती थी, शायद उसके मन में यह शंका थी कि इससे उसकी पुरानी आशायें जाग्रत होकर उसकी शान्ति को नष्ट कर देंगी।

सोफे में सामने की ओर झुककर दोनों हाथों से सिर को दबाये पीयर सुनने लगा। लाल पोशाक़ पहने मार्ले 'म्यूज़िकस्टैन्ड' के सामने खड़ी होकर बजाने लगी।

अकस्मात् मा की याद आई। मार्ले टेलिफोन के पास गई। "मा, मा, तुम यहाँ हो! ओह आज हम लोगों ने कैसा सुन्दर दिन बिताया!" मार्ले और भी बहुत कुछ कहने लगी। यह सुन्दर दिन उसके लिए जो आनन्द लाया था उसी की कुछ किरणों से वह अपनी माता के हृदय को भी आलोकित करना चाहती थी।

थोड़ी देर बाद पीयर जब बिछौने पर लेटा, मार्ले प्रसाधन के लिए कमरे के अन्दर टहल रही थी। वह लम्बा, सफ़ेद गाउन पहने थी और हरे रंग की बत्ती लगी हुई शृंगार की मेज़ के सामने खड़ी होकर रात के लिए लम्बी वेनी बाँध रही थी। पीयर की आँखें उसका अनुसरण कर रही थीं। दोनों में से कोई किसी से बोलता नहीं था। पीयर शीशे में मार्ले का चेहरा देखता था; वह देखता था कि मार्ले की कोमल रहस्यपूर्ण दृष्टि उसी की ओर लगी है। मानो उसके केशों की सुगन्ध से हवा में यौवन जाग्रत् हो रहा था।

मार्ले उसकी ओर मुँह फेरकर हँस रही थी। पीयर बोलता नहीं था, केवल उसकी उज्ज्वल आँखें इशारे से उसको पुकारती थीं। सन्ध्या के सारे कृत्य—उनका भ्रमण, सन्ध्या को लौट आना, छोटा-सा भोज, पीयर की कहानी, सुरापान—यह सब न जाने

किस समय उनके हृदय के अन्दर प्रेम के रूप में परिणत हो गये थे। वह प्रेम अब उनकी हँसी से उज्ज्वल हो उठा था।

युग-युग से अनन्त अन्धकार की ओर यात्रा करनेवाले लाखों मनुष्यों की स्मृति अब भी उनके मस्तिष्क में थी; फिर भी इस समय उनके प्रगाढ़ आलिंगन में जो आनन्द सञ्चित था उसके सामने और सब तुच्छ लगता था। यह जीवन-धारण भी कैसा परमाश्चर्य है! यह सोचकर पीयर विश्व-नियन्ता की स्तुति गाने के लिए व्याकुल हो उठा।

अब पीयर की समझ में आया कि मार्ले क्यों देर कर रही है। उसके हृदय में जो करुणा है उससे वह पीयर को विस्मित कर देना चाहती थी। यह उसी का इंगित था। मार्ले के लघु निःश्वास ने कमरे के वायुमण्डल को प्रेम से परिपूर्ण कर दिया।

रात्रि के समय बाहर झील के बर्फ़ में नये-नये दरारों के फटने का उच्च शब्द सुनाई देने लगा। जिस छत के नीचे वे सोये हुए थे उसके ऊपर शीतकाल का आकाश नक्षत्रों से उज्ज्वल हो उठा।

षष्ठ परिच्छेद

इसके बाद कई साल तक पीयर अपनी जायदाद और कारखाने का काम देखता-भालता रहा। यद्यपि इनमें से किसी में वह अधिक समय न लगाता था। नायब था, मैनेजर था, सब काम ढर्रे पर चलता जाता था। यदि कोई पीयर से पूछता कि तुमने इस समय में क्या किया, तो उसके लिए उत्तर देना कठिन हो जाता। मानो वह एक ऐसी वस्तु की खोज में घूम रहा था जिसकी कोई रूपरेखा नहीं थी। मानो उसके पास कोई ऐसा अभाव था, उसकी कोई ऐसी वस्तु खो गई थी, जिसकी पूर्ति अब होनी चाहिए। उसे अब ज्ञान की नहीं, जीवन की आवश्यकता थी—उस जीवन की, जो स्वदेश का हो, जिसमें यौवन हो; वह यौवन जो अब उसकी पकड़ से बाहर हो चुका है, जिसे पकड़ने के लिए वह हाथ बढ़ा रहा है। पहली उम्र में जिस यौवन ने उसके अन्दर स्वच्छन्द विकास का अवसर नहीं पाया था, वह आज भी उसके भीतर अवरुद्ध था और प्रकट होना चाहता था। अब परदेशी का जीवन उसे पसन्द न था। वह चाहता था जड़ जमाकर बस जाना, जिससे औरों की भाँति उसे भी यह सोचने का अवसर मिले कि संसार में मेरा भी एक स्थान है।

जून महीने में एक दिन वह मार्ले की शय्या के पास जा खड़ा हुआ। मार्ले सद्योजात लड़की को बाँह पर सुलाये धीरे-धीरे मुस्करा रही थी।

"पीयर, इसका नाम क्या होगा?"

"क्यों ? हम लोगों ने तो बहुत पहले ही ठीक किया था कि इसका नाम तुम्हारी माता के नाम पर होगा।"

छोटे और लाल मुख को अपनी छाती की ओर घुमाकर मार्ले ने उत्तर दिया—"इसका नाम लुईसे होगा।" यह एक अप्रत्याशित बात थी। शायद मार्ले सप्ताहों से ऐसा निश्चय कर रही थी, जो आज प्यार के उच्छ्वास की तरह आपसे आप निकल पड़ा, यद्यपि वह चाहती न थी। पर इस प्यार ने उसके अन्तस्तल तक को स्पर्श कर लिया। पीयर ने इसे हँसकर टालना चाहा। 'अपने घर के मामले में मुझे कुछ हस्तक्षेप करने की आवश्यकता नहीं है। तुम जैसा उचित समझो करो।' यह कहकर धीरे से वह उसके माथे पर हाथ फेरने लगा। मार्ले ने देखा कि पीयर इस समय भावावेश में है; वह उसकी ओर देखकर खिलखिलाकर हँस पड़ी।

एक दिन फ़सल-कटाई के आरम्भ में घास के ढेर के ऊपर सिर रखकर सूर्यालोकित पहाड़ के किनारे लेटा हुआ पीयर अपने आदमियों का काम देख रहा था। झील के किनारे घास काटने की कल गूँज रही थी; पहाड़ की ढाल पर 'स्प्रेडर' यंत्र काम कर रहा था; घोड़े आगे खींच रहे थे और आदमी पीछे बैठे हाँक रहे थे। उसकी चारों ओर का सारा भू-दृश्य ग्रीष्म और बीजों से परिपूर्ण था। वह भी विश्राम-शान्ति में मग्न होकर लेटा हुआ था।

एक नारी बच्चागाड़ी को ढकेलती हुई खेत के रास्ते से हलकी पोशाक और पीला स्ट्रॉहैट पहने वहाँ आई; वह मार्ले थी। वह आती हुई गुनगुना रही थी और चारों ओर देख रही थी। बच्चा होने के बाद से मार्ले का मन शान्त हो गया था। अब वह संगीत-द्वारा दुनिया जीतने का स्वप्न नहीं देखती थी। उस छोटी गाड़ी में लेटी हुई छोटी बच्ची ने उसके सारे स्वप्न-जगत् पर अधिकार

कर लिया था। वस्तुतः मार्ले इतनी सुन्दर कभी नहीं लगती थी। उसकी मुस्कान में अपूर्व मादकता आगई थी।

कुछ देर बाद पीयर नीचे उतरकर स्वयम् ही घास काटने के यंत्र को चलाने लगा। उसे अनुभव हुआ कि अपने स्त्री-पुत्र के लिए कोई न कोई काम उसे स्वयं भी करना चाहिए।

अकस्मात् पीयर रुक गया; नीचे उतरकर वह उस मशीन को चारों ओर घूम-घूमकर अच्छी तरह जाँचने लगा। उसके चेहरे पर सतर्कता के भाव थे और उसकी आँखों की दृष्टि पैनी हो रही थी। मशीन की क़ैंचियों की ओर कुछ देर तक देखकर खड़े-खड़े वह कुछ सोचने लगा।

इसका क्या मतलब है ? पीयर के मन में एक विचार आया। पर वह स्पष्ट नहीं था।

दिन कोमल और उष्ण थे और रात्रियाँ उज्ज्वल ! कभी-कभी वह रात-रातभर यह देखने को जागता रहता था कि उदयोन्मुख सूर्य का दृश्य कैसा सुन्दर होता है। एक रात को वह उठ बैठा। कपड़े पहन लिये और घोड़े पर सवार होकर चल दिया।

वह कहाँ जा रहा था ? कहीं नहीं। उसके दिल में कुछ परिवर्त्तन का विचार था। वह जुलाई महीने के प्रभात का दृश्य देखना चाहता था।

घोड़े की सवारी का आनन्द लेते हुए पीयर स्वच्छन्द गति से चलने लगा। अन्त में एक सबसे ऊँची और खुली जगह पर आकर वह ठहर गया। बैठे-बैठे 'हेलमेट' की आड़ से वह सूर्योदय को देखने लगा। उसके मन में एक अद्भुत अनुभूति की लहर उठने लगी।

उसे ऐसा भान हुआ मानो इससे अधिक सुख पाना इस जीवन में असंभव है। वह अब भी बलिष्ठ और तरुण है; उसकी इन्द्रियाँ एक दूसरे के साथ पूर्ण सहयोग रखते हुए काम करती जा रही हैं;

उसके मन में कोई चिन्ता नहीं है; कोई ऐसा दायित्व भी नहीं, जिससे वह पिसा जा रहा हो। भविष्य सुस्पष्ट और उज्ज्वल है। उसके जीवन में अब दिवा-स्वप्नों की भरमार नहीं है। उसने जो कुछ सीखा, देखा और संग्रह किया है, वह सब उसके मन में अब जीवन्त रूप धारण कर रहा है।

'परन्तु इसके बाद ?—इसके बाद क्या होगा ?

'मनुष्य के जिस महान् आदर्श का स्वप्न मैं देखता था—उसे क्या अपने अन्दर सजीव रूप दे सका ?

'मैं यह जानता हूँ कि मनुष्यता के विकास के सम्बन्ध में जन-साधारण की धारणा क्या है ! प्राणी सतत अपने से उच्च जातियों की ओर बढ़ने का प्रयत्न करता रहा, और क्रमशः बढ़ते-बढ़ते बढ़े मानवरूप में आगया, यह भी मुझे ज्ञात है। मैं यह भी जानता हूँ कि मानव आज भी अनेक अंधकारपूर्ण पंथों से टटोलता हुआ उस अनन्त की ओर बढ़ रहा है जिसे 'ईश्वर' कहते हैं।

'उद्भिजों के जीवन के सम्बन्ध में मैं जानता हूँ। पक्षी का नीड़-निर्माण एक ऐसा रहस्य है जिसकी पूजा की जानी चाहिए। चट्टानों में मुझे पुरातन ग्लेशियरों के चिह्न मिलते हैं जो हज़ारों वर्ष पूर्व वहाँ बहते थे और इन्हीं से सौरमंडल के प्रचण्ड क्रियाकलाप का कुछ आभास मिलता है। हेमन्त की संध्या में मैं नक्षत्रों की ओर ताकता हूँ और वह प्रकाश, वह मृत्यु और आकाश की वह अपरिमेय दूरी, सभी मेरी अन्तरात्मा में एक स्पन्दन उत्पन्न करते हैं।

'यह सब मेरे जीवन का एक भाग बन गया है। इस विश्व में जो कुछ गोचर है उसको अपनाने और उससे अपनी इन्द्रियानुभूति और भावनाओं को परिपूर्ण करने में ही जीवन का आनंद प्राप्त हो सकता है।

'परन्तु इसके बाद ? इसी से सब पूरा हो जायगा ? इसी से मुझको विश्राम मिलेगा ?

'क्या मैंने अब तक एक भी ऐसा नया सोपान बनाया है जिस पर चढ़कर दूसरे लोग यह कह सकें कि अब हम लोग पहले से अधिक देख सकते हैं ?

'मेरी अन्तरतम सत्ता का मूल्य क्या है, यदि वह कर्म में प्रतिबिम्बित न हुई ?

'मेरा किससें विश्वास है ? मेरा क्या धर्म है ?

'हाय, निर्वासन की अनुभूति और धार्मिक निराश्रयता ! कितनी बार मैंने और मार्ले ने हाथ में हाथ मिलाकर एक साथ अपनी भावनाओं को इस मर्त्यलोक के ऊपर नक्षत्रों के बीच में से एक ऐसी सत्ता की खोज में भेजा है जिसके पास मैं अपनी प्रार्थनाओं को निवेदित कर सकता था। दया और अनुग्रह के लिए नहीं, दास और भिक्षुक की तरह क्रन्दन करने के लिए नहीं; बल्कि इस परम दान, जीवन के लिए कृतज्ञता दिखलाने के लिए।

'परन्तु वह हैं कहाँ ?

'वह नहीं हैं। फिर भी वह हैं।

'परन्तु क्रॉस पर का संन्यासी तो मरीज़ों और बूढ़ों का भगवान् है। हम लोगों के भगवान् कहाँ हैं ? आधुनिक सबल और वैज्ञानिक शिक्षाप्राप्त मानव को अपनी शाश्वत अन्तरात्मा का स्तवगीत गाने के लिए मन्दिर कहाँ प्राप्त होगा ?'

दूर पर, पहाड़ की चोटी पर सूरज उग आया। देवदार वन की लाखों चोटियों पर सुनहरा प्रकाश फैल गया। जामे की सफ़ेद आस्तीनों पर और हाथ पर शिशिर की बूँदें जगमगाने लगीं और पीयर सामने की ओर झुककर अस्थिर घोड़े को थपकाने लगा।

रात्रि के दो बज रहे थे। बादलों में और ज़मीन पर के पानी में प्रभात की अरुण-ज्योति झलक रही थी। प्रान्तरों में ओस के कण और तितलियों के पङ्खों पर मोती झिलमिलाने लगे।

"विनू, अब चल, घर चल।"

पीयर तृणाच्छन्न जङ्गली रास्ते से लौट पड़ा। बादामी घोड़ा संकेत पाकर पूरी गति से चौकड़ी भरने लगा।

सप्तम परिच्छेद

"मार्ले, कहाँ हो तुम? सुनो! हमारे यहाँ बड़े-बड़े लोग आ रहे हैं।" एक खुले हुए टेलिग्राम को हाथ में लिये पीयर ने सब कमरों में घूमते हुए और अन्त में बच्चों के कमरे में अपनी स्त्री को पाकर कहा। "हाँ, लेकिन तुम जिस तरह चिल्ला रहे हो, मैं बराबर सुन रही हूँ। कौन आ रहे हैं?"

"फर्डीनण्ड होल्म और क्लाउस ब्रोक। तो, नामकरण-उत्सव के अवसर पर वे आ रहे हैं! क्या कहती हो, मार्ले?"

मार्ले पीली पड़ गई थी और उसके गाल बैठ गये थे। उपर्युक्त घटना के दो साल बीत गये थे। उसकी गोद में दूसरी सन्तान थी एक लड़का—जिसकी आँखें बड़ी-बड़ी और चञ्चल थीं। लड़के का वस्त्र उतारते हुए मार्ले ने उत्तर दिया—तुम्हारे लिए बड़ा ही अच्छा हुआ, पीयर!

"हाँ, मेरे निमंत्रण पर उन लोगों का इतनी दूर से आना बहुत बड़ी बात है। तो अब जल्दी करनी चाहिए। घर-द्वार ज़रा साफ़-सुथरा करने की ज़रूरत है।"

सारा स्थान थोड़े ही समय के अन्दर बिलकुल बदल गया। बग़ीचे के रास्तों और आँगन के लिए बालू की कई गाड़ियाँ आईं; चित्रकार लोग जी-जान से मकान को रँगने लगे। बेचारी मार्ले भी अच्छी तरह जानती थी कि गृह के अन्दर स्वागत करने में ज़रा भी त्रुटि होगी, तो आफ़त आ जायगी।

अन्त में अगस्त का वह दिन आया; प्रतीक्षित अतिथियों के सम्मानार्थ पताकायें उड़ाई गईं।

मार्लें ने अपना प्रसाधन किया; दर्पण के सामने खड़े होकर उसने अपने को देखा—गर्मी की हलकी पोशाक बहुत फब रही थी। गर्दन और कमर पर का लाल फीता भी उसको ख़ूब जँचता था। उसी समय बाहर पहियों का शब्द हुआ और मार्लें अतिथियों का स्वागत करने के लिए निकल आई।

पीयर कूदकर उतर आया और परिचय देने लगा—आप ही लोग हैं, आप हैं फर्डीनण्ड पाशा, नये साहारा राज्य के गवर्नर-जेनरल, और आप हैं हिज़ हाइनेस दी खिदीभ के हुक़्क़ा साफ़ करनेवाले और बॉडीगार्ड खोजा साहब।

आगे की ओर कुछ झुके हुए एक दीर्घाकार पुरुष मार्लें की ओर अग्रसर हुए। उनके बाल सफ़ेद थे। चेहरा सफ़ाचट और कुछ शुष्क-सा था। उन्होंने मार्लें की ओर अपना हाथ बढ़ाया। उस हाथ में केवल हड्डी ही हड्डी थी। उन्होंने कहा—"श्रीमती जी, सकुशल तो हैं ?" इसके बाद चारों ओर ताककर और चश्मा लगाकर बोले—"वाह, आपका मकान तो नवाबों जैसा है !"

फर्डीनण्ड का साथी गोल-मटोल चेहरे का एक मोटा-तगड़ा भद्र पुरुष था; डाढ़ी बकरे की तरह छोटी और काली थी। आँखें काली और झपकदार ! हँसी प्रफुल्लतापूर्ण थी। यह था क्लाउस ब्रोक।

पीयर अपने दोनों मित्रों को भीतर ले गया और खिड़कियों से उन्हें भिन्न-भिन्न दृश्य दिखाने लगा। अन्त में हँसकर मार्लें की ओर देखकर क्लाउस ने कहा—"देखता हूँ कि इसका स्वभाव पहले ही की तरह है; हाँ, कुछ मोटा ज़रूर हो गया है। आप इसकी ख़ूब सेवा करती हैं।" कहकर उसने मार्लें को अभिवादन किया और उसका करचुम्बन किया।

फर्डीनण्ड अकस्मात् बोल उठा—हाँ, मुझे एक टेलिग्राम करना है। ज़रा टेलिफ़ोन ले सकता हूँ ?

क्लाउस ने हँसकर कहा—बस शुरू हो गया; वह भला चुप रह सकता है! योरप के सारे रास्ते भर तुम्हारा टेलिग्राम चला। पर यहाँ ज़रा माफ़ करो। हम लोगों को पहले भीतर जाकर ज़रा विश्राम तो ले लेने दो।

पीयर ने कहा—इधर आओ, टेलिफ़ोन यहाँ पर है। यह कहकर दोनों जब कमरे से निकल गये, तो हँसकर क्लाउस ने मार्ले की ओर देखा और कहा—"ख़ैर, अब सचमुच मैं पीयर की पत्नी के समीप हूँ। उसकी स्त्री को अब बिलकुल साक्षात् देख रहा हूँ। पीयर की गृहिणी बड़ी सुन्दर है! उसका भाग्य सदा अच्छा रहा है।" फिर क्लाउस ने मार्ले के हाथों का चुम्बन किया। मार्ले ने हाथ हटा लिया और लज्जा से लाल हो उठी।

"मिस्टर ब्रोक, आपने तो शादी नहीं की।"

"मैंने ? हाँ, की भी और नहीं भी। मैंने एक यूनानी लड़की से शादी की थी; पर वह भाग गई। मेरा अदृष्ट!" यह कहकर आँख नचाते हुए उसने ऐसा चेहरा बनाया कि मार्ले हो-हो करके हँस पड़ी।

"और आपके मित्र, फर्डीनण्ड होल्म ने ?"

"वह ? श्रीमती जी, आपके सामने कह रहा हूँ, बुरा न मानिएगा; मेरा ख़्याल है कि उसके महल के साथ एक छोटा-सा 'हरम' भी है।"

मार्ले ने खिड़की की ओर मुँह फेर लिया और मुस्कराने लगी।

घण्टे भर बाद हाथ-मुँह धोकर और कपड़े बदलकर दोनों अतिथि नीचे उतर आये। जलपान करने के बाद पीयर उन्हें अपनी जगह-ज़मीन दिखलाने को ले चला। बाद को दो पहियों-वाली हलकी गाड़ी में सवार होकर वे कारख़ाना देखने गये। वह अपने छोटे कारख़ाने को इस तरह दिखलाने लगा मानो वह कोई

जगत्-प्रसिद्ध शिल्प-केन्द्र हो। उसके इस गम्भीर भाव के कारण उसके साथी उसकी ओर तिरछी निगाहों से देखने लगे और बड़ी कोशिश से हँसी को रोक सके।

अन्त में फर्डीनण्ड होल्म अपने को सँभाल न सका और बोला—नारवे के पैमाने पर इन चीज़ों को देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

पीयर सचमुच ख़ुश होकर बोल उठा—हाँ, देखिए न! मालिक अगर शान्ति के साथ अच्छी तरह समय बिताना चाहे तो उसका कारख़ाना ठीक इतना ही बड़ा होना चाहिए।

फर्डीनण्ड होल्म और ब्रोक परस्पर मुँह देखने लगे। लेकिन इसी के बाद पीयर ने उनको लेकर बग़ल के कमरे में प्रवेश किया; वहाँ के यन्त्रों के साथ उस कारख़ाने का कोई सम्बन्ध नहीं था।

क्लाउस ने कहा—देखो भाई, यह गुप्तस्थान है। यहाँ पर यह ज़रूर किसी नई ईजाद के पीछे लगा हुआ है, नहीं तो मेरा नाम नहीं। पीयर ने एक जोड़ा तिरपाल हटाकर एक मामूली घास काटने की कल दिखलाई और उसी के साथ उसका एक नया माडेल भी दिखलाया, जिसका आविष्कार स्वयं उसने किया था।

"अभी यह पूरी नहीं हुई है।—पीयर ने कहा—"लेकिन असली समस्या की मीमांसा हो चुकी है। पुरानी, एक 'ब्लेड'-वाली पद्धति बहुत ख़राब थी; तुम जानते हो वह धीरे-धीरे चलती थी; लेकिन दो 'ब्लेड' लगाने से अर्थात् एक प्रकार की क़ैंची बना देने से बहुत जल्द काम होगा।" इसके पश्चात् 'इसकी बनावट पहले से कितनी सहल है और यह कल कैसी हलकी होगी' इस पर पीयर ने एक छोटा-सा व्याख्यान दे डाला।

क्लाउस ने कहा—बस, फिर क्या, वही कोलम्बस के झंडे की कहानी हुई।

फर्डीनण्ड ने खिड़की से बाहर की ओर देखते हुए धीरे-धीरे कहा—इसके पेटेण्ट कराने का दाम दस लाख होना चाहिए।

फर्डीनण्ड की ओर देखते हुए पीयर ने कहा—अवश्य, असल बात तो किसानों के लिए काम को आसान करना और कल को सस्ता करना है।

उस दिन सन्ध्या-समय का भोज एक छोटा पूरा उत्सव-सा था। बड़े आनन्द के साथ वार्तालाप चलने लगा। एक कहानी के बाद दूसरी कहानी चलने लगी। परन्तु मार्ले ने देखा कि हँसने के समय भी फर्डीनण्ड की आँखें इसपात की तरह चमकती रहती हैं।

अब मिस्र के नये काम-धन्धों की चर्चा शुरू हुई। पीयर ज्यों-ज्यों सुनता गया, मार्ले को ऐसा मालूम हुआ कि पीयर की दृष्टि भी बदलने लगी। उसकी आँखों में भी इसपात की झलक आने लगी और वह कुछ अद्भुत और अन्यमनस्क हो गया। सम्भवतः वह सोच रहा था कि आख़िरकार स्त्री-पुत्र पुरुष के लिए बोझ-मात्र हैं। मानो वह लड़ाई का पुराना घोड़ा हो, जो अकस्मात तुरही की आवाज़ सुनकर जाग उठा है।

फर्डीनण्ड होल्म ने पीयर की ओर गिलास उठाकर कहा—हाँ, एक बात है, वहाँ पर तुम्हारे लिए एक छोटा-मोटा अच्छा काम पड़ा है।

"बड़ी मेहरबानी तुम्हारी! तुम्हारी अधीनता में कोई सब-डिरेक्टरी का काम है क्या?"

"किसी के अधीन काम करना असम्भव है। तुम्हारा स्थान चोटी पर है"—फर्डीनण्ड ने उँगली-द्वारा ऊपर-नीचे दिखलाकर अपने वक्तव्य को साफ़ किया, फिर कहा—"दजला और फ़रात पर बाँध बनाने के काम में हाथ लगाना होगा; अब केवल समय की बात है।"

पीयर ने आँखें फाड़कर कहा—बहुत-बहुत धन्यवाद !

"यह काम केवल उपयुक्त आदमी के अभाव के कारण पड़ा हुआ है। एक दिन यह होगा, आगामी वर्ष भी हो सकता है, दस साल बाद भी, जभी ठीक आदमी आ जायगा। मैं अगर तुम्हारे स्थान पर होता तो इस पर अवश्य विचार करता।"

सभी ने पीयर की ओर देखा। मार्लें ने भी पीयर को स्थिर दृष्टि से देखा। परन्तु पीयर हँस उठा और बोला—उन दो प्राचीन और सम्मानित नदियों को बाँधने में मुझे कौन-सा आनन्द मिलेगा ?

"पहली बात तो यह कि उस बाँध के कारण दुनिया में अनाज की उपज का परिमाण कई गुना बढ़ जायगा। उससे तुमको आनन्द नहीं होगा ?"

अवज्ञा का भाव दिखलाकर पीयर ने कहा—नहीं।

"भूगोल की सबसे अधिक उपजाऊ भूमि के लाखों वर्गमील के ऊपर से नियमित यातायात के लिए जो रास्ते बनेंगे ?"

पीयर ने कहा—इसमें मेरी रुचि नहीं है।

"ओह !"—फर्डीनण्ड ने मार्लें की ओर गिलास उठाकर कहा—"श्रीमती जी, ऐतिहासिक असंगतिवाले व्यक्ति के साथ शादी करने से कैसा मालूम होता है ?"

कंपित स्वर में मार्लें ने पूछा—किसके साथ ?

"आपका पति एक ऐतिहासिक असंगति है। अगर वह चाहता तो एक सम्राट् हो जाता या पैग़म्बर बन जाता—उन लोगों की तरह, जिन्होंने सभ्यता के प्रचार के लिए सर्वपूर्व अभियान किया था। परन्तु वह ऐसा नहीं चाहता। वह अपनी शक्ति को घटा रहा है। मेरी बात को याद रखिएगा, वह एक दिन अपने विरुद्ध विद्रोह करेगा।"

हँसकर मार्ले ने गिलास उठाया; परन्तु द्विविधा के साथ और पीयर की ओर तिरछी निगाहों से देखते हुए।

"आपके पति का अब काम केवल रह गया है, अपनी तारीफ़ करना और पिछले दिनों की याद करना।"

"पर यह कौन बहुत ख़राब बात है ?"

अपनी दृष्टि को कुछ कोमल करने की चेष्टा करते हुए फर्डीनण्ड ने कहा—हाँ, बैठे-बैठे अपने जीवन के सुनहले सूत्रों का उलझाना भर उसका काम रह गया है।

तरुण पत्नी साहस के साथ बोल उठी—इसमें बुरा क्या है ?

"यह ठीक नहीं है। यह तो आत्मा का अपचय करना है। चाहे जीवन स्वर्ण-सूत्र ही का क्यों न हो, उसे उलझाने का अधिकार किसी को नहीं है। मनुष्य के व्यक्तिगत आनन्द के दिन मिट जाते हैं किन्तु उसका काम रह जाता है। विश्व-विवर्तन हम लोगों को अनिवार्य-रूप से अपने काम में लाता है, प्रकाश के लिए अथवा इंधन बनाने के लिए।" पीयर—आपका पति—इंधन बनने के लिए नहीं है।

मार्ले ने फिर पीयर की ओर देखा। पीयर हँस उठा; इसके बाद अकस्मात् उसने ओंठ दबा लिये और अपनी थाली पर आँखें झुका लीं।

बरामदे में क़हवा पिया गया; पुरुष लोग बैठे-बैठे तम्बाक़ू पीने लगे। शिशिर का प्रारम्भ था। दूर पर काले और नीले पहाड़ थे, चारों ओर उद्यान-पुष्पों और घास की सुगन्ध थी। थोड़ी देर बाद मार्ले उठी और अभिवादन कर बिदा हुई। जब वह अपने सोने के कमरे में आई तो उसकी समझ में न आया कि वह प्रसन्न है या नाराज़। पीयर के साथ उसके परिचय होने के दिन से पीयर जो कुछ लेकर आनन्द से दिन बिता रहा था, ये अद्भुत मनुष्य उसे उन सब वस्तुओं से बहुत दूर ले जा रहे हैं।

लेकिन उन दोनों मित्रों के प्रति उसके व्यवहार में उल्लेखनीय फ़र्क़ था। क्राउस ब्रोक के साथ वह हँसी-मज़ाक़ कर सकता था, परन्तु फर्डीनण्ड होल्म के सामने वह सर्वदा सावधान रहता था और अपने को दिखाना चाहता था। यदि वह फर्डीनण्ड का प्रतिवाद भी करता था तो सम्मान के साथ।

पूर्वाकाश में पहाड़ के ऊपर पीला चाँद निकल आया। काले जल के बहुत बड़े हिस्से ने सुनहरा रंग धारण किया। कुछ देर तक तीनों साथी निःशब्द बरामदे में बैठे उस ओर देखते रहे।

"तो तुम निठल्ले की भाँति अपना समय यहाँ यों ही बिताते रहोगे ?"—फर्डीनण्ड ने पूछा।

पीयर ने कुछ आगे बढ़कर कहा—मैं, न ?

"हाँ, हाँ तुम; मैं देख रहा हूँ कि सुबह से लगाकर शाम तक सुख-चैन की खोज करने के अलावा और तुम्हारा कुछ काम ही नहीं है।"

"धन्यवाद !"

"पर वास्तव में तुम असुखी हो। और प्रत्येक मनुष्य जो अपनी शक्तियों और योग्यता की उपेक्षा करता है, असुखी ही होता है।"

"अनेकशः धन्यवाद !"—पीयर ने हँसते हुए उत्तर दिया।

"अब तुम्हें शायद अपने इंजीनियरी के काम से भी घृणा हो गई है ?"

"यह जो कुछ न कुछ नवीन सृष्टि करने की, हमेशा नवीन सृष्टि की, अन्तहीन इच्छा हम लोगों पर सवार है इसमें मैं सौन्दर्य का अभाव देखता हूँ। और भी रुपया, और भी द्रुत-वेग, और भी खाद्य—हम लोग केवल यही न चाहते हैं ?"

"भाई साहब, रुपये के अर्थ हैं—स्वाधीनता, भोजन के माने

हैं—जीवन। और द्रुतवेग हम लोगों को भूतकाल के ऊपर ले जाता है; मनुष्य के जीवन की संभावनाओं को दुगुना कर दो, मनुष्यों की संख्या दुगुनी हो जायेगी।"

"उनकी संख्या दूनी होने से फ़ायदा क्या? करोड़ों-मानवात्मायें—जो कल से निर्मित हों—यही तुम चाहते हो?"

क्राउस व्याकुल होकर बोल उठा—यह सब बहस अब जाने दो भाई! कम-से-कम हमारे प्यारे नारवे की बात तो सोचो। हमारी जनसंख्या अगर इतनी हो जाय कि दुनिया हमारे अस्तित्व को स्वीकार कर ले, तो तुम इसे दुर्भाग्य तो नहीं न मानोगे?

झील के ऊपर से दूर की ओर देख कर पीयर ने कहा—मानेंगे।

"ओह! छोटे आकार और छोटी संख्या से तुम्हें अंधप्रेम उत्पन्न होगया दीखता है।"

"मज़दूरों की फ़ौज और कारख़ानों से नारवे को मैं कलंकित देखना नहीं चाहता। क्या हम लोग शान्ति से नहीं रह सकते हैं?"

"इसपात ऐसा होने नहीं देगा।"

आँखें फाड़कर पीयर ने कहा—क्या? क्या कहा तुमने?

अविचलित रहकर फर्डीनण्ड कहने लगा—इसपात शान्ति नहीं चाहता। आग शान्ति नहीं चाहती। प्रोमिथिउस शान्ति नहीं चाहते। अब भी अनेक सोपान चढ़कर मानवात्मा को चोटी पर पहुँचना होगा। शान्ति? नहीं दोस्त, हम लोगों के भाग्य का नियंत्रण करनेवाली शक्तियाँ और ही हैं।

मुसकराते हुए पीयर ने दूसरा सिगार जलाया। कुर्सी से पीठ लगाकर फर्डीनण्ड कहने लगा—"दजला और फ़रात, गंगा और सिन्धु—पृथ्वी का बाक़ी सारा हिस्सा, इन सबको आयत्त और नियंत्रित करके इस पर खेती करना कोई भारी काम नहीं है, कुछ सालों का काम है। यह तो एक साधारण प्रारम्भमात्र है। क़रीब दो सौ साल के बाद अपनी इस छोटी पृथ्वी पर हम

लोगों के करने के लिए कुछ भी नहीं रहेगा। उस समय दूसरे ग्रहों में उपनिवेश स्थापित करने की चेष्टा करनी होगी।"

पल भर के लिए सभी चुप रहे। उसके वाद पीयर ने कहा—यह सब करने से हमें लाभ क्या होगा ?

"लाभ ? क्या तुम समझते हो कि मानवात्मा की अग्रगति बन्द हो जायगी ? हम लोग जितने सौर जगतों के बारे में जानते हैं, पाँच लाख वर्षों के वाद वे सब मानवों से नियंत्रित होंगे। कठिनाइयाँ अवश्य पड़ेंगी; ग्रहों-ग्रहों में परस्पर युद्ध भी होंगे; देश प्रेम और राष्ट्रप्रेम के दृश्य दिखाई देंगे। एक ग्रह के साथ दूसरे ग्रह की मैत्री और संधियाँ हुआ करेंगी। छोटे-छोटे ग्रह वड़े-वड़े ग्रहों के अधीन होंगे। इन वातों से उद्भ्रान्त होने का क्या अर्थ है ? क्या इसमें कोई भी सन्देह है कि आनेवाले लाखों वर्ष तक मनुष्य विजयाभिमान के लिए अग्रसर होता जायगा ? विश्व-इच्छा अपने रास्ते पर चल रही है; हमारी शक्ति नहीं है कि हम उसका प्रतिरोध करें। यह कोई नहीं पूछता कि हम सुखी हैं या नहीं ? जो इच्छा-शक्ति अनन्त की ओर चल रही है, उसके सामने केवल यही प्रश्न है कि उसकी उद्देश्यपूर्ति के लिए वह किसे काम में ला सकती है और किसे नहीं। वस, और कुछ नहीं !"

पीयर ने पूछा—और जब मैं मर जाऊँ, तब ?

"तुम ! क्या तुम अभी तक अपनी नब्ज़ पकड़े बैठे हो और अनन्तकाल तक जीना चाहते हो ? भाई साहब, 'तुम' नहीं हो; केवल एक व्यक्ति है—विश्व-कामना; उसी में हम सब हैं। 'हम' कहते समय मैं उसी को समझता हूँ। हम लोग उसी दिन के लिए काम कर रहे हैं जिस दिन ईश्वर हमारा ठीक मूल्य आँकने को बाध्य होंगे। मानवात्मा एक दिन न्याय की प्रार्थना करेगी; स्वर्ग के साथ, रहस्यमय के साथ, लोकातीत सर्वशक्तिमान् के साथ उस दिन मुक़ाबला होगा। और देखो, यही एकमात्र धार्मिक

भावना है जो प्रत्येक के अन्दर काम कर रही है; केवल इसी के कारण, सिर ऊँचाकर और सीधे होकर चल सकते हैं, और यह भूल जाते हैं कि हम परवश हैं, हमें मरना है।

अकस्मात् फर्डीनण्ड ने अपनी घड़ी को देखा। "एक मिनट के लिए माफ़ करना; अगर पोस्ट-आफ़िस खुला हो तो ... "—यह कहते हुए वह अन्दर चला गया। जब वह लौटकर आया तो पीयर और क्लाउस अपनी बाल्यलीला-भूमि और बाल्यकाल की बातें कर रहे थे।

कुछ देर तक और बातें हुईं; क्लाउस ने पूछा—अच्छा पीयर, तुमने ब्रिटिश कार्बाइड कम्पनी का विज्ञापन देखा है ?

"नहीं, क्या है ?"

"झील और झरनों के सहित बेसूना नदी से बाँध बनाकर उसे काम में लगाने के लिए 'टेण्डर' माँगा है। यह काम तुम्हारी लाइन में है।"

तीव्र स्वर से फर्डीनण्ड ने कहा—नहीं; मैंने पहले ही तुमसे कहा है कि वह काम उसके लिए निहायत छोटा काम है। पीयर फ़रात को लेगा।

पीयर ने कहा—मोटे तौर पर कितने का काम होगा ?

क्लाउस ने कहा—जहाँ तक मैं समझता हूँ, बीस लाख क्राउन के क़रीब लगेगा।

फर्डीनण्ड ने कहा—वह पीयर के योग्य काम नहीं है। इन छोटे कामों को छोटे मनुष्यों के लिए छोड़ दो।

दो घंटे बाद भी, जब कि मकान में सब निस्तब्ध हो गया था, पीयर को नींद नहीं आई। उस बड़े हाल में नरम फ़ेल्ट की चट्टी पहिने वह टहल रहा था और बीच-बीच में रुककर खिड़की से बाहर की ओर देख लेता था। चंद्रमा म्लान हो आया और दिन निकलने को हुआ; उसे नींद क्यों नहीं आई ?

अष्टम परिच्छेद

दूसरे दिन सवेरे मार्ले भांडार में अकेली थी। पीछे पैरों का शब्द सुनकर उसने मुँह फेरकर देखा कि क्लाउस ब्रोक है।

"प्रणाम, आप सवेरे की पोशाक में बड़ी सुन्दर लगती हैं।"

मार्ले ने नीरस स्वर से कहा—आप बहुत सवेरे उठ गये!

"अच्छा? और फर्डीनण्ड होल्म? वह तो सूर्योदय के समय से ही हिसाब-किताब लेकर बैठा है। क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हूँ? पनीर उठा लाऊँ? अच्छा, आपमें तो काफ़ी बल है! महिलाओं के मामले में मैं सदैव बीच में आ जाता हूँ।"

लम्बी बरौनियों में से ताकते हुए मार्ले ने दोहराया--हमेशा बीच में आ जाता हूँ।

"हाँ, मेरा पहला और अन्तिम प्रेम किसके साथ हुआ, आपको मालूम है?"

"नहीं तो! मैं कैसे जानती?"

"लुइसे, पीयर की छोटी बहिन। उसके साथ यदि आपका परिचय होता तो कैसा ही अच्छा होता?"

"इसके बाद?"—कहकर मार्ले ने उस बलिष्ठ भद्रपुरुष के ऊपर अपनी निगाह गड़ा दी। मालूम होता था कि क्लाउस को इस संसार में कुछ भी चिन्ता नहीं है।

"इसके बाद? ठहरिए, ज़रा सोच लूँ। नहीं, इस समय तो मैं वास्तव में और किसी नारी को याद नहीं कर सकता, केवल..."

"केवल क्या?"

"केवल आपको छोड़कर"—कहकर क्लाउस ने अभिवादन किया।

"आपकी दया है।"

"जब ऐसा ही है तो अतिथिसत्कारपरायणा गृहस्वामिनी की हैसियत से क्या आपका यह कर्तव्य नहीं है कि आप मुझे..."

"क्या चाहते हैं आप ? पनीर का टुकड़ा ?"

"नहीं, नहीं, धन्यवाद, इससे अच्छी कोई चीज़, इससे बहुत अच्छी चीज़ चाहिए !"

"क्या चाहिए तब ?"

"एक चुम्बन; मैं इस कृपा को इसी समय स्वीकार कर सकूँगा। इस समय कोई आपत्ति तो नहीं है ?"

क्लाउस एक क़दम आगे बढ़ा। हँसती हुई मार्ले भागने को मार्ग देखने लगी। परन्तु दरवाज़े और मार्ले के बीच ही में क्लाउस खड़ा था।

मार्ले ने कहा—बहुत अच्छा; परन्तु पहले आपको एक काम करना होगा। मेरे लिए आपको उस सीढ़ी पर चढ़ना होगा।

"ख़ुशी से ! यह तो बड़े मज़े की बात है !"—क्लाउस चढ़ने लगा और उसके शरीर के विपुल भार से सीढ़ी मचमचाने लगी।

"कितना चढ़ना होगा ?"

"बिलकुल ऊपर के ताक़ तक...हाँ वहीं पर ! देखिए, वह 'जार' जो आप देख रहे हैं, उसमें फलों का मुरब्बा है।"

"बहुत अच्छा ! शायद आज डिनर में मुरब्बा मिलेगा ?"

"उँगलियों के बल खड़े होकर किसी तरह क्लाउस ने उस भारी जार को उठाया; परिश्रम से उसका चेहरा लाल हो गया; जार को हाथ में लिये वह खड़ा रहा।

"अब क्या करूँ ?"

"ज़रा ठहरिए, उसे सावधानी से पकड़े रहिए, एक चीज़ लाती हूँ।"—कहकर मार्ले शीघ्रता के साथ वहाँ से निकल गई।

भारी जार को हाथ में लिये क्लाउस सीढ़ी के ऊपर खड़ा रहा। वह चारों ओर देखने लगा। जार का अब वह क्या करे ?

वह मार्ले के लौटने की प्रतीक्षा करने लगा। परन्तु वह नहीं आई। बग़ल के कमरे में कोई पियानो बजा रहा था। उसने सोचा कि मदद करने के लिए उसे बुलाया जाय। वह प्रतीक्षा करने लगा और उसका चेहरा धीरे-धीरे और भी लाल होता गया। मार्ले फिर भी नहीं आई।

फिर बहुत कोशिश के बाद जार को अपने स्थान पर रखकर, सीढ़ी से उतरकर हाँफते हुए उसने बैठक में प्रवेश किया। दरवाज़े के सामने पहुँचते ही वह रुक गया और आँख गड़ाकर ताकने लगा।

"क्या! अच्छा, मैं भी इसका....! आप यहाँ बैठकर पियानो बजा रही हैं?"

"हाँ, क्या आपको पियानो पसन्द नहीं है?

तर्जनी हिलाकर क्राउस ने कहा—"आपसे इसका बदला मैं चुकाऊँगा। ज़रा ठहर जाइए, इसका मयसूद मैंने वसूल न किया तो....!"—कहकर हँसता हुआ क्राउस सीढ़ी से ऊपर चला गया। पीयर वहाँ मौजूद था। चमड़े की आर्म-चेयर पर आराम के साथ पीठ टेकते हुए क्राउस ने कहा—मैं अभी नीचे गया था, तुम्हारी स्त्री के साथ कुछ विनोद करने के लिए। भाई, तुम्हारी पत्नी अपूर्व है!

पीयर ने उसकी ओर देखा। पीयर को उसके बाल्यकाल की याद आई, जब वह डाक्टर का लड़का था और नौकरों की लड़कियों के पीछे-पीछे फिरा करता था। उसकी पुरानी चाल अभी कुछ-कुछ बनी है; परन्तु भिन्न-भिन्न देशों की महिलाओं के साथ मिलने-जुलने के कारण कुछ शिष्टता आ गई है। आचरण में भी एक प्रकार की स्वच्छन्दता आ गई है।

क्राउस ने कहा—हाँ, मैं क्या कह रहा था? ओ हाँ, हमारा मित्र फर्डीनण्ड बड़ा अच्छा है। क्या राय है?

"अवश्य, इसमें क्या सन्देह !"

"हम तीनों जब एक साथ रहा करते थे तब जैसा लगता था, कल मुझको फिर वैसा ही लग रहा था। जब मैं उसकी बातों को सुनता हूँ तो स्वीकार करना पड़ता है। फिर जब तुम बोलना शुरू करते हो तो वह भी मेरे ही दिल की बात मालूम होती है। पीयर ! क्या तुमको ऐसा मालूम होता है कि मैं कुछ तरल-प्रकृति का हो गया हूँ ?"

"अच्छा, मैं आशा करता हूँ कि तुम्हारा वाष्पीय हल अच्छी तरह चल रहा है और तुम्हारे 'हरम' की महिलायें भी तुम्हें अधिक तंग नहीं करतीं। कुछ पढ़ते हो ?"

क्लाउस ने लम्बी साँस लेकर कहा—उसके विषय में कुछ न कहना ही अच्छा है। परन्तु कहो तो भाई—मैं पूछ रहा हूँ इससे कुछ बुरा न मानना—फर्डीनण्ड ने तुम्हारे साथ कभी भाई की तरह बातचीत की है, अथवा...

पीयर का चेहरा लाल हो गया; थोड़ी देर चुप रहकर उसने जवाब दिया—नहीं।

"नहीं ?"

"संसार में मैं उसी का सबसे अधिक ऋणी हूँ। परन्तु वह मुझे अपना समझता है या मुझे केवल दया का पात्र समझता है, यह उसने कभी स्पष्टरूप से मुझे समझने नहीं दिया।"

"वह ठीक ऐसा ही है—विचित्र मनुष्य ! लेकिन और एक बात..."

आँख उठाकर पीयर ने कहा—क्या ?

"बात यह है कि कहना ज़रा मुश्किल है। हाँ, यह मैं अवश्य जानता हूँ कि तुमने संसार की सबसे अच्छी साझे की कम्पनी में अपना धन रक्खा है।"

"हाँ, तुम भी मेरी ही तरह भाग्यवान् हो।"

"ओह, तुम्हारी तुलना में मेरा धन तो कुछ भी नहीं है। क्या तुम्हारा सारा धन फर्डीनण्ड की कम्पनी में है?"

"हाँ, पर कुछ शेयर बेच डालने का विचार है। शायद तुम समझ रहे होगे कि कुछ दिनों से मेरा खर्च कुछ अधिक हो रहा है, मेरी आमदनी से अधिक।"

"अभी मत बेचना। क्योंकि मैं समझता हूँ कि तुम्हें ज्ञात होगा कि शेयर की दर घट गई है।"

"घट गई है? यह तो मुझे मालूम नहीं था।"

"ओह, यह अवश्य ही थोड़े दिनों के लिए है। यह घटती अल्पकालिक है। जल्दी ही अवश्य माँग बढ़ेगी, दर फिर चढ़ेगी। परन्तु भाई, मैं तुम्हारे स्थान पर होता तो शेयर की दर कुछ चढ़ते ही कुछ शेयर बेच कर देश ही के किसी काम में लगा देता। जो कुछ भी कहो, यहाँ भी पर्याप्त ज़रूरी काम करने को हैं।"

पीयर की भवों पर बल पड़ने लगे। कुछ देर तक वह सामने की ओर टकटकी लगाकर देखता रहा। अन्त में बोला—नहीं फर्डीनण्ड और मेरे बीच जो सम्बन्ध है, उस हालत में यदि हम दोनों में से किसी एक को दूसरे का साथ छोड़ना अनिवार्य ही होगया तो कम-से-कम मैं ऐसा नहीं करूँगा।

"ओ, तब तो...मुझे क्षमा करना"—कहकर क्लाउस वहाँ से उठकर चल दिया।

* * * *

नामकरण धूम-धाम से हुआ। अतिथियों से मकान भर गया, भाषण भी पर्याप्त हुए। मेहमान उस दल में सबसे तरुण और सबसे प्रफुल्लित था। उसने कहा—लड़के का जन्मोत्सव बिलकुल यूरोपीयन ढङ्ग से करना चाहिए अर्थात् उसमें अग्निक्रीड़ा और नौ-विहार भी होना चाहिए।

एक अग्नि-कुण्ड के पास मार्ले और पीयर मुहूर्त भर के लिए

खड़े हुए। अरुण दीप्ति से उनके चेहरे और शरीर प्रदीप्त हो उठे; परस्पर एक दूसरे की ओर ताककर वे हँसे। फिर पीयर मार्ले का हाथ पकड़कर उसे अग्नि के पास के उस आलोक-मण्डल से बाहर ले गया। वहाँ मकान की ओर उँगली से निर्देश करते हुए कहा—मार्ले, अगर यही हमारा अन्तिम उत्सव हो!

"यह क्या कह रहे हो?"

"ओह, कुछ नहीं, केवल ऐसा अनुभव हो रहा है मानो एक अध्याय की समाप्ति हो गई है और दूसरे नवीन अध्याय का प्रारंभ हो रहा है। न जाने क्यों ऐसा मन में हो रहा है! परन्तु मार्ले, हम लोगों ने जो दिन सुख से बिताये हैं उनके लिए तुम्हें धन्यवाद देना चाहता हूँ।"

"यह सब तुम क्यों..."—वह और कुछ न कह सकी। मार्ले के पास से खिसककर पीयर तुरन्त अतिथियों के एक दल के साथ मिल गया और और लोगों की तरह प्रमोद में मग्न हो गया।

अब उन दोनों अतिथियों के बिदा होने का समय आया। पानी के ऊपर रेखा खींचता हुआ और अपने पीछे लहरों के मंडल को फैलाता हुआ स्टीमर जब रवाना हुआ, तो जेटी के ऊपर खड़े होकर पीयर ने हाथ हिलाते हुए अपने पुराने साथियों को बिदाई दी।

दूसरी रात पीयर ने फिर अकेले हॉल के अन्दर टहलते हुए और खिड़कियों से अन्धकार की ओर ताकते हुए बिताई।

क्या वह अपने जीवन के विगत और विस्तृत दिनों के उलझे हुए सुवर्ण-सूत्रों को सुलझा रहा था?

'ज्योति न बनकर क्या मैं ईंधन होकर ही संतुष्ट रहूँगा?

'मैं किस वस्तु की खोज में हूँ? सुख की; और उससे भी परे? जब मैं बालक था, इसे स्तवसंगीत का नाम दिया था, विश्व का स्तवगीत कहा था। अब उसको क्या नाम दूँगा? ईश्वर? परन्तु आलस्य करने से तो उनका दर्शन नहीं मिलेगा।

'घर से, विवाह से, पिता बनकर प्रकृति से और चारों ओर के मनुष्यों से जितनी हो सकी उतनी परिपुष्टि मैंने पाई। परन्तु मेरे अन्दर अभी कुछ ऐसी शक्तियाँ और छिपी हैं जो अभी तक काम में नहीं लाई गईं। वे कर्म चाहती हैं। वे मुक्ति चाहती हैं। वे खुलकर काम करने की स्वतन्त्रता चाहती हैं।

'बेसना में बाँध बनाने का जो काम है वह मुझे करना चाहिए। परन्तु उसका ठेका मिलेगा? यदि कमर कसकर सचमुच खड़ा हो जाऊँ तो ऐसा तो मालूम नहीं होता कि मुझे कोई हरा सकेगा। अवश्य ही मैं उस काम को पा सकूँगा। पर वास्तव में मैं उस काम को चाहता हूँ? एक घास-काटने का यंत्र बनाने की तो कोशिश कर रहा हूँ न! असल में यह मानना पड़ेगा कि मैं अपना पुराना काम छोड़कर नहीं रह सकता। हमेशा मुझे इसपात और आग को लेकर रहना पड़ेगा। मेरे लिए और कोई रास्ता नहीं है!

'गत कई वर्षों से मेरी दृष्टि जिधर पड़ी है वह तो एक कोहरे से ढँका हुआ सोनहरा स्वप्नमात्र है। इसपात अपने रास्ते से चला जा रहा है। मेरे अन्दर इसपात जाग उठा है। इसपात का गुंजन शुरू हुआ है। इसपात अपने रास्ते से आगे की ओर बढ़ता ही जायगा। उसके ऊपर मेरा कोई क़ाबू नहीं है।

विश्वनियन्ता की इच्छा अपने पथ पर बढ़ रही है। उसके साथ साथ चल सकूँ तो अच्छी बात है, नहीं तो वह मुझे कूड़ा-करकट की भाँति फेंक देगी।

सारी रात पीयर टहलता ही रहा। उस टहलने में विराम नहीं था।

दूसरे दिन सवेरे पीयर राजधानी की ओर रवाना हुआ। जब गाड़ी चलने लगी तो मार्ले उसकी ओर देखती हुई अपने मन में कहने लगी—ठीक ही कहा था कि एक नवीन अध्याय का सूत्रपात हो रहा है।

नवम परिच्छेद

पीयर के पास से एक कार्ड आया; संक्षिप्त समाचार था; लिखा था—'जगह देखने जा रहा हूँ।' पन्द्रह दिन बाद वह मानचित्रों और 'सैनों' का एक ढेर लेकर लौट आया; कहा—कुछ पिछड़कर पहुँचा। ख़ैर, देखा जायगा।

पीयर ने अपने कमरे में जाकर दरवाज़ा बन्द कर लिया। इतने दिनों के बाद अब मार्ले ने पीयर को काम करते देखा। सवेरे मार्ले ने देखा, पीयर सीटी बजाते हुए टहल रहा है। उसके बाद चुपचाप, वह अपने टेबुल के सामने जा खड़ा हुआ। हिसाब करने और नोट लिखने में मग्न हो गया। फिर पैरों की चाप सुनाई दी। पीयर गीत गा रहा था। उसके लिए यह एक नया अनुभव था। उसे ऐसा लगता था मानो उसके हृदय में आनन्द का एक भंडार है; प्रेम, विश्व-सौन्दर्य और आनन्द की सम्पत्ति संचित हो रही है, जो कि संगीत के रूप में प्रकट होना चाह रही है। बाँध बनाने की योजना को वह संगीत से अभिनन्दित क्यों न करे? गणित अवश्य रूक्ष विषय है, पर हृदय में उमंग होने पर उसमें भी रस आ सकता है। वह और ज़ोर से गाने लगा। मार्ले ने जान भी न पाया कि वह गान कब समाप्त हुआ और कब पीयर खाट पर सो रहा? क्योंकि सवेरे जब उसकी आँख खुली तब उसने देखा कि पीयर धीरे-धीरे गुनगुनाता हुआ कमरे में चहल-क़दमी कर रहा था।

अन्त में काम ख़त्म हुआ और उसने अपना 'टेण्डर' भेज दिया। अब पीयर पहले से भी अधिक अधीर होने लगा। कई दिन बीत गये; पीयर को नींद नहीं आती थी, भूख भी नहीं

"चौबीस लाख फ्रांक।"

वृद्ध महाशय अपने डेस्क पर हाथ रखकर गहरी साँस खींचते हुए टकटकी लगाकर पीयर की ओर देखने लगे। इस अङ्क के परिमाण को सुनकर वे हैरान-से हो गये। इतनी बड़ी रक़म की तुलना में उनका अधिकृत धन कुछ भी नहीं था।

हकलाते हुए उन्होंने कहा—मैं...मैंने ठीक समझा नहीं। बीस लाख कह रहे हो न?

"हाँ, अवश्य ही आपको यह रक़म तुच्छ मालूम हो रही होगी। लेकिन मैंने पाँच करोड़ फ्रांक तक का काम किया है।"

"क्या! कितने का कहते हो?"—इउथोग आकुलता के साथ कमरे में टहलने लगे। वे अपने बाल खींचने लगे और यह सन्देह करते हुए कि कहीं पीयर का दिमाग़ तो नहीं बिगड़ गया, उसकी ओर आँख गड़ाकर देखने लगे।

"और उसमें तुम्हें लाभ कितना होगा?"

"क़रीब दो लाख।"

दो लाख बहुत बड़ी रक़म थी। इउथोग ने जीवन में इतनी बड़ी रक़म का स्वप्न भी न देखा था।

जब पीयर ने ज़मानत की बात छेड़ी उस समय वे कमरे से जा रहे थे। लेकिन वे रुक गये और मुँह फेरकर बोले—क्या? ज़ामिन? मुझको बीस लाख के लिए ज़ामिन होने को कह रहे हो?

"नहीं, कम्पनी चार लाख के लिए ज़मानत माँगती है।"

थोड़ी देर तक निस्तब्ध रहकर उन्होंने कहा—हाँ, समझा; पर...पर मैं उतने रुपयों का ज़ामिन होने लायक़ नहीं हूँ।

"एक लाख के लिए आप ज़ामिन हो सकते हैं?"

फिर कुछ देर तक सन्नाटा रहा। इसके बाद कमरे के दूसरे कोने से जवाब आया—यह भी बहुत है।

लगती थी। और भी दिन बीत गये। अन्त में एक दिन सबेरे बच्चे के सोने के कमरे में पीयर ने तूफ़ान की तरह प्रवेश किया।

"मार्ले, टेलिफ़ोन आया है। कम्पनी के डाइरेक्टरों ने मीटिङ्ग में बुलाया है। अभी जाना है। आओ, जल्दी मेरा सामान ठीक कर दो—जल्दी!"—बस, तुरन्त पीयर फिर शहर की ओर चल दिया।

अब अधीर होकर मार्ले के टहलने की पारी आई। पीयर को काम मिले या न मिले, उससे मार्ले का क्या? पर तीव्र आग्रह के साथ वह एक कामना करती थी—पीयर की जय हो।

दो दिन के बाद टेलिग्राम आया—"बधाई, मार्ले!" टेलिग्राम को सिर के चारों ओर घुमाती हुई मार्ले सारे कमरे में नाचने लगी।

दूसरे दिन पीयर घर लौट आया और कमरे में टहलने लगा।—"मार्ले, तुम्हारे पिता जी क्या कहेंगे, कह सकती हो?"

"पिता जी! किसमें क्या कहेंगे?"

"अगर मैं उनको दो लाख क्राउन के लिए ज़ामिन होने को कहूँ?"

"क्या, पिता जी को भी इसमें रहना होगा?"—कहकर मार्ले आँखें निकालकर उसकी ओर देखने लगी।

"अगर वे राज़ी न होंगे तो मैं ज़बरदस्ती नहीं करूँगा। परन्तु पहले उन्हीं से कहूँगा।"—कहकर पीयर शहर की ओर रवाना हुआ। बग़ल में क़ाग़ज़-पत्र दाबे पीयर ने दरवाज़ा खटखटाया। हेर इउथोग गैसबत्ती जलाकर अमेरिकन रोल-टॉप डेस्क के सामने बैठने ही को थे कि पीयर अन्दर घुसा। दोनों आमने-सामने बैठ गये। पीयर ने शान्त और दृढ़ भाव से विषय को समझाया।

"अन्दाज़ से कितने रुपयों का काम होगा?"—इउथोग ने प्रश्न किया।

"चौबीस लाख फ्रांक।"

वृद्ध महाशय अपने डेस्क पर हाथ रखकर गहरी साँस खींचते हुए टकटकी लगाकर पीयर की ओर देखने लगे। इस अङ्क के परिमाण को सुनकर वे हैरान-से हो गये। इतनी बड़ी रक़म की तुलना में उनका अधिकृत धन कुछ भी नहीं था।

हकलाते हुए उन्होंने कहा—मैं...मैंने ठीक समझा नहीं। बीस लाख कह रहे हो न ?

"हाँ, अवश्य ही आपको यह रक़म तुच्छ मालूम हो रही होगी। लेकिन मैंने पाँच करोड़ फ्रांक तक का काम किया है।'

"क्या! कितने का कहते हो ?"—इउथोग आकुलता के साथ कमरे में टहलने लगे। वे अपने बाल खींचने लगे और यह सन्देह करते हुए कि कहीं पीयर का दिमाग़ तो नहीं बिगड़ गया, उसकी ओर आँख गड़ाकर देखने लगे।

"और उसमें तुम्हें लाभ कितना होगा ?"

"क़रीब दो लाख।"

दो लाख बहुत बड़ी रक़म थी। इउथोग ने जीवन में इतनी बड़ी रक़म का स्वप्न भी न देखा था।

जब पीयर ने ज़मानत की बात छेड़ी उस समय वे कमरे से जा रहे थे। लेकिन वे रुक गये और मुँह फेरकर बोले—क्या ? ज़ामिन ? मुझको बीस लाख के लिए ज़ामिन होने को कह रहे हो ?

"नहीं, कम्पनी चार लाख के लिए ज़मानत माँगती है।"

थोड़ी देर तक निस्तब्ध रहकर उन्होंने कहा—हाँ, समझा; पर...पर मैं उतने रुपयों का ज़ामिन होने लायक़ नहीं हूँ।

"एक लाख के लिए आप ज़ामिन हो सकते हैं ?"

फिर कुछ देर तक सन्नाटा रहा। इसके बाद कमरे के दूसरे कोने से जवाब आया—यह भी बहुत है।

"आपको यदि कोई आपत्ति हो तो मैं दूसरा इन्तज़ाम कर सकता हूँ। मेरे जो दो मित्र आये थे... "—कहते हुए पीयर अपने क़ाग़जात बटोरने लगा।

"नहीं, नहीं, इतनी जल्दबाज़ी क्यों कर रहे हो? तुम एकाएक पहाड़ की तरह आदमी के ऊपर टूट पड़ते हो! मुझे सोचने तो दो, कम-से-कम कल तक। और क़ाग़जात भी मुझे ज़रा देखना होगा।"

इउथोग की रात अशान्ति में बीती। मानों उनके पैर के तले से ज़मीन खिसक गई थी। उनके मन को कोई सुदृढ़ आश्रय नहीं मिल रहा था। उनका दामाद एक बड़ा भारी आदमी है, इसमें उनको कोई भी सन्देह न था। परन्तु एक लाख की बाज़ी लगाना ज़मीन जयदाद पर नहीं, किसी बड़े कारबार पर नहीं, एक बाँध की सफलता पर! यह एक अनोखी बात थी। बाहर के विशाल जगत् के लिए अथवा भविष्य के लिए यह सच भले ही हो, परन्तु उनको यह एक अद्भुत प्रकार का काल्पनिक व्यापार मालूम होने लगा। क्या इस काम में उतरने का साहस उनको है? यह तो एक बाज़ी मात्र है, एकदम जुआ का खेल है। नहीं, उन्हें 'नहीं' ही कहना पड़ेगा। तो क्या आख़िरकार वह अंधों में काना राजा निकले? नहीं, उन्हें 'हाँ' कहना पड़ेगा। हा भगवन्! वे एक हाथ से दूसरे हाथ को मलने लगे। पसीने से हाथ चिपचिपे-से हो गये थे और उनका मस्तिष्क चक्कर खा रहा था। यह एक परीक्षा थी। प्रलोभन था। उनको प्रार्थना करने की इच्छा होने लगी। परन्तु उससे लाभ ही क्या? उन्होंने तो स्वयम् ही ईश्वर को त्याग दिया है।

दूसरे दिन टेलिफोन से पुकार आई—वृद्ध के घर पर, डिनर के लिए, मार्ले और पीयर का निमंत्रण।

परन्तु जब वे सब खाने बैठे तो बात-चीत असम्भव हो उठी; सभी के मन में जो भावनायें चल रही थीं, उनके बारे में बातचीत शुरू करने में प्रत्येक को सङ्कोच-सा मालूम हो रहा था। वृद्ध का चेहरा अनिद्रा के कारण पीला पड़ गया था और उनकी स्त्री चश्में के भीतर से एक बार इसकी ओर एक बार उसकी ओर देख रही थी। पीयर शान्त था और उसके चेहरे पर मुस्कान थी।

अन्त में जब 'क्लैरेट' (शराब) आई; फ्रू इउथोग ने अपना गिलास उठाकर पीयर की स्वास्थ्यकामना करते हुए पान किया और कहा—पीयर, मैं तुम्हारा सौभाग्य मनाती हूँ। हम लोग तुम्हारे रास्ते में रुकावट पैदा नहीं करेंगे। तुम जब इसे अच्छा समझ रहे हो तब यही ठीक है। मैं आशा करती हूँ कि इससे तुम्हारा अच्छा ही होगा।

मार्ले ने माता-पिता की ओर देखा; जब तक डिनर चलता रहा, मार्ले उद्विग्न और चिन्तित बनी रही। अब उसकी आँखों में पानी भर आया था।

इउथोग की पत्नी ने फिर वृद्ध इउथोग को अभिवादन करते हुए कहा—मामला तय हो चुका है।

दोनों पति-पत्नी सम्भवतः रात को सलाह करते रहे थे और अन्त में इसी निर्णय पर पहुँचे थे।

दो दिन बाद अक्टोबर के कोमल सूर्यालोकित दिन में पीयर शहर गया। खिड़की पर अपनी सास को खड़े देखकर वह जाकर कुछ फूल ले आया और फिर उनके पास हाजिर हुआ।

"धन्यवाद, पीयर !"—कहकर वे आसमान की ओर टकटकी लगाये रह गईं।

पीयर ने पूछा—माता, आप क्या सोच रही हैं ?

"मैं तुम्हारे बारे में सोच रही थी, पीयर ! तुम्हारे और मार्ले के विषय में।"

"यह आपकी बड़ी दया है !"

"देखो पीयर, तुम्हारे दुःख के दिन आरहे हैं...बहुत तकलीफ़..."—कहकर पश्चिम के पीले आसमान की ओर देखकर उन्होंने सिर हिलाया।

"दुःख के दिन ? क्यों ? हम लोगों को तकलीफ़ क्यों होगी ?"

"क्योंकि तुम चारों ओर से फूल-फल रहे हो। पीयर, यह निश्चय जानना कि ऐसी अदृश्य शक्तियाँ हैं जिनको तुम्हारा यह सुख बरदाश्त नहीं हो रहा है।"

पीयर ने मुसकराकर पूछा—आपका ऐसा ख्याल है ?

लम्बी साँस खींचकर, दूर की ओर देखते हुए उन्होंने कहा—मैं यह जानती हूँ, कुछ समय से तुमने कुछ ऐसी छायाओं को, जो दिखाई नहीं पड़तीं, अपना दुश्मन बना लिया है। अदृश्य होने पर भी वे हमें घेर रही हैं। मैं उन्हें रोज़ देखती हूँ। कई वर्षों से मैंने इन्हें देखना सीखा है। मैंने इनके साथ लड़ाई की है। यह अच्छा है कि छायामूर्त्तियों से परिपूर्ण मकान में मार्ले ने गाना सीखा है। ईश्वर करे कि मार्ले संगीत-द्वारा तुम्हारी भी रक्षा कर सके।

पीयर जब उस मकान से बिदा होने लगा तो उसे ऐसा अनुभव हुआ, मानो उसकी पीठ में कँपकँपी हो रही है। रास्ते में आकर उसने सोचा कि सास का दिमाग़ ठीक नहीं है। फिर अपनी गाड़ी पर सवार होकर वह घर की ओर चल दिया।

दशम परिच्छेद

"पीयर, अभी तुम नहीं जाओगे ? नहीं तुम जाने नहीं पाओगे ! मुझे अकेली छोड़कर मत जाओ ।"

"मार्ले, प्यारी ! बेवकूफ़ी मत करो । नहीं, नहीं, जाने दो, प्यारी !" मार्ले पीछे से पीयर के गले लिपट गई थी, पीयर अपने को छुड़ाने की कोशिश करने लगा ।

"पीयर, पहले तो तुम ऐसे नहीं थे । क्या तुम्हें अब मेरी और बच्चों की कुछ भी परवाह नहीं है ?"

"मार्ले, प्रियतमे ! ऐसा मत सोचो कि जाने में मुझे अच्छा लग रहा है । पर तुम अवश्य ही यह नहीं चाहती हो कि इस साल भी बाँध फिर टूटे । अगर ऐसा हुआ तो मैं कहता हूँ कि सर्वनाश हो जायगा । बस हुआ, अब मुझे जाने दो ।"

परन्तु मार्ले ने उसे मज़बूती से पकड़ रक्खा—"बाँध का तो जो होगा सो होगा; पर मेरा क्या होगा ? तुमको तो उसी की अधिक चिन्ता है ?"

"तुम्हारा सब ठीक होगा, प्यारी ! डॉक्टर और दाई ने वचन दिया है कि ख़बर मिलते ही वे आ हाज़िर होंगे । पहले भी कुछ गड़बड़ी नहीं हुई ।...इस समय मैं किसी तरह नहीं ठहर सकता । हम आज बहुत कुछ ख़तरे में हैं । अच्छा, नमस्कार ! ज़रूर टेलिग्राम करना..."—पीयर ने आँखों का चुम्बन किया और उसे धीरे से कुर्सी पर बैठाकर तुरन्त कमरे से निकल गया । उसने स्पष्ट रूप में यह अनुभव किया कि मार्ले की भयार्त्त दृष्टि उसका पीछा कर रही है ।

इसपात की अग्रगति बन्द नहीं होगी। वह मनुष्यों के लिए कुछ भी परवाह नहीं करता। मार्ले को इस संकट में से अकेले ही गुज़रना पड़ेगा।

पिछले दिनों वह जिस प्रकार काम का स्वप्न देखा करता था, यह वैसा काम नहीं था। पहले की तरह अब भी सफलताप्राप्ति के साथ ही साथ नित्य वस्तु की आकांक्षा उससे बार-बार यही प्रश्न करती रहती थी—कहाँ? किसलिए? और इसके बाद है क्या?

धीरे-धीरे बाधायें, विपत्तियाँ बढ़ने लगीं। केवल एक चिन्ता ने अब पीयर के समग्र मन पर अधिकार कर लिया। इस काम को पूरा करना ही होगा। अच्छा हो या बुरा; मैंने इस काम को उठाया है, तो इसे पूरा करना है।

वह संग्राम करता गया। यह केवल शक्ति-परीक्षा थी, वस्तुगत बाधा-विघ्नों के साथ लड़ाई थी। हाँ; परन्तु इतना ही सब नहीं था। कभी-कभी उसके मन में ऐसा होता था कि वह किसी बृहत्तर शक्ति के साथ, किसी भयानक शक्ति के साथ, लड़ाई कर रहा है। मानों उसके जीवन में एक नवीन शक्ति के—दुर्भाग्य के—कार्य शुरू हुए हैं; मानों उसकी इच्छाशक्ति के बाहर की किसी शक्ति ने उसके साथ चाल चलना शुरू किया है।

उसे याद आया, वृद्ध इउथोग ने कहा था—

“तुम्हारा हिसाब-किताब सब ठीक हो सकता है, सब सूक्ष्म बातें भी निर्मूल हो सकती हैं। तथापि करने के समय सब बिलकुल चौपट हो सकता है।”

बेसना प्रपात पर एक के बाद एक दुर्घटना होने लगी। इस पर एकाधिक बार समाचार-पत्रों में टिप्पणियाँ हुईं—“बेसना प्रपात में फिर दुर्घटना; इसके लिए उत्तरदायी कौन है?”

और सब दुर्घटनाओं से बड़ी एक दुर्घटना यह हुई कि माल-असबाब के लिए जो प्रधान ठीकेदार थे उन्होंने टाट उलट दिया। फलतः सामान की दर बढ़ गई और उसके लिए कई हज़ार का अतिरिक्त ख़र्चा बढ़ गया।

रुपयों का नुक़सान हो तो क्या, पीयर को सफलता प्राप्त करनी ही होगी। उसके ईर्ष्यालु प्रतिद्वन्द्वियों ने कुछ दिनों से पत्रिकाओं में उसकी योजना की निन्दा करना प्रारम्भ कर दिया था। परन्तु उन लोगों को बेवक़ूफ़ साबित करने की आशा अभी तक पीयर के मन में थी।

बरफ़ गिरने लगी! कठिनाइयाँ और भी बढ़ गईं। पर पीयर को काम पूरा करना था।

मिस्र की जलती हुई धूप में उसने काम किया है! और आज यहाँ पर! परन्तु इसपात बढ़ता जायगा—आगे! आगे! और यह लहर भी अबाधगति से समस्त संसार के ऊपर चलती जायगी।

'अगर इस वर्फ़पात से पानी बरसना शुरू हो जाय तो! अवश्य बाढ़ आ जायगी। तब तो रात ही को मज़दूरों को बाँध बचाने के लिए निकलना पड़ेगा। फिर एक दुर्घटना होगी; ठीके के निर्दिष्ट समय के अन्दर काम पूरा करना तो तब एक प्रकार असम्भव ही हो जायगा। इस नियत तारीख़ से आगे बढ़ने के माने रोज़ाना एक हज़ार क्राउन का जुरमाना है।

'अन्धकार होता आ रहा है!

'मार्ले! मार्ले इस समय कहाँ होगी और किस हालत में!'

दो दिन बाद पीयर लेटा हुआ था; डाक का थैला आया। बिछौने पर थैले से चिट्ठियों को गिराते ही पीयर ने क्लाउस ब्रोक का एक पत्र देखा।

क्या मामला है ? चिट्ठी को हाथ में लेते समय उसका हाथ क्यों काँप उठा ? अवश्य ही मित्र क्लाउस जिस प्रकार साधारण पत्र लिखता है यह भी वैसा ही है :—

"प्यारे मित्र, इस पत्र को लिखने में दुःख हो रहा है। परन्तु आशा है कि मेरी सलाह मानकर तुमने कुछ धन वहाँ से निकालकर नारवे में लगा रक्खा होगा। जो हो, बात यह है कि फर्डीनएड होल्म भाग गया है, अथवा जेल में है, या किसी और बुरी हालत में है। तुम भली भाँति जानते हो कि इस देश में जब कोई बड़ा आदमी लापता हो जाता है, तो उसके बारे में खोज करना निरर्थक है।

"मैं जानता हूँ, तुम इसे शान्त होकर पढ़ोगे ! मैं पाई-पाई खो बैठा हूँ; परन्तु तुम्हारा तो वहाँ पर मकान है, कारख़ाना भी है। मैं निश्चित जानता हूँ कि फिर तुम कमा लोगे; मैं तुम्हें पहचानता हूँ ! आशा करता हूँ, बेसना-बाँध में सफलता मिलेगी।

सदा तुम्हारा,
क्लाउस ब्रोक"

पुनश्च :—हाँ, यदि आगे मेरा समाचार न मिले, तो समझ लेना कि कुछ हुआ है।

बाहर खालों से पानी प्रपात में गिर रहा था। पीयर कुछ देर तक लेटा रह गया। वह अपने दोनों मित्रों की याद कर रहा था। उसके मन में यह भावना होने लगी कि अब मैं ग़रीब हूँ; और यह भी कि ज़मानत का बड़ा हिस्सा अब वृद्ध लोरेंज इउथोग को ही देना पड़ेगा।

उसने मन से कहा—पीयर, अब तो तुम साफ़ देख रहे हो कि भाग्य-देवता अब तुम्हारे प्रतिकूल चलने में व्यस्त हैं। अब तुमको अकेले ही संग्राम करना होगा।

एकादश परिच्छेद

पतझड़ के अंतिम दिन थे। एक दिन संध्या के समय मार्ले घर में बैठी हुई पीयर की प्रतीक्षा कर रही थी। उसके आने में कम से कम घण्टा भर बाक़ी था; तथापि रास्ते पर पहियों का शब्द सुनने के लिए उसके कान लगे हुए थे।

उसके मन में विचारों का छोटा-सा स्रोत बहने लगा—'मैं उससे दूर रहती थी, प्रायः उदासीन रहती थी, संभवतः कुछ अधिक ही उदासीन थी; अब भी समय है क्या ? नहीं, अब तो और बातों पर उसका ध्यान है। वे दिन बीत गये हैं जब सभी विपत्तियों में मैं उसे पर्याप्त सान्त्वना दे सकती थी। लेकिन, क्या वह दिन एकदम चला गया ? हाँ, समय व्यतीत हो गया है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। उस दिन उसने कोई भी शिकायत नहीं की थी। उसका आचरण शान्त और धीर था। परन्तु उसका मन कितने गुरुत्वपूर्ण विषयों की भावना से पूर्ण था, वहाँ पर स्त्री-पुत्रों के लिए कोई भी जगह नहीं थी। आज संध्या को भी वैसा ही होगा क्या ? उसे सन्तुष्ट करने के लिए मैंने जो यत्न से प्रसाधन किया है उसे वह देखेगा ? मुझे आलिंगन करके उसे आनन्द होगा ?'

सात बज गये। सिसकती हुई लुइसे उसके पास आई। उसे गोद में लेकर हताश हो वह खिड़की के पास एक कुर्सी पर बैठ गई और प्रतीक्षा करने लगी। आठ बज गये; लुइसे के सोने का समय हो गया और मार्ले उसकी पोशाक उतारने लगी।

मार्ले फिर कमरे में बैठकर प्रतीक्षा करने लगी। अन्त में गाउन पहनकर वह बाहर निकल गई।

अस्फुट शुभ्र ज्योतिर्मय कोहरे के नीचे हेमन्त-ऋतु के अन्धकार में शहर निद्रित पड़ा था। काले पहाड़ के ऊपर से अगणित नक्षत्रों से परिपूर्ण आकाश दिखाई देता था। वहीं पर कहीं पीयर है; शायद बहुत दूर पर किसी गाँव के रास्ते पर से उसका घोड़ा अपने इच्छानुसार अन्धकार में धीरे-धीरे चल रहा है और उसका मालिक सिर झुकाये सोचता हुआ उस पर बैठा है।

"हे ऊर्ध्वलोकवासी! तुम हमारी सहायता करो! उसे सहायता दो; क्योंकि कुछ दिनों से वह बड़ी विपत्ति में पड़ा है।"

परन्तु तारकापूर्ण आकाश बर्फ़ की तरह ठंढा और उदासीन मालूम होता है; इसके पहले इसने लाखों मनुष्यों की प्रार्थनायें सुनी हैं, पर मनुष्य की प्रार्थना उसके लिए कुछ भी नहीं है।

सिर नीचा कर मार्ले फिर मकान के अन्दर आई।

पहाड़ की चढ़ाई से गाड़ी हाँककर जब पीयर मकान की ओर जा रहा था उस समय आधी रात हो गई थी। उज्ज्वल वातायन-युक्त उस विशाल प्रासाद के दृश्य ने उसके थके हुए मन पर ऐसा आघात किया कि अपनी इच्छा के विरुद्ध उसने घोड़े को कोड़ा मार दिया।

उसने बैठक का दरवाजा खोला—कोई नहीं था; लेकिन रोशनी थी और आराम भी था। कमरे के भीतर से उसने दूसरे कमरे में प्रवेश किया; मार्ले कुर्सी पर अकेली बैठी थी, बाँह पर सिर रखकर वह सो गई थी।

क्या इतनी देर से वह प्रतीक्षा कर रही थी?

अन्त में कन्धे पर उसके हाथ के स्पर्श से मार्ले जग उठी—"अरे! तुम आ गये?"

"प्यार! मार्ले!" दोनों ने परस्पर आलिंगन किया और पीयर ने मार्ले के ललाट का चुम्बन किया। परन्तु मार्ले ने समझ लिया कि पीयर का मन अन्य विचारों में व्यस्त है।

मार्ले ने उससे कुछ भी पूछा नहीं; वह दिखलाना चाहती थी कि यदि वे परस्पर प्यार करें तो इस संकट को सहन करना आसान हो जायगा।

मानो अनुपस्थित दृष्टि से देख रहा है—इस प्रकार से पीयर ने एक बार मार्ले की ओर देखा। उसने पूछा—"मार्ले, तुम्हारे पिता जी की जायदाद का दाम क्या हो सकता है?"—जहाज़ डूबते समय सेतु पर खड़े होकर कप्तान जिस प्रकार शान्त स्वर से आदेश देता है, पीयर के ये शब्द भी वैसे ही थे।

"डियर, आज रात को यह सब सोचने की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं तुम्हारा स्वागत कर रही हूँ"—कहकर मुसकराते हुए मार्ले ने पीयर का हाथ पकड़ लिया।

"धन्यवाद"—कहकर पीयर ने मार्ले की उँगलियों को दबाया; परन्तु उसका मन अभी बहुत दूर था। उस रात को उसने भोजन भी अनुपस्थित मन से किया।

"जानते हो, लुइसे ने वायोलिन बजाना शुरू किया है। वह छोटी-सी लड़की जैसा बजाती है उसकी कल्पना भी तुम नहीं कर सकोगे।"

"अच्छा?"

"आस्टा के एक दाँत और निकला है; उसके निकलने के समय बेचारी को बड़ा कष्ट हुआ।"

सन्तानों को पीयर के सामने लाकर मानो मार्ले यह कहना चाहती थी कि और कुछ चाहे रहे या न रहे, ये तो हमारी हैं ही।

पीयर ने पल भर के लिए मार्ले की ओर देखकर कहा—मार्ले, मुझसे शादी करना तुम्हारे लिए ठीक नहीं हुआ। न करना तुम्हारे लिए भी अच्छा था, तुम्हारे माता-पिता के लिए भी।

"क्या कह रहे हो, पीयर! यह सब फिर ठीक हो जायगा।"

वे सोने के लिए कपड़े बदलने लगे। मार्ले सोचने लगी—पीयर ने अभी तक मुझे नहीं देखा है।

ज़रा-सा हँसकर मार्ले ने कहा—आज शाम को बैठी-बैठी मैं उस दिन की याद कर रही थी जिस दिन हम लोगों की पहली भेंट हुई थी। शायद तुमको कभी उसकी याद नहीं आती?

पीयर ने आधा कपड़ा उतारा था; मुँह फेरकर उसने मार्ले की ओर देखा; उसकी बातें पीयर के कानों में अद्भुत और अस्वाभाविक मालूम हुईं। उसने सोचा—'मैं कैसा हूँ; काम-धाम कैसा चल रहा है इस बारे में यह एक बार भी नहीं पूछती है!' परन्तु इसके बाद मार्ले को देखते-देखते अन्त में पीयर की आँखें खुल गईं; मार्ले की हँसी के पीछे वह उसके चिंताकुल हृदय की छाया देखने लगा।

"ओह, हाँ, वह सुदूर ग्रीष्मकाल ख़ूब याद आता है। पहाड़ों में छुट्टी का जीवन था और उसके उस जीवन में सर्वप्रथम स्टोव में क़हवा बनाते हुए एक लड़की उसकी ओर देखकर हँसी थी।" पीयर के विषण्ण हृदय में एक अनिर्वचनीय आनन्द की लहर बह गई।

मार्ले को आलिंगन करने के लिए वह आगे नहीं बढ़ सका। सामने की ओर टकटकी लगाकर निस्तब्ध खड़ा रह गया और ओंठों को दबाकर अपने मन में उसने प्रतिज्ञा की कि सब बाधाओं को चूर्ण कर रास्ता निकाल लूँगा और मेरा जो कुछ है, सबकी रक्षा करूँगा।

बत्ती बुझाकर शीघ्र ही अन्धकार में गहरी साँस लेते हुए दोनों अलग-अलग बिछौनों पर सो गये। आँख बन्दकर पीयर सोचने लगा। अपने प्रियजनों की रक्षा के लिए उस अन्धकार में वह रास्ता ढूँढ़ने लगा। उस अन्धकार में पीयर के प्रेमस्पर्श के लिए मार्ले बहुत देर तक प्रतीक्षा करती रही और अन्त में उसने रूमाल निकालकर उससे अपनी आँखें ढँक लीं। मूक क्रन्दन के वेग से उसकी सारी देह काँपने लगी।

द्वादश परिच्छेद

वृद्ध लोरेंज इउथोग अपनी धनवती बहन से मिलने के लिए कभी-कभी जाया करते थे। आज चढ़ाई पर के थकानेवाले रास्ते से होकर वे वहाँ गये और दोनों प्रभुत्वप्रिय भाई-बहन आमने-सामने बैठ गये।

मर्दों की तरह अपने घुटनों पर हाथ फेरते हुए मॉरिट ने कहा—तो यहाँ आने का रास्ता आज तुम्हें मिल ही गया !

चौड़े कन्धों को सीधा कर इउथोग ने कहा—हाँ, सोचा कि देख जाऊँ कि कैसी हो ?

"धन्यवाद, बहुत अच्छी तरह से हूँ। मेरा तो कोई दामाद नहीं है न, इसलिए मेरा दिवाला निकलने की कोई सम्भावना नहीं है।"

वृद्ध ने अपनी लाल आँखों को बहन के मुख पर निबद्धकर कहा—मैं भी दिवालिया नहीं हूँ।

"शायद। लेकिन उसकी खबर क्या है ?"

"वह भी दिवालिया नहीं है। वह फिर धनी हो जायगा।"

"वह ? धनी ! तुम कहते क्या हो ?"

"हाँ, हाँ, धनी ! वह एक साल के भीतर ही फिर धनी हो जायगा ! पर तुम्हें उसकी सहायता करनी पड़ेगी।" मॉरिट चौंक पड़ी। उसने अपनी कुर्सी को पीछे की ओर खिसका लिया और भौचक्के-से स्वर में कहा—"मुझे ? मुझे सहायता करनी पड़ेगी ? हाँ, हाँ, ज़रा बताओ न ! कितने लाख खोये हैं उसने उस खाई, बाँध—या क्या कहते हैं उसे—उसके काम में ?"

"उसने जो वादा किया था, काम पूरा करने में उससे छः

महीने अधिक लग गये; परन्तु कम्पनी यह देखकर कि कैसा अद्भुत काम हुआ है, जुर्मानों की रक़म का परिमाण आधा कर देने के लिए राज़ी हो गई है।"

"हाँ; पर मैं तो सुनती हूँ कि ठीकेदारों को उसने रुपया नहीं दिया ? उसका क्या हुआ ?"

"अब उसने उन सबका दाम पूरा-पूरा चुका दिया है। बैंक ने सब इन्तज़ाम कर दिया है।"

"हाँ, हाँ, तुम दोनों ने इसके लिए अपना सब कुछ गहने रख दिया न ? तुम दोनों को अच्छी तरह बेत लगाने चाहिए !"

इउथोग अपनी डाढ़ी पर हाथ फेरने लगे—"रुपये के हिसाब से इस काम में सफलता नहीं मिली, यह मैं मानता हूँ; परन्तु पत्रिकाओं में इंजीनियरों ने क्या लिखा है, वह तुम्हें दिखलाता हूँ। यह देखो, पीयर और उसके बाँध की तसवीरों के साथ एक लेख निकला है।"

विधवा ने लेख की ओर देखा तक नहीं, कहा—"अच्छी बात है। पत्रिकाओं की तसवीरों से वह अपने परिवार का पेट भरे।"

काग़ज़ों को फिर पाकेट में रखकर उसके भाई ने कहा—फिर जल्दी ही वह सबसे ऊपर अपना स्थान कर लेगा।

मारिट दुहराती हुई बोली—फिर ऊपर स्थान करेगा ? शायद फिर अण्ड-बण्ड बातों से तुम्हें फुसलाया है ?

"उसने घास काटने की एक नई कल बनाई है। क़रीब पूरी हो चुकी है। विशेषज्ञों की राय से इसका दाम दस लाख होगा। इस वर्ष काम चलाने के लिए तुमको हमारी मदद करनी पड़ेगी। यदि तुम तीस हज़ार के लिए जामिन हो जाओ तो बैंक..."

मारिट ने घुटनों पर ज़ोर से थप्पड़ मारकर कहा—यह सब मुझसे नहीं होने का !

"बीस हज़ार के लिए ?"

"बीस पैसे के लिए भी नहीं।"

लोरेंज इउथोग ने बहन के चेहरे पर दृष्टि जमाई। उनकी आँखें क्रोध से जलने लगीं। शान्त स्वर में उन्होंने कहा —मॉरिट, यह काम तुमको करना ही पड़ेगा—पाकेट से पाइप निकाल उसमें तम्बाकू डालकर वे आग सुलगाने लगे।

दोनों परस्पर टकटकी लगाकर कुछ देर तक बैठे रहे; इतनी देर तक दोनों एक दूसरे को देखते रहे और अन्त में दोनों इच्छा के विरुद्ध हँस पड़े।

"शायद तुमने पत्नी को साथ लेकर संन्यासव्रत ग्रहण करने का निश्चय किया है ?"

"यदि मेरा ईश्वर में विश्वास है, तो मैं शान्ति से बैठा रहूँगा और जो कुछ होगा, उसे देखूँगा और ईश्वर से प्रार्थना करता रहूँगा। मुझे मनुष्य की कार्य-शक्ति पर बहुत अधिक विश्वास है। और अब तक इसी कारण से मैं यहाँ बसता भी रहा हूँ।"

इस दलील से बुढ़िया कुछ प्रभावित हुई। उसे चर्च में विश्वास नहीं था। क्योंकि वह जानती थी कि ईश्वर अन्यायी है—उसने उसे सन्तान जो नहीं दी थी।

आसन छोड़कर उसने कहा—क़हवा लाऊँ ?

"अब काम की बात कह रही हो।"—कहते हुए भाई की आखें उज्ज्वल हो उठीं। इस बहिन को और उसके चाल-चलन को वे अच्छी तरह जानते थे। पाइप जलाकर अब इउथोग आराम के साथ कुर्सी पर लेट गये।

त्रयोदश परिच्छेद

ढालने के कारख़ाने में आग और इस्पात के साथ फिर पीयर का मल्ल-युद्ध प्रारम्भ हुआ। वस्तु को बनाने के लिए 'ड्राइंग' (चित्र) ज़रूरी है। दिमाग़ में उसके बारे में धारणा भी अच्छी चीज़ है। लेकिन उसकी कल्पना को वास्तव में मॉडेल में परिणत करने के लिए उसने जिन लोगों को नियुक्त किया है वे सब धीरे-धीरे काम करते हैं। तो, जो करना ही है उसे वह अपने हाथों से ही क्यों न करे? जब मिस्त्री-मज़दूर सबेरे कारख़ाने में आये उस समय छोटे कमरे के अन्दर हथौड़े का पीटना शुरू हो गया था। और जब वे शाम को जाने लगे, मालिक ने उस समय भी काम बन्द नहीं किया था। रात को भी लोगों ने उसे काम करते सुना था।

नई मशीन का लकड़ी का मॉडेल (ढाँचा) पूरा हो गया। उसके हिस्सों को ढालकर फ़िट भी कर लिया गया। यह आविष्कार आविष्कारक के लिए धन ला सकता है; परन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है; और भी कुछ होना चाहिए; सारी दुनिया से ऊपर उसको सफलता मिलनी चाहिए। यह मशीन भारतवर्ष और मिस्र के प्रान्तरों के बीच से अपना रास्ता बना सके, ऐसी होनी चाहिए। निद्रा? विश्राम? खाना-पीना? इतनी भारी बाज़ी के सामने इन सबकी बिसात ही क्या है?

पीयर के कानों में अब "क्यों?" "कहाँ?" "इसके बाद?"—ये प्रश्न नहीं थे। यह सब सोचना व्यर्थ है। उसका दृष्टिक्षेत्र संकुचित होते-होते इतना संकीर्ण हो गया है कि उसमें केवल इसी एक समस्या के लिए स्थान शेष है। चाहे जो कुछ हो, यह काम

ही आज उसका एकमात्र ध्येय है। ऐसा ही होना पड़ेगा, ऐसा ही होना उचित है।

जब पीयर मुँह उठाकर खिड़की की ओर ताकता था तो उसको ऐसा प्रतीत होता था कि हर एक शीशे के भीतर से कुछ चेहरे उसकी ओर टकटकी लगाकर देख रहे हैं। वे कहते हैं—"क्या जी? अभी नहीं हुआ? अगर न होगा तो क्या होगा, सोचो!" मार्ले और सन्तानों के चेहरे दिखाई देते हैं; वे कहते हैं—"क्या इस जाड़े में हम लोग लोरेंज से निकाले जायँगे?" इउथोग और उनकी स्त्री के चेहरे कहते हैं—"क्या इसी लिए इस सम्मानित परिवार में तुमने प्रवेश किया था, उनके सर्वनाश के लिए?" और उनके पीछे मालूम होता है सारे शहर के लोग भीड़ बनाकर आने लगते हैं। इस काम में कितनी भारी ज़िम्मेवारी है, वह क्यों इतनी मेहनत करता है; सभी को यह मालूम है, सभी टकटकी लगाकर इसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं; और दूसरों की तरह बैंक का मैनेजर भी प्रतीक्षा कर रहा है।

घर के अन्दर जाना अब क़रीब-क़रीब बन्द हो गया है। कारखाने का एक सोफ़ा ही उसकी शय्या है। अब प्रायः मार्ले उसके लिए भोजन लेकर आती है। उसके शीर्ण और पीले चेहरे और पके हुए बालों को देखकर मार्ले को कोई प्रश्न करने का साहस नहीं होता। मार्ले मज़ाक़ करने की कोशिश करती है। उस मकान में, जहाँ हँसकर छायाओं को दूर रखना पड़ता था, बहुत पहले से ही उसने प्रफुल्लित रहने की शिक्षा प्राप्त की थी।

एक दिन मार्ले चली आ रही थी। उसी समय पीयर ने उसे रोका और एक विचित्र मुसकराहट के साथ मार्ले की ओर देखा।

सप्रश्न दृष्टि से मार्ले ने पूछा—क्या है?

पीयर मार्ले की ओर उसी तरह मुसकराहट के साथ ताकता

रह गया। मानो पीयर मार्लें के भीतर के उस क्षुद्र जगत् की ओर देख रहा था जिसकी प्रतिनिधि मार्लें थी। यह गृह, यह परिवार जिसे उसने, एक गृहहीन मनुष्य ने, मार्लें की बदौलत पाया था—क्या यह सभी डूब जायगा ?

पीयर ने मार्लें की आँखों का चुम्बनकर उसे छोड़ दिया।

जब मार्लें के पैरों की ध्वनि मिट गई, पीयर क्षण भर के लिए खड़ा हुआ और अपनी सफलता के लिए ऊपर की किसी शक्ति से प्रार्थना करने की एक आकस्मिक इच्छा से चंचल हो उठा। परन्तु ऐसी कोई शक्ति तो है नहीं, इसलिए अन्त में उसकी दृष्टि फिर लोहा, आग, औज़ारों और अपने हाथों की ओर लौट आई और दीर्घ निःश्वास के साथ उसने मानो इन्हीं से प्रार्थना की—"मेरी सहायता करो, जिससे मैं अपनी स्त्री और सन्तानों के सुख की रक्षा कर सकूँ। इसलिए मुझे मदद दो।"

निन्द्रा ? विश्राम ? क्लान्ति ? एक साल की मोहलत मिली है; केवल एक साल बैंक प्रतीक्षा करेगा।

शीत और बसन्त बीत गये। जुलाई के महीने में एक दिन वह घर पर आया और दौड़कर मार्लें के पास गया; कहा—मार्लें ! वे लोग कल यहाँ आ रहे हैं !

"कौन ?"

"मशीन देखनेवाले लोग। कल वे लोग उसकी परीक्षा करेंगे।"

दूसरा दिन आया। बाहर मैदान में हलकी और नई रँगी हुई मशीन खड़ी थी; नौकर ने उसके साथ घोड़े जोत दिये।

मशीन की परख खत्म हो गई। दोनों दर्शकों ने चिंतित-भाव से परस्पर एक दूसरे को देखकर सिर हिलाया। अवश्य ही उन्होंने एक नई चीज़ देखी। इस दुनिया के कृषि-यंत्रविभाग में

जो गहरी प्रतियोगिता चल रही है उसमें भी यह यंत्र क़रीब-क़रीब सभी यंत्रों को बाज़ार से निकाल सकेगा, ऐसी शक्ति इसमें है।

पीयर ने उनकी आँखों की दृष्टि से यह समझ लिया कि इन विशेषज्ञों ने स्वप्न देखा है; उन्हें दौलत की कुंजी मिल गई है।

परन्तु यह सब होते हुए भी इसमें एक खटका था—ज़रा-सा खटका।

डिनर के बाद दोनों दर्शक चले गये। केवल मार्ले और पीयर रह गये। सप्रश्न दृष्टि से मार्ले ने पीयर की ओर देखा।

व्यग्रभाव से टहलते हुए पीयर कहने लगा—"सिर्फ़ एक छोटी-सी बात है। जब घास भींगी रहती है, तब क़ैंचियों के ऊपर के इसपात के डंडों पर चपकने लगती है और काम ठीक तौर पर नहीं होता। न जाने मुझे क्या हुआ था कि बरसाती मौसम में इसकी जाँच करने के बारे में मैंने सोचा ही नहीं। परन्तु इस त्रुटि को हटा देने पर सारी दुनिया में इस कल की जीत होगी, यह मैं अभी से कह देता हूँ।

मशीन फिर वर्कशाप में रखी गई और वह उसके चारों ओर टहलते हुए उसे देखने और सोचने लगा। उस छोटी-सी बात को, जिसके करने से सब ठीक हो जायगा, ठीक करने के लिए पीयर परेशान होने लगा। और सब पूरा हो गया है, सब कुछ ठीक है; परन्तु अभी थोड़ी-सी ज़रूरत है, एक मुहूर्त के लिए दैव-प्रेरणा का आविर्भाव होना चाहिए; बस, एक मुहूर्त के काम से वह इसपात की कल सजीव हो उठेगी और फिर वह पंख फैलाकर इस विशाल जगत् के ऊपर से उड़ सकेगी।

परन्तु पीयर ठहर नहीं सकता। खिड़की के सामने फिर चेहरे दिखाई दे रहे हैं, उसकी ओर टकटकी लगाकर पूछते हैं—

"अभी नहीं हुई ?" मार्लें, इउथोग, उनकी स्त्री, बैंक के मैनेजर, और संसार भर के प्रतिद्वन्द्वी लोग भी। आज वह कुछ आगे बढ़ा हुआ है; परन्तु कल वह पिछड़ जा सकता है। प्रतीक्षा ? विश्राम ? नहीं !

हेमन्त की ऋतु आई; रातों में अनिद्रा से पीड़ित होकर उसने डाक्टरों की शरण ली। डाक्टर ने ठंढा-स्नान, परिपूर्ण मानसिक शान्ति, नींद की दवा, लोहा और आर्सेनिक की व्यवस्था की। पीयर सब प्रकार की दवाइयों को ले सकता है, परन्तु एक चीज़ उसे नहीं मिल सकती—नींद या शान्ति।

क्रान्ति चरमसीमा पर पहुँच गई। वह रात को बहुत देर तक बैठा रहता और औज़ारों, इसपात और बुझते हुए अग्निकुंड की ओर देखता रहता। उसकी आँखों के सामने से आग की असंख्य चिनगारियाँ उड़ने लगतीं और गले हुए लोहे का तरल पुंज जीवित प्राणियों की तरह दीवार और गच के ऊपर से रेंगता हुआ चलने लगता। इसके बाद अग्निकुंड के किनारे ही उधर एक कुहरे की मूर्त्ति स्पष्टतर होकर आयतन में बढ़ने लगती है अन्त में एक नंगा डाढ़ीवाला दैव एक हाथ में आग और दूसरे हाथ में बड़ा हथौड़ा लिये आ खड़ा होता !

"यह क्या ? कौन है ?"

"मानव, तुम मुझे नहीं पहचानते हो ?"

"मैं पूछता हूँ, तुम कौन हो ?

"तुमसे एक बात कहनी है। विश्व के क्रमविकास के सिवा और किसी वस्तु में विश्वास करना तुम्हारे लिए निरर्थक है। प्रार्थना से कोई फल नहीं होगा। इसपात और अग्नि से मुक्त होने का स्वप्न तुम देख सकते हो; परन्तु अन्त में इन्हीं के पास अपने को समर्पित कर देना पड़ेगा। इन्हें छोड़कर तुम्हारी

आत्मा कुछ भी नहीं है। ईश्वर, आनन्द, तुम्हारी सत्ता, तुम्हारी अमरता,—ये सब कुछ नहीं है। विश्व-इच्छा अपनी शाश्वत परिणति की ओर बढ़ती जा रही है। व्यक्ति इसमें केवल अग्नि के लिए ईंधन की तरह है।

सचमुच में कोई है, समझकर पीयर झट से उठ खड़ा होता। परन्तु वहाँ शून्य के सिवा कुछ भी न था।

पीयर के मन में ऐसा होने लगा कि उसके ससुर, बैंक के मैनेजर और मार्ले उसके कारख़ाने के आस-पास रात-दिन घूमते रहते हैं और वह काम पूरा हुआ कि नहीं, छिपकर खोज करते रहते हैं। क्यों, क्या वे उसे और थोड़े समय के लिए, और एक हफ़्ते के लिए भी शान्ति से रहने नहीं दे सकते? ख़ैर, आगामी ग्रीष्म के पहले उस मशीन की परख नहीं हो सकती। कभी-कभी कारख़ाने के सब लोग चौंक उठते क्योंकि पीयर भीतर से दौड़कर निकल आता और उग्र स्वर में चिल्ला उठता—मैं कहता हूँ यहाँ कोई भी न आये! मुझे अकेला रहने दो।

पीयर जब भीतर चला जाता, वे परस्पर देखकर सिर हिलाते।

एक दिन सबेरे मार्ले आई और बाहर के कारख़ाने के अन्दर से जाकर अपने पति के कमरे के द्वार पर खटखटाने लगी। कोई भी उत्तर जब न मिला, वह दरवाज़ा खोलकर अन्दर गई।

एक मुहूर्त के बाद ही एक स्त्री की चीख़ सुनकर मज़दूर लोग जब दौड़ गये तो उन लोगों ने देखा कि वह अपने पति के ऊपर झुकी हुई है और वे बिलकुल शून्य दृष्टि से उसकी ओर टकटकी लगाये मंच पर बैठे हैं।

उसके कन्धे में धक्का मारकर मार्ले चिल्ला उठी—पीयर, पीयर, सुन रहे हो? ओह हा भगवन्! मेरे प्यारे, यह क्या हुआ?

अप्रैल के महीने में एक दिन रिंगेबी के छोटे शहर में हलचल

दिखाई दी। जनता का प्रवाह फियर्ड के रास्ते से लोरेंग की ओर बहने लगा। सभी खूब अच्छी पोशाक पहनकर जा रहे थे यद्यपि रविवार नहीं था, बुधवार था। गवर्नर के रहने के समय से शुरू करके कई साल पहले तक जब इंजीनियर होल्म महिमा-भ्रष्ट नहीं हुआ था, इस विशाल मकान में कितने उत्सव और कितने बड़े-बड़े मामले हुए थे और इसकी कैसी शान थी, इसकी लोगों में चर्चा हो रही थी।

परन्तु आज उस मकान का नीलाम, मय सामान के, होनेवाला था। दूर-दूर से लोग, कोई पैदल, कोई गाड़ी से, वही देखने के लिए आ रहे थे। बैंक के अधिकारियों की राय थी कि पीयर जब अस्पताल में पीड़ित होकर पड़ा है और वह कभी कार्य करने योग्य होगा कि नहीं, यह डाक्टर लोग नहीं बतला सकते, तब और मोहलत देना उचित न होगा।

अधिकांश लोग प्रवेश करने के लिए सीढ़ी पर खड़े थे। बीच बीच में उन लोगों ने देखा कि घनी और काली भौंहोंवाली एक पीले रंग की महिला काली पोशाक पहनकर सामान हटाने के लिए नौकरों को आदेश देने के उद्देश्य से उनके रहने के मकान में अथवा भांडार में, आँगन के ऊपर से, यातायात कर रही है। यह मार्ले थी; वहाँ पर अब उसका कोई अधिकार न था।

पहाड़ के ऊपर से गाड़ी हाँककर एक युवक आया, उसका चेहरा गुलाबी था और आँखें घनी नीली। रास्ते में उसने अपना 'ओवर कोट' उतार लिया; उसके नीचे से लम्बा और काला 'फ्राक-कोट' और बड़ा 'वेस्ट कोट' दिखाई दिया। यह इउथोग जुनियर—इँगलिश ट्विड का जेनरल मैनेजर था। बहनोई के कारबार में उसने हिस्सा नहीं लिया था, इसलिए आज वह पिता के दुःसमय में सहायता दे सकता था। लोरेंग में नीलाम कई दिनों तक चलता रहा।

तृतीय खण्ड

प्रथम परिच्छेद

एक गहरी घाटी; एक ओर नदी और दूसरी ओर पहाड़ियाँ और दोनों के बीच में किसानों के ढलवाँ खेत !

ग्रीष्म-ऋतु का मध्य भाग; बूढ़ा रोस्टा ट्रेन पकड़ने को आया। उसकी सवारी में एक स्प्रिङ्गवाली गाड़ी थी, जिसे वह स्वयं हाँक रहा था। गाड़ी के पिछले भाग में असबाव के लिए एक डिब्बा जुड़ा था।

ट्रेन आई; एक पीले रंग के सज्जन, जिनके बाल और दाढ़ी सफ़ेद थे, नीला चश्मा पहनकर निकल आये; उनके साथ उनकी स्त्री और तीन सन्तानें भी थीं। आगन्तुक ने पूछा—पौल रोस्टा ? बूढ़े ने जवाब दिया—हाँ मैं ही हूँ। उत्तर की ओर जो बड़े-बड़े पर्वत आसमान से सिर मिलाये खड़े थे उनकी ओर देखकर उसने कहा—यहाँ का जल-वायु तो अच्छा होना चाहिए ? रोस्टा ने जवाब दिया—हाँ, यह जगह सभी तरह से अच्छी है।—यह कहकर उसने गाड़ी में माल-असबाब लादना शुरू कर दिया।

पहाड़ी रास्ते से गाड़ी हाँककर वे ऊपर की ओर चले। स्त्री ने मुँह फेरकर पूछा—क्या वह 'फ़ार्म' यहाँ से दिखाई देता है ? बूढ़े ने उँगली से इशारा करके कहा—वह है। बहुत देर तक 'फ़ार्म' की ओर देखकर स्त्री लम्बी-लम्बी साँसें लेती रही। यह उन लोगों का नया मकान होगा। इष्ट-मित्रों से बहुत दूर इस स्थान पर रहना पड़ेगा। डाक्टर की सब दवाइयाँ जब असफल हुईं, तब क्या यह स्थान उसे स्वास्थ्य देगा ?

वह पुराना मकान जो सालों से ख़ाली और निर्जीव-सा पड़ा था, फिर मानों जाग्रत् हो उठा। पीयर बीमारी के बाद अभी तक बहुत कमज़ोर था। फिर भी वह असबाब के खोलने में कुछ मदद दे सकता था। थोड़ी देर में वह हाँफने लगा और उसका सिर चक्कर खाने लगा। उसे ऐसा लगा, मानो उसके सिर के पिछले भाग में किसी एक स्थान पर हथौड़े का अविराम आघात होने लगा। वह सोचने लगा—'यदि इस स्थान-परिवर्तन से भी फ़ायदा न हुआ तो अब अन्तिम समय समझना चाहिए। यहाँ पर एक साल रहने लायक़ रुपया किसी तरह संग्रह किया है। इसके बाद ? स्त्री और सन्तानों का क्या होगा ? यह सब चिन्ता करने का समय अब नहीं है और कुछ सोचो, केवल यह चिन्ता मत करो। कभी ऐसा समय था जब काम को निर्दिष्ट समय के अन्दर पूरा करना ही एकमात्र कर्तव्य था। अब कर्तव्य है, एक साल के भीतर फिर से स्वस्थ और मज़बूत हो जाना। यदि सिर के भीतर होनेवाला यह अविराम हथौड़े का शब्द किसी प्रकार बन्द हो सकता तो स्वास्थ्यलाभ करने में देर न होती।'

बाहर-भीतर आते-जाते मार्ले भी शायद यही सोच रही थी। पर उसके दिमाग़ में और भी कितनी चिन्तायें थीं—माल-असबाब सब ठीक तरीक़े से रखना है; गृहस्थी फिर से जमानी है ! दूध कितना रोज़ चाहिए; अंडे कहाँ से मिलेंगे; इत्यादि।

शीघ्र ही मार्ले और पीयर अपनी शय्याओं पर लेटकर ग्रीष्म-रात्रि के उज्ज्वल आकाश की ओर देखने लगे। डूबे हुए जहाज़ के यात्रियों की तरह वे तट पर आ पहुँचे हैं; पर अभी तक परित्राण मिला कि नहीं, यह निश्चय नहीं हो रहा है।

पीयर अशान्त होकर करवट बदलने लगा। उसका शरीर अस्थिचर्मावशिष्ट रह गया था। नस-नस दिखाई पड़ रही थी। इसलिए किसी अवस्था में उसको चैन नहीं मिलती थी। इधर

उसके दिमाग़ के भीतर सैकड़ों पहियों के घूमने की आवाज़ हो रही थी और चिनगारियाँ स्वप्न-मूर्तियों में परिणत हो रही थीं।

विश्राम? जब सब अच्छी तरह चल रहा था तब भी विश्राम में तृप्ति क्यों नहीं मिलती थी?

पहले प्रपात के काम में ही उसकी बहुत ख्याति हो गई थी; नया पम्प बनाकर भी उससे उसने बहुत धन कमाया था; परन्तु निरन्तर उसके मन में प्रश्नों का दंशन चल रहा था। "क्यों?" "कहाँ?" "इसके बाद क्या है?" वह चीफ़ इंजीनियर हुआ। उसने रेलवे बनाई; और भी रेलवे बनाने का काम मिल सकता था; परन्तु फिर भी वे ही प्रश्न! "क्यों?" "इससे क्या होगा?" "चलो, तब घर चलो," "स्वदेश में जाकर स्थिर होकर बैठो।" परन्तु, क्या ऐसा करने पर भी विश्राम मिला? फिर यह कौन है जो उसे एक ओर को हठात् ले जा रहा है? इसपात, वही इसपात और आग।

'मैं ठोकर खाकर गिर सकता हूँ; पर उससे क्या? इसपात एक व्यक्ति को पीस डालता है, फिर दूसरे को पकड़ता है। विश्व-वैश्वानर को ईंधन चाहिए। ऐ मानव, सिर झुकाकर अग्निकुंड में कूद पड़!

'आज कोई उन्नति कर रहा है, कल ही वह पार्थिव नरक में फेंक दिया जायगा। इसमें क्षति ही क्या है? तुम तो केवल ईंधन हो।

'परन्तु मैं ऐसा नहीं बनूँगा। इस संसार में अगर वैश्वानर ही एकमात्र देवता हैं, तो भी मैं उसका ग्रास नहीं बनूँगा। मैं अपने को बन्धन-मुक्त करूँगा, अपने अन्दर में स्वाधीन बनूँगा। अपनी आत्मा को मैं अमर बनाऊँगा। उन्नति-प्रवाह से हज़ार वर्षों में यदि यह जगत् रूपान्तरित भी हो जाय तो उससे मेरा क्या लाभ?'

पीयर ने करवट बदली, उसके चारों ओर अन्धकार है। परन्तु उस अन्धकार के केन्द्र में एक लहर उठती है, सुर की वह लहर धीरे-धीरे नज़दीक़ आने लगती है। एक प्रार्थनासंगीत की ध्वनि आती है—लुइसे खड़ी होकर बजा रही है; उसकी बहन लुइसे! कैसी शान्ति, हे परमात्मा, कैसी शान्ति और कैसा आराम है!

परन्तु, तुरन्त ही लुइसे अदृश्य हो जाती है। निर्वापित दीपशिखा की तरह वह अदृश्य हो जाती है। गरजने की-सी भीषण ध्वनि निकट आने लगती है। पीयर इसे अच्छी तरह पहचानता है, यह इसपात का संगीत है।

'अगणित मनुष्य क़ैदियों को लिये, पीली और कुटिल दोनों आँखें खोले, रेलवे से, जहाज़ से इसपात गरजता हुआ दौड़ रहा है; पर किधर? जो इसपात की दानवात्मा अविराम मनुष्यों का शिकार करती जा रही है उससे विताड़ित होकर, प्रतिद्वन्द्विता से प्रेरित होकर, इसपात द्रुत, और भी द्रुत, इस दुनिया की नस-नस में ज्वर का उत्ताप उत्पन्न कर, उसे उन्मत्तता की ओर लिये जा रहा है!

'क्या यही प्रोमिथिउस की आत्मा है? देखो, इसपात की इच्छा मनुष्य को आकाश की ओर फेंक रही है। इस्पात आकाश को जीत रहा है। क्यों? वह और भी द्रुत चलना चाहता है; इसलिए वह और, और भी! द्रुत, और भी द्रुत चलना चाहता है—परन्तु, क्यों? कहाँ? इसे इसपात स्वयम् भी नहीं जानता!

'क्या पृथिवी के सन्तान आज गृहहीन हो गये हैं? क्या वे एक मुहूर्त के लिए भी विश्राम लेने से डरते हैं? क्या वे अपने हृदय के अन्दर शून्यता का आविष्कार करेंगे, इसलिए डरते हैं? क्या वे किसी खोई हुई वस्तु को खोज रहे हैं? किसी स्तव-संगीत को? किसी सुरसमन्वय को? किसी भगवान् को?

'भगवान् ? वे केवल एक खून के प्यासे जिहोवा को और एक क्रॉस-विद्ध संन्यासी को देख रहे हैं। क्या आधुनिक मानव के देवता वे हैं ? वे तो धर्म का इतिहास हैं, धर्म नहीं।'

मार्ले बोली—पीयर, ईश्वर की शपथ है, सो जाने की कोशिश करो।

"मार्ले, क्या मैं यहाँ पर अच्छा हो जाऊँगा ?"

"क्यों ? क्या अभी तुम्हें यह मालूम नहीं हो रहा है कि यहाँ की हवा कैसी आश्चर्यजनक है ? अवश्य ही तुम अच्छे हो जाओगे।"

पीयर ने अपनी उँगलियों से मार्ले की उँगलियों को लपेट लिया। लुइसे का प्रार्थना-संगीत फिर लौट आया, उसकी लहरों में वह आन्दोलित और तरंगित होने लगा। धीरे-धीरे उसे झपकी आ गई।

द्वितीय परिच्छेद

छोटा-सा पथ वंकिम गति से जंगल के बीच में से चला गया है; रास्ते पर दो पहियों के रेखा-चिह्न बने हैं; बीच का स्थान देवदार की पत्तियों से ढका हुआ है। यहाँ पर वृक्ष हैं, आकाश है, निस्तब्धता और शान्ति है; यहाँ टहलने में यथार्थ आनन्द मिलता है। इस रास्ते की चढ़ाई-उतराई इतनी हलकी है कि यहाँ किसी को क्लान्ति नहीं हो सकती। सचमुच मालूम होता है कि पथ मित्र की तरह साथ-साथ चल रहा है और कानों में कह रहा है—कोई चिन्ता नहीं है, जल्दी की ज़रूरत नहीं है, अच्छी तरह यहाँ पर आराम कर लो।

पतली और फ़ुरतीली युवती की तरह पगडंडी वृक्षश्रेणियों के बीच में से वक्रगति से चली जा रही है।

पीयर यहीं पर रोज़ टहलता। रुककर 'फ़र' वृक्षों की चोटियों की ओर देखता; फिर टहलना शुरू कर देता। मुहूर्त भर के लिए काई से ढँके हुए पत्थर के ऊपर बैठ जाता; लेकिन फिर तुरन्त ही उठकर चलने लगता, यद्यपि उसका कोई भी गन्तव्य स्थान नहीं था पर यहाँ पर शान्ति थी। 'फ़र' वृक्ष की डाली पर एक कीड़ा रेंगता जाता है, पीयर खड़ा होकर उसे देखने लगता, बहुत नीचे घाटी के बीच में से नदी कल-ध्वनि करती हुई बहती जाती है, पीयर वहीं कान लगाकर सुनने लगता; धूप की स्वास्थ्य-कर सुगन्ध से गरम हवा भर जाती है, पीयर उसी को निःश्वास के साथ ग्रहण करता।

उसका वर्तमान जीवन भी जीवित रहने का एक ढंग है। उन्निद्र रात्रि के अन्त में जब वह उषा के आविर्भाव के साथ-साथ

वातायन को स्वच्छ होते देखता है, तो यही सोचता है कि फिर एक नवीन दिवस का आविर्भाव हुआ, मैं इसमें कुछ भी नहीं कर सकूँगा। फिर भी उसे उठना पड़ता। वह उठता, कपड़े बदलता और नीचे जाकर कलेवा करता। उसे यह भोजन कुछ अरुचिकर लगता; क्योंकि इसकी प्राप्ति का साधन था—उस बुढ़िया का धन और टुइडीड एजेण्ट की कृपा! अनिद्रा-द्वारा पीड़ित मस्तिष्क में ऐसी-ऐसी कल्पनायें उठती थीं, जिनमें उसकी कोई रुचि नहीं थी। फ़र्श के ऊपर ज़रा-सा शब्द होते ही वह अपनी स्त्री और बच्चों के ऊपर बिगड़ उठता; पर शीघ्र ही वह पश्चात्ताप करता और कभी-कभी बालकों की तरह रोने भी लगता। परन्तु इससे लाभ क्या? वह फिर वैसा ही, उससे भी ख़राब, बर्ताव करता। यही तो उसकी जीवन-प्रणाली थी। ऐसा ही जीवन उसे बिताना है।

परन्तु वह छोटा-सा जंगली मार्ग; वहाँ न वह किसी को कष्ट पहुँचाता है और न कोई कोलाहल उसके मस्तिष्क को परेशान करता है। यहाँ पर परम शान्ति है; यह शान्ति मनुष्य की कल्याण-कारिणी है।

ओफ्! रोष्टा, वह बहुत दूर चला आया है। भय से उसका सारा शरीर पसीज जाता; शायद वह चढ़ाई पर से फिर लौट नहीं सकेगा! नहीं, भय क्यों? ज़रा सुस्ताना चाहिए। वह घास के ऊपर चित होकर लेट जाता और आसमान की ओर देखता रहता।

बहुत ऊँचे पर, उन दो पर्वतश्रेणियों के ऊपर नीलिमा का एक भाण्डार स्थित है, उसके नीचे शाश्वत विराम है। पर, क्या वहाँ पर ऐसी कोई इच्छा-शक्ति भी है जिसका पृथिवी के मनुष्यों से कुछ सम्बन्ध हो? उसमें मेरा विश्वास नहीं है; फिर भी एक छोटी-सी प्रार्थना तक उसकी ओर जाती है।

सहायता दो, मेरी मदद करो! कौन? 'तुम', जो मेरी प्रार्थना सुनते हो। पृथ्वी पर मनुष्य नाम के जो अभागे जीव विचरते हैं, यदि उनके प्रति तुम्हारा ज़रा भी ध्यान हो, तो मुझे सहायता दो। शाश्वत सत्य के अन्वेषण की बुभुक्षा को शान्त करने के लिए यदि मैंने कोई महान् कर्म करने की प्रार्थना की थी, तो वह मेरी भूल थी। मैं अपने उस मिथ्या गर्व को स्वीकार करता हूँ और उसके लिए पश्चात्ताप करता हूँ। मुझको क्रीतदास बनाकर खाद्य-संग्रह करने के लिए दासत्व में नियुक्त कर लो; परन्तु मार्ले और सन्तानों से मुझे वंचित न करो। क्या तुम सुन रहे हो?

क्या अंधदुर्भाग्य-द्वारा पीड़ित मनुष्यों को देखकर स्वर्ग में कोई आनन्दित होता है? क्या मेरे पुत्र, कन्या, स्त्री ये सब एक अर्थहीन दैव के दासमात्र हैं? और तब भी तुम हँस सकते हो? अगर तुम सुनते हो, तो उत्तर दो, हे अनेक नामधारी तुम! उत्तर दो!

उसके पास ही घास में एक टिड्डी ने तीव्र ध्वनि की; पीयर चौंककर उठ बैठा। नीचे से एक रेलगाड़ी घड़घड़ाती हुई चली गई।

इसी तरह दिन पर दिन बीतते गये।

एक दिन सबेरे जब पीयर नींद से उठ रहा था, उसने कहा—मार्ले, मुझे ऐसा कोई काम निकालना होगा जिसे करते-करते ख़ूब थककर मैं सो जाऊँ।

मार्ले ने कहा—हाँ, प्यारे, ऐसा ही करने की कोशिश करो।

पीयर ने कहा—ठेले पर पत्थर ढोना शुरू किया जाय। दिन भर ऐसा करने पर नींद ज़रूर लगेगी।

उस दिन से लेकर बहुत दिनों तक पहाड़ की ढाल पर की

नई टूटी हुई ज़मीन पर से, नीचे के रास्ते के किनारे जो बाँध था, वहाँ पर पीयर पत्थर ले जाता रहा।

पीयर के दिमाग़ के भीतर मानों कोई रूखे और तीव्र स्वर से कहने लगा—"बस-बस, हाँ, यही करते रहो। यह बेवक़ूफ़ी का काम है; पर तुम्हें यही करना पड़ेगा। और केवल दस महीने बाक़ी हैं। इसके बाद फिर रास्ते के मोड़ पर शैतान का आविर्भाव होगा। बेचारी मार्लें! उसका बुढ़ापा आ गया है। बेचारे बच्चे! ये शायद स्वप्न देखते हैं कि उनका पिता उन्हें ख़ूब मार रहा है; शायद इसी लिए प्रायः वे नींद में रो उठते हैं। ख़ैर, चलो, चलो, ठेला ले चलो। हाँ, यह बोझ तो लाये, फिर दूसरे बोझ के लिए चलो।"

पीयर सीधा खड़ा हो गया, कपाल का पसीना पोंछा और फिर ठेले में पत्थर लादने लगा।

कानों के पास की सोनहली चोटियों को हिलाती और दौड़ती हुई छोटी लुइसे पहाड़ी ढाल से उतर आती और कहती—पिता जी, भोजन का वक़्त हो गया, घर चलो।

"धन्यवाद, लल्ली! क्या आज डिनर में कुछ अच्छी चीज़ें हैं?"

"वह तो मैं बताऊँगी नहीं"—रहस्यपूर्ण ढंग से लड़की ने कहा, और पिता को प्रसन्न देखकर उसका चेहरा आनन्द से उज्ज्वल हो उठा। उसने फिर कहा,—"पिता जी, पकड़ो तो मुझे, मैं तुमसे अधिक दौड़ सकती हूँ।"

"बच्ची, अब मालूम होता है कि मैं बहुत थक गया हूँ।"

"तुम बहुत थक गये पिता जी?"—कहते हुए लड़की ने अपने पिता का हाथ पकड़ लिया तब उसने पीयर की बाँह को अपनी बाँह से सटा लिया। युवती की तरह पिता की बाँह को पकड़कर पहाड़ पर चढ़ने में उसे बड़ा मज़ा मालूम होता।

इसके बाद हेमंत की ऋतु आई। एक दिन सवेरे पहाड़ की सब चोटियाँ बादलों की तरह सफ़ेद हो गईं और वहाँ से बर्फ़ के ढेर नीचे की ओर उतरने लगे। म्लान प्रकाश में विषण्ण चेहरा लेकर मार्ले खिड़की के सामने खड़ी हो, नीचे के पहाड़ों से घिरी हुई घाटी की ओर देखती रहती। यह घाटी अब पहले से भी अधिक संकीर्ण प्रतीत होती, निःश्वास बन्द होना चाहता, ठंढी और नम पोशाक में मानो दम घुटने लगता।

तो रसोई में चला जाय; काम शुरू किया जाय! काम, काम, काम करो और सब भूलने की चेष्टा करो।

एक दिन मार्ले को पत्र मिला कि उसकी मा की मृत्यु हो गई है।

तृतीय परिच्छेद

बड़े दिन का उत्सव पास आ गया। दिवस की उज्ज्वलता गोधूलि की तरह हो गई। बर्फ़ गिरने से दीवारों के तख़्ते फट रहे थे। बच्चे सर्दी के मारे नीले हो गये थे। मार्ले फ़र्श को साफ़ करती; परन्तु स्टोव की तीक्ष्ण आग जलने पर भी फ़र्श की ज़मीन स्केटिंग के लिए बर्फ़ से ढँकी ज़मीन की तरह हो गई थी। कुएँ से पानी लाने के लिए पीयर गहरे ग्लेशियर के अन्दर से रास्ता बनाता हुआ जाता, उसकी डाढ़ी पर बर्फ़ माला की तरह लटक जाती।

हाँ, सचमुच जाड़ा था।

रसोईघर में खड़े होकर मार्ले ने कहा—पीयर, 'बड़े दिन' में बच्चों को क्या सौगात दोगे ?

"क्यों, हर एक को रहने के लिए एक-एक महल और चढ़ने के लिए एक एक घोड़ा ! धन रखने को जब जगह ही नहीं तब फिर हिसाब-किताब की कौन ज़रूरत ? और तुम्हें क्या चाहिए ? दो हज़ार क्राउन का एक 'फ़र'-कोट दें तो कोई आपत्ति तो नहीं होगी न ?

"नहीं, हँसी की बात नहीं। बच्चों के पास न तो बर्फ़ पर चलने के जूते हैं, न कोई हाथ से चलानेवाली 'स्ले-गाड़ी'।"

"बहुत अच्छा, तुम्हारे पास रुपये हों तो, ले दो; मेरे पास तो हैं नहीं।"

"तुम अगर स्वयम् बना देते तो कैसा होता ?"

"वैसे काठ के जूते !"—पीयर सोचने लगा—"हाँ, क्यों न होगा ? और स्ले-गाड़ी ? वह भी हो सकती है ? पर छोटी आस्टा

के लिए ? इन चीज़ों से तो काम नहीं चलेगा; वह तो बहुत छोटी है।"

"आस्टा की गुड़िया के लिए खाट नहीं है।"

पीयर फिर सोचने लगा—"बात तो ठीक है, यह सूझ अच्छी है। मेरे हाथ अभी ऐसे बेकार तो नहीं हैं कि मैं..."

जल्दी ही कड़ी मेहनत शुरू हो गई। बाहर के घर में एक बढ़ई की बेंच और औज़ार थे, पीयर वहीं पर काम करने लगा। थोड़े ही में वह थक जाता, पैर उसे घर के भीतर ले जाना चाहते; फिर भी वह ज़बरदस्ती काम करता जाता। 'मैं स्वस्थ हो जाऊँगा'—केवल इस इच्छा के द्वारा कोई मनुष्य अच्छा नहीं हो सकता ? पीयर के मस्तिष्क में जिन चिन्ताओं का दंशन चल रहा था, और दूसरों की भावना आकर उन्हें परास्त करने लगी। सन्तानों के लिए सौगात, पिता के अपने हाथों से बना सौगात ! यह सोचते ही पीयर के मन के भीतर मानो उजाला हो गया। मन में नवीन उत्साह का संचार होने लगा।

बड़े दिन की सन्ध्या हुई, धूसर वर्ण का टट्टू दरवाज़े के पास एक बड़ा-सा लकड़ी का सन्दूक़ खींच लाया। सन्दूक़ खोलकर रिंगेबी के कुटुम्बों के भेजे हुए बड़े दिन के अच्छे-अच्छे सौगातों का ढेर लेकर पीयर अन्दर घुसा। रसोईघर की मेज़ के ऊपर उन सौगातों के ढेर को देखकर पीयर अपने दाँतों से होंठ दबाकर अपने को सँभालने लगा।

"मार्ले, क्या इस साल हम लोगों के पास देने लायक़ कुछ भी नहीं है ?"

"मुझे नहीं मालूम। तुम क्या सोच रहे हो ?"

"यदि केवल दान लेना ही पड़े और देने के लिए कुछ भी न हो, तब तो हम लोगों का बड़ा दिन बड़ा ही अच्छा होगा !"

मालूम होता कि अच्छे होने की कोई आशा नहीं है। पीयर ने फिर डाक्टरी दवाई करना शुरू किया। डाक्टरों ने भी विश्राम और शुद्ध वायु की व्यवस्था दी थी पर क्या यहाँ पर पर्याप्त है, क्या इससे कुछ भी उपकार नहीं होगा? वे एक साल के लिए यहाँ आये थे, उसमें कुछ ही महीने बाकी हैं।

इसके बाद? और एक साल? दूसरों की सहायता से बचना—ओह !!

अन्दर आने के रास्ते पर द्रुत पदशब्द सुनकर मार्ले चौंक उठी और शंकित होकर प्रतीक्षा करने लगी। संभव है वे क्रोध से उत्तेजित होकर आ रहे हैं अथवा हताशा ने उन पर आक्रमण किया है; सिर की यंत्रणा तो फिर नहीं हो रही है? दरवाजा खुल गया।

"मार्लें, अब मुझे मालूम हो गया! सच कह रहा हूँ, इतने दिनों के बाद मैंने निकाल लिया।"

मार्लें ने खड़े होने की कोशिश की, फिर पीयर के चेहरे को देखकर बैठ गई।

"मार्लें, अब की बार मैंने ठीक निकाला है। इतनी आसान बात मुझसे इतने दिन क्यों न बनी?"

पाकेट में हाथ डाल सीटी बजाता हुआ पीयर कमरे के अन्दर टहलने लगा।

"लेकिन पीयर, बात है क्या?"

"मैं लकड़ी काट रहा था और मेरे दिमाग के अन्दर लाखों फ़सल काटने की कलें चल रही थीं और सभी की कैंचियों में घास अटक कर उनकी गति में बाधा डालती थी। पसीने से मैं ठंडा हो गया था, ऐसा मालूम होने लगा कि मैं नरक को जा रहा हूँ। इसके बाद, इसके बाद एकाएक वज्रपात की एक झलक से सब साफ़ हो गया। मार्लें, इसके माने हम लोगों की मुक्ति है।"

मार्ले ने लम्बी साँस ली। उसने कहा—आशा है, आइंदा ऐसा न होगा।

टहलते हुए पीयर ने कहा—अब भी मैं ऐसा न होने दूँगा। मोयेन में जो यक्ष्मा का रोगी बढ़ई है, उसके लिए मैं कुछ भेंट अवश्य ले जाऊँगा। चाहे तुम्हें अपनी पोशाक और मुझे अपनी कमीज़ ही देनी पड़े, तो भी आज मैं उसे कुछ दूँगा ज़रूर! तुम जानती हो अगर हम कुछ न करें तो फिर बड़ा दिन ही किस काम का।

"बहुत अच्छा, जो उचित समझो करो। देखूँ बच्चों की पोशाक में से कुछ निकाल सकती हूँ कि नहीं।"

अन्त में यही हुआ कि नैहर से पार्सल में जो चावल, बादाम और रोटी आई थी मार्ले ने उनमें कतर-ब्योंत करके पीयर-द्वारा पड़ोसियों के पास भेजने के लिए छोटी-छोटी पुड़ियाँ बना डालीं। मार्ले का यह स्वभाव था कि उसे कोई काम करने को दो, तो वह कोई न कोई तरीक़ा अवश्य निकाल लेती थी।

सन्ध्या-समय जब 'क्रिसमस वृक्ष' पर बत्तियाँ जलाई गईं और खिड़कियाँ बरफ़ के कारण उज्ज्वल हो उठीं, तब उस घर के फ़र्श पर चहल-पहल शुरू हो गई। लुइसे अपने काठ के जूतों से फ़िसलने लगी; लोरेंज अपनी नई स्ले-गाड़ी के ऊपर चढ़कर चिल्लाने लगा, 'हेइ, सब रास्ते से हट जाओ!' एक कोने में छोटी लल्ली आस्टा व्यस्त होकर गीत गाती हुई गुड़िया को सुलाने लगी।

पति-पत्नी परस्पर मुसकराते हुए देखने लगे। मार्ले ने कहा—क्यों जी, मैंने कहा था न?

* * * *

अगर पीयर फिर तन्दुरुस्त हो सकता! किसी-किसी दिन उन लोगों को ऐसा मालूम होता कि पीयर अब अच्छा हो रहा है; पर उसके बाद ही पीयर यंत्रणा से लोटने लगता और

मालूम होता कि अच्छे होने की कोई आशा नहीं है। पीयर ने फिर डाक्टरी दवाई करना शुरू किया। डाक्टरों ने जो विश्राम और शुद्ध वायु की व्यवस्था दी थी वह भी यहाँ पर पर्याप्त है, क्या इससे कुछ भी उपकार नहीं होगा? वे एक साल के लिए यहाँ आये थे, उसमें कुछ ही महीने बाक़ी हैं।

इसके बाद? और एक साल? दूसरों की सहायता से बचना—ओह!!

अन्दर आने के रास्ते पर द्रुत पदशब्द सुनकर मार्ले चौंक उठी और शंकित होकर प्रतीक्षा करने लगी। संभव है वे क्रोध से उत्तेजित होकर आ रहे हैं अथवा हताशा ने उन पर आक्रमण किया है; सिर की यंत्रणा तो फिर नहीं हो रही है? दरवाज़ा खुल गया।

"मार्ले, अब मुझे मालूम हो गया! सच कह रहा हूँ, इतने दिनों के बाद मैंने निकाल लिया।"

मार्ले ने खड़े होने की कोशिश की, फिर पीयर के चेहरे को देखकर बैठ गई।

"मार्ले, अब की बार मैंने ठीक निकाला है। इतनी आसान बात मुझसे इतने दिन क्यों न बनी?"

पाकेट में हाथ डाल सीटी बजाता हुआ पीयर कमरे के अन्दर टहलने लगा।

"लेकिन पीयर, बात है क्या?"

"मैं लकड़ी काट रहा था और मेरे दिमाग़ के अन्दर लाखों फ़सल काटने की कलें चल रही थीं और सभी की क़ैंचियों में घास अटक कर उनकी गति में बाधा डालती थी। पसीने से मैं ठंढा हो गया था, ऐसा मालूम होने लगा कि मैं नरक को जा रहा हूँ। इसके बाद, इसके बाद एकाएक इसपात की एक झलक से सब साफ़ हो गया। मार्ले, इसके माने हम लोगों की मुक्ति है।"

"मार्लें, बात यह है। अगर जीने का साहस हो तो जो यथार्थ अवस्था है उसे साफ़-साफ़ स्वीकार कर लेना पड़ेगा।"

"हाँ प्यारे, लेकिन बोलो, तो क्या…?"

"और सच्ची बात तो यह है, ऐसा स्वास्थ्य लेकर मेरे लिए कोई भी काम पाना सम्भव नहीं है। यह निश्चय है कि मैं काम नहीं पा सकता; और जब ऐसी ही बात है, तो यहाँ रहना भी जैसा है, दूसरी जगह रहना भी वैसा ही।"

"परन्तु, पीयर, यहाँ क्या हम लोग रह सकते हैं?"

"मेरे ऐसे अनाड़ी के साथ तुम रह सकोगी कि नहीं, यह एक सवाल है।"

"अच्छा तुम यह तो बतलाओ, यहाँ हम लोग रह सकते हैं?"

"हाँ, परन्तु मार्लें मुझे काम लायक़ बनने में सालों लगेंगे। इस बात का भी ख़्याल रखना चाहिए। और साल पर साल दूसरों के अनुग्रह से जीवित रहना मुझे बर्दाश्त नहीं होगा।"

"लेकिन, तब हम क्या करेंगे? मुझमें तो रोज़गार करने की शक्ति नहीं है।"

खिड़की की ओर देखकर पीयर ने कहा—ख़ैर, मैं कोशिश कर सकता हूँ।

"तुम? नहीं, नहीं, पीयर। तुम अच्छी तरह जानते हो कि ड्राफ़्ट्समैन का काम मिलने पर भी तुम्हारी आँखों को वह बर्दाश्त नहीं होगा।"

"मैं लोहार का काम कर सकता हूँ।"

इसके बाद दोनों कुछ देर तक चुप रहे। मार्लें इस प्रकार पीयर की ओर देखती थी मानों वह अपने कानों पर विश्वास नहीं कर रही है। पीयर मज़ाक़ तो नहीं कर रहा है? जिस इंजीनियर ने नील नदी का बाँध बनाया, वह आज देहाती लोहार का काम करेगा!

मार्ले ने लम्बी साँस ली। परन्तु पीयर को वह निराश नहीं कर सकी। अन्त में किसी प्रकार से उसने कहा—हाँ, तुम्हारा समय भी बीतेगा और संभवतः इससे अच्छी नींद भी आ सकती है। यह कहकर सख़्ती से ओंठ दबाकर मार्ले खिड़की से बाहर की ओर देखने लगी।

"और, मार्ले, अगर हम उस काम को करेंगे तो इस मकान में हम नहीं रह सकते। वास्तव में यह मकान हम लोगों के लिए बड़ा भी है। तुम्हारी मदद के लिए एक नौकरानी भी नहीं है।"

"तुम्हें इससे छोटे किसी मकान का पता है?"

"हाँ, एक छोटा-सा मकान बिकाऊ है, उसके साथ थोड़ी-सी ज़मीन भी है। मार्ले, यदि एक गाय और एक सूअर हो और दो एक बोरी अनाज उत्पन्न किया जाय तथा दूकान में काम करके हफ़्ते में कुछ शिलिङ्ग पैदा कर सकूँ तो और जो कुछ भी हो, गिरजे की मदद लेने की ज़रूरत न होगी। छोटा-मोटा काम जो आवेगा मैं कर सकूँगा और इन कामों से मेरा फ़ायदा ही होगा। क्या कहती हो?"

मार्ले ने कोई जवाब नहीं दिया। आँखें पलटकर वह खिड़की से बाहर की ओर देखती रही।

"परन्तु, और एक बात है, मार्ले, वह तुम्हारे बारे में। क्या मेरे साथ तुम भी इस प्रकार के जीवन में गिरना चाहती हो? मुझे कुछ तकलीफ़ नहीं होगी। मैं जब छोटा था, ऐसे ही घर में रहता था। परन्तु तुम तो...सच कह रहा हूँ, मार्ले, मैं तुमसे यह आशा नहीं कर सकता।"

पीयर के गले का स्वर काँपने लगा और मार्ले की ओर से उसने अपनी आँखें हटा लीं।

कुछ देर तक दोनों चुप रहे। अन्त में मार्ले ने कहा—रुपये के लिए क्या होगा? वह मकान कैसे ख़रीदोगे?

"तुम्हारे भाई ने कहा है कि वह उधार दिला देंगे। परन्तु, मार्ले, मैं फिर कह रहा हूँ, अगर तुम ब्रूसेथ में अपनी बुआ के पास जाकर रहना चाहो तो मैं तुम्हारे ऊपर दोषारोपण नहीं करूँगा। मैं तो समझता हूँ कि तुमको और बाल-बच्चों को पाकर वे ख़ुश ही होंगी।"

फिर कुछ देर तक दोनों चुप रहे। इसके बाद मार्ले बोली—अगर वहाँ पर दो अच्छे कमरे हों, तो हम लोग अच्छी तरह से ही रह सकेंगे। और तुम ठीक कहते हो कि उससे मेरे लिए काम करना भी आसान हो जायगा।

पीयर थोड़ी देर तक चुप रहा, वह कुछ भी बोल नहीं सका; उसकी आवाज़ रुक गई। वह समझता था कि अब बिना किसी आपत्ति के यह स्वीकार कर लेना होगा कि मार्ले उसे छोड़कर नहीं जायगी। इस सत्य को जान लेने के बाद अपने को सँभालने में पीयर को कुछ समय लगा।

मार्ले पहले ही की तरह पीयर के सामने खिड़की की ओर मुँह करके बैठी रही। उसकी सुदृश्य काली भौंहें अब भी पहले जैसी थीं। केवल उसका चेहरा शीर्ण और म्लान हो गया था और गालों में शिकनें पड़ने लगी थीं।

कुछ देर बाद पीयर ने कहा—बच्चों के बारे में...मार्ले ?

वह चौंक उठी। बच्चों के बारे में क्या ?

इतने दिनों तक वह जो आशंका करती थी, क्या अब वही होनेवाला है ?

"बुआ मारिट ने पुछवाया है कि तुम्हारे भाई के साथ लुइसे को हम उनके पास रहने के लिए भेजेंगे कि नहीं।"

उत्तेजित स्वर से मार्ले बोल उठी—नहीं, नहीं, पीयर, तुम्हें उसी वक़्त इनकार कर देना था। तुम उसका जाना अवश्य नापसंद

करोगे। वे क्यों उसे वहाँ ले जाना चाहते हैं यह तो तुमने समझ लिया है ?

पीयर खड़ा हुआ और अपने को बड़ी कठिनाई से शान्त करके बोला—तुम जैसा चाहो, मार्लें, कल तुम्हारे भाई जायँगे तब तक फिर सोचकर देखो। हर बात के दो पहलू होते हैं, एक ओर से तो यह हम लोगों के लिए दुःखदायी होगा; पर दूसरी ओर से बेचारी लुइसे के लिए इसका परिणाम महत्त्वपूर्ण हो सकता है।

दूसरे दिन सबेरे जब बच्चों को जगाने का समय हुआ, मार्लें और पीयर दोनों उनके सोने के कमरे में गये। लुइसे के बिछौने के पास खड़े होकर दोनों उसे देखने लगे। रोस्टा में आने के बाद लुइसे काफ़ी बड़ी हो गई थी। वह तकिया से मुँह ढककर सो रही थी; सुन्दर केशों से उसके गाल ढके हुए थे। लुइसे निश्चिन्त गहरी नींद में मग्न थी, जो कुछ हो वह अपने घर में सोई हुई थी। संसार में मा-बाप के पास वह जैसी निरापद है और कहीं वैसी नहीं हो सकती।

उसे जगाते हुए मार्लें ने कहा—लुइसे, उठने का समय हुआ, बच्ची।

अर्द्धनिद्रित अवस्था में ही वह उठ बैठी और दोनों के चेहरों की ओर विस्मित होकर देखने लगी। मामला क्या है ?

पीयर ने कहा, जल्दी से पोशाक पहन लो। कैसी अच्छी बात है ! आज तुम मामा के साथ ब्रूसेथ की बुआ को देखने जाओगी, क्या राय है ?

तुरन्त छोटी लड़की की नींद टूट गई, बिछौने से कूदकर उठी और पोशाक पहनने लगी। परन्तु उसने माता-पिता के चेहरे में ऐसा कुछ देखा जिससे उसका आनन्द कुछ कम हो गया।

उस दिन सबेरे बच्चों के बीच ख़ूब कानाफूसी होने लगी। सबसे छोटे दो बच्चे विस्मित नेत्रों से अपनी जानेवाली बहन की ओर टकटकी लगाकर देखने लगे। छोटी लोरेंज ने अपने घोड़े को स्मृति-चिह्नस्वरूप रखने के लिए बहन को दे दिया। आस्टा ने अपनी सबसे छोटी गुड़िया दे दी। मार्ले सबको यही विश्वास दिलाने की चेष्टा करने लगी कि लुइसे थोड़े दिनों के लिए जा रही है और फिर जल्द ही लौट आवेगी।

* * *

इउथोग जुनियर और लुइसे को लेकर ट्रेन स्टेशन छोड़कर चली गई और वे दोनों खिड़की से हाथ हिलाने लगे। पीयर और मार्ले दोनों अपने छोटे दो बच्चों के हाथ पकड़े प्लेटफ़ार्म पर खड़े रह गये। वे दूर पर गाड़ी की खिड़की से एक छोटे हाथ का रूमाल हिलाना देख रहे थे। इसके बाद गाड़ी का अन्तिम डब्बा भी पीछे धुआँ और घरघराहट छोड़कर अदृश्य हो गया।

वे चारों, जो रह गये थे, कुछ देर के लिए चुपचाप खड़े रह गये। इसके बाद मानो अपने अनजाने ही वे पहले से भी एक दूसरे के अधिक निकट हो गये।

पञ्चम परिच्छेद

बड़ी सड़क से थोड़ी दूर आगे बढ़कर ही एक एकमंज़िला मकान था, जिसमें एक क़तार में तीन छोटी-छोटी खिड़कियाँ थीं। उसके एक किनारे पर गाय का घर और दूसरे किनारे पर एक लोहार की दूकान थी। उस दूकान से जब धुआँ उठता था, तो पड़ोस के लोग आपस में एक दूसरे से कहते थे—"आज इंजीनियर साहब ज़रूर कुछ अच्छे हैं, इसी लिए दूकान में काम कर रहे हैं। अगर कोई काम कराना हो, तो उन्हीं से कराना; मज़दूरी भी वे अधिक नहीं माँगते हैं।"

दो सालों से मार्ले और पीयर यहाँ पर रहते थे। उनके जीवन एक साथ ही चल रहे थे लेकिन तो भी दोनों में कुछ भेद था। मार्ले अभी तक पति के चेहरे की ओर देखती रहती थी और यह आशा करती थी कि वे अच्छे हो जायँगे; परन्तु पीयर को अब कोई आशा नहीं थी। मस्तिष्क के भीतर का वह शब्द कुछ देर तक शान्त रहने पर भी साधारणतः कोई न कोई यातना रहती ही थी; परन्तु अब वह उसके बारे में कुछ कहता नहीं था। वह अपनी स्त्री के चेहरे की ओर देखता था और सोचता था—मार्ले बदलती जा रही है, इसके लिए मैं ही दोषी हूँ। दिन-रात मैं उसके ऊपर अपनी दुर्दशा को लादता आया हूँ। कम-से-कम अब उसके प्रतीकार की चेष्टा करना मेरा कर्त्तव्य है। इसी लिए पीयर का हृदय दुःख से भर जाता था, उस समय भी वह चुप होकर उसे सहन करने के लिए, यहाँ तक कि हँसने के लिए संग्राम करता था। पहले-पहल तो ऐसा करना बहुत ही कठिन मालूम हुआ,

परन्तु प्रत्येक विजय उसके हृदय में ऐसी तृप्ति लाई कि उसे और भी अधिक संग्राम करने की शक्ति मिली।

किसी प्रकार की अच्छी बात की आशा जब उसने छोड़ दी, स्वर्ग-मर्त्य में किसी के पास जब उसने कोई आवेदन नहीं किया, उस समय सब कुछ सरल हो गया। लोहार के काम से जब वह थक जाता और देखता कि मार्ले पानी ऊपर ले जा रही है, तो वह कहता—'नहीं मार्ले, क्या मैंने तुमसे यह नहीं कहा कि तुम पानी न लाना ? दो, बाल्टी मुझे दो।'—उस समय ऐसा कहने में उसे शान्ति मिलती।

"तुमको ? तुम इस काम लायक़ हो ?"

वह सब बातें रहने दो; मैं तो मर्द हूँ न ? तुम जाओ अपने रसोईघर में, औरत की जगह वही है।—यह कहकर पीयर पानी ले जाता और उसका मन और भी प्रफुल्लित हो उठता। यद्यपि कभी-कभी उसको ऐसा मालूम होता, मानो उसकी कमर टूट जायगी। कभी-कभी पीयर कहता—"मार्ले, आज कुछ आलस्य मालूम हो रहा है, कहो तो ज़रा लेटा रहूँ।" मार्ले समझती थी कि पीयर भयानक 'मस्तिष्क की यातना' से कष्ट पा रहा है और यह सोचकर कि मार्ले को कष्ट होगा, वह उसका नाम 'आलस्य' बताता है।

आज-कल उनके पास एक गाय, एक सूअर और कुछ चिड़ियाँ हैं। पीयर स्वयम् ही इन सबकी देख-भाल कर सकता है। गत वर्ष इन लोगों ने जो आलू उत्पन्न किया था उसमें से कई बोरियाँ बेची भी गई थीं। इन लोगों को अंडे ख़रीदने नहीं पड़ते, अब ये लोग अंडे बेचते हैं। पीयर स्वयम् इन वस्तुओं को स्थानीय दुकानदारों के पास ले जाता है और बाज़ार-दर से बेचकर उससे आवश्यक सामान ख़रीद लाता है। लाने में हरज ही क्या है ? कपड़ा धोना, फ़र्श को साफ़ करना, रसोई बनाना—ये सब काम

करने में मार्ले को अपमान नहीं मालूम होता। सच है, एक समय इन लोगों की दशा कुछ दूसरी थी। परन्तु उस बीते हुए दिन के लौटने का स्वप्न केवल मार्ले ही कभी-कभी देखती है। नहीं तो, उन्हें मालूम है कि वे जनहीन समुद्रतट पर लहरों से लाये हुए मनुष्यों की तरह हैं, और उन्हें बुरे दिनों को किसी प्रकार काटना है।

शायद कभी-कभी कोई किसान मरम्मत के लिए नई अमेरिकन फ़सल काटने की कल को उसकी दूकान पर लाता है। पीयर अद्भुत चेहरा बनाकर, होंठ चबाता हुआ निमिष भर के लिए मशीन की ओर देखता है और मानो कुछ घूँटने की कोशिश करता है। जिसने उसी की मशीन को चुराकर ज़रा अच्छी करके बनाया है, वह शायद आज लखपती बन गया होगा।

इन मशीनों की मरम्मत करते समय पीयर को अपने हृदय से संग्राम करना पड़ता है, परन्तु फिर भी सिर झुकाकर वह काम करता है, क्योंकि मार्ले के लिए एक जोड़ा जूता चाहिए।

कभी-कभी कमरे के अन्धकार और निहाई को छोड़कर वह दरवाज़े के पास खुली हवा में आता है; यहाँ खड़ा होकर विशाल और शून्य दिवस की ओर देखता है। आसमान की ओर देखता है। निरर्थक व्यस्तता के साथ बादलों को दौड़ते हुए देखता है। क्या वहाँ पर ये बादल किसी के विरुद्ध विद्रोह-यात्रा कर रहे हैं? पर स्वर्ग तो शून्य है, किसके विरुद्ध विद्रोह होगा?

लेकिन यह जो अन्याय और अजस्र वैषम्य है! अन्तिम दिन इसका विचार कौन करेगा?

कौन? कोई नहीं!

क्या? सोचो तो उन लाखों आत्मबलिदान करनेवालों के बारे में जो रक्ताक्त निर्यातन को सहते हुए मरे; जो मा की गोद के बच्चों

की तरह निष्कलंक थे, क्या उनके प्रति अत्याचारों का प्रतीकार करने का दिन कभी नहीं आयगा ? शायद नहीं।

परन्तु कितने ही मनुष्य अन्याय से विनष्ट हुए हैं, जिनकी आत्मायें अशान्त होकर घूम रही हैं, जो अनुचित लज्जा का बोझ लेकर मरे हैं, जिन्होंने न्याय के लिए संग्राम में प्राण दिये हैं, जिन्होंने दुख दुर्दशाओं को वरण कर सत्य के लिए संग्राम किये हैं परन्तु प्रबलतर मिथ्या के सामने उन्हें परास्त होना पड़ा है ! सत्य ? न्याय ? क्या, कोई ऐसा नहीं है जो उन मृत व्यक्तियों को शक्ति दे, जो वे फिर सब ठीक कर दें ? कोई भी नहीं है ?

नहीं, कोई नहीं है।

ठन, ठन ! निहाई से आग की चिनगारियाँ निकलतीं। जैसे हो, वैसे ही जीवन को बिता दो।

परन्तु नियति ने जिन अभागों को निर्विचार पीस डाला है उन मनुष्यों के साथ अपने को सम्मिलित करने के लिए उसके हृदय में एक विचित्र कामना का उदय होता है। उसके मन में उन सब अभागे मनुष्यों को एक संघ में सम्मिलित करने की इच्छा होती है, पर इसलिए नहीं कि सब मिलकर शोक-संगीत गायें। इसलिए कि वे सब एक विजय-संगीत में सम्मिलित हों; प्रतिशोध लेने के लिए नहीं, परन्तु एक स्तव-संगीत के लिए। हे शाश्वत सर्व-शक्तिमान्, देखो हम तुम्हारी निर्दयता का क्या प्रतिदान दे रहे हैं। हम जीवन की स्तुति कर रहे हैं; देखो, हमारा देवत्व तुमसे कितना अधिक है।

एक मन्दिर बनाने की इच्छा होती है। आधुनिक मानवात्मा के लिए, शाश्वत के लिए, प्यासी मानवात्मा के लिए, एक मन्दिर चाहिए; भिक्षा-मंत्र जपने के लिए नहीं, परन्तु मनुष्य के उदार हृदय से एक स्तव-संगीत को स्वर्ग की ओर प्रेरित करने के लिए।

क्या वह दिन आयेगा ? क्या किसी दिन यह मन्दिर बनेगा ?

एक दिन संध्या के समय बहुत ही प्रफुल्लित मन से पीयर पोस्ट-आफ़िस से आया।

"मार्ले, ब्रूसेथ से भद्र महिला की चिट्ठी आई है।"

"मार्ले ने लोरेंज की ओर देखा, लोरेंज मा के और भी नज़दीक़ आ खड़ा हुआ और अपने पिता की ओर देखने लगा।

"ब्रूसेथ से ? लुइसे कैसी है ?"—मार्ले ने पूछा।

पीयर ने जवाब दिया—यह लो चिट्ठी, स्वयम् ही पढ़कर देखो। सरसरी निगाह से चिट्ठी को पढ़कर मार्ले ने फिर लोरेंज की ओर देखा।

उस दिन संध्या के समय बच्चों के सो जाने के बाद, मा और बाप दोनों बैठकर धीरे-धीरे बातचीत करने लगे।

मार्ले को मानना पड़ा कि पीयर का सिद्धान्त ही ठीक है। लड़के को अपने पास रखना उनके लिए स्वार्थपरता का काम होगा, क्योंकि अगर उसे जाने दिया जाय तो एक दिन वह ब्रूसेथ की जायदाद का उत्तराधिकारी हो सकता है।

परन्तु जब वे स्टेशन पर लड़के को बिदा करने के लिए गये तो माता के आँसू नहीं रुके। वह शुरू से अन्त तक रूमाल से आँखें ढके रही और जब वे घर लौट आये, मार्ले बिस्तरे पर लेट गई। पीयर गुनगुनाता हुआ टहलने लगा और थोड़ा-सा भोजन बनाकर मार्ले के बिछौने के पास ले आया।

मार्ले अपने को सँभालने में असमर्थ होकर बोल उठी—मेरी समझ में नहीं आता कि तुमने किस तरह इस मामले को इतनी आसानी से स्वीकार कर लिया।

विचित्र हँसी हँसकर पीयर ने कहा—नहीं, मार्ले, ऐसी बात नहीं है। पर इस विषय की चर्चा न करना ही शायद अच्छा है।

लेकिन दूसरे दिन पीयर को फिर एक प्रकार का आलस मालूम होने लगा और उसने कुछ देर के लिए लेटे रहना चाहा। उसकी ओर देखकर मार्ले उसके मस्तक पर हाथ फेरने लगी।

समय बीतता जाता था। सहायता के बिना किसी तरह निबाहने के लिए वे लगातार कठोर परिश्रम करते रहते हैं। जो कुछ मिलता है, उसी से वे संतुष्ट हैं। पास की जब बड़ी डेयरी खुलती है तब वहाँ की मशीन फ़िट करके वह काफ़ी कमा लेता है परन्तु रास्ता बनानेवाले मज़दूरों के 'बरमे' पर सान देने में भी उसको कोई अपमान मालूम नहीं होता। औज़ारों के झोले को पीठ पर लेकर एक वेस्ट कोट पहने हुए पीयर को प्रायः गाँव की दूकान की ओर जाते हुए देखा जाता है। वह सिर ऊँचाकर चलता है। उसकी डाढ़ी सफ़ेद होने लगी है; उसके चेहरे पर प्रायः अनिद्रा के चिह्न रहते हैं, पर फिर भी वह रास्ते पर फ़ुर्ती से चलता है; लड़कियों से हँसी-मज़ाक़ करने में भी चूकता नहीं है।

ग्रीष्मऋतु में पड़ोसी प्रायः देखते हैं कि पीयर-दम्पति मकान में ताला लगाकर, झोला और क़हवे की केटली लिये पहाड़ की ओर जा रहे हैं और छोटी आस्टा पीछे-पीछे दौड़ती हुई जा रही है। शायद खुले आसमान के नीचे 'पिकनिक' की आग के पास बैठकर क़हवा पीते हुए वे विगत जीवन की स्मृति को पुनर्जीवित करने की चेष्टा करते हैं।

हेमन्त-ऋतु में जब पहाड़ की ढाल पर बड़े-बड़े खेत पीला रंग धारण करते हैं, इन लोगों की छोटी-सी ज़मीन भी सोनहली होने लगती है। इन दोनों के लिए वस्तुओं का आयतन आज

बहुत क्षुद्र हो गया है; अब एक बोरी अनाज ही उनके लिए प्रचुर है। वे जितना आलू पाने की उम्मीद करते हैं उससे दो-एक सेर कम होने से ही उन्हें अब बड़ी भारी क्षति मालूम होती है। परन्तु पड़ोस की स्त्रियाँ प्रायः यह देखने आती हैं कि मार्लें अपने घर को कितना साफ़-सुथरा रखती है। अब यद्यपि मार्लें की सहायता करने के लिए कोई नहीं है, तथापि वह किसानों की स्त्रियों को रसोई बनाने और सीने का काम सिखलाने को समय निकाल लेती है।

परन्तु उसका एक अभ्यास बढ़ता ही जा रहा है। खिड़की से वह बहुत देर तक घाटी की ओर आँखें गड़ाये देखती रहती है। मानो कुछ उसके सामने प्रकट होनेवाला है, वह उसी की प्रतीक्षा कर रही है। उसके अच्छे दिन कब आयँगे, शायद उन्हीं की प्रतीक्षा चल रही है। वहाँ खड़े-खड़े प्रतीक्षा करना मानो उसके लिए एक धार्मिक अनुष्ठान हो गया है।

इसी प्रकार समय बीतता जाता है।

षष्ठ परिच्छेद

प्रिय क्लाउस ब्रोक,

संप्रति हमारे यहाँ जो बातें हुई हैं उसी का समाचार देने के लिए तुमको यह पत्र लिख रहा हूँ, ख़ासकर इस आशा से कि संभव है इससे तुमको कुछ सान्त्वना मिलेगी। क्योंकि, भाई, मैंने यह समझा है कि हमारी यह जो विश्व-वेदना है इसे मनुष्य जीत सकता है, पर केवल एक ही उपाय से; अर्थात् यदि वह सब बातों को दूसरों की आँखों से न देख, अपनी आँखों से देखना सीखे।

अधिकांश लोग कहेंगे कि मेरी हालत दिन-दिन ख़राब ही होती जा रही है। और मैं भी अवश्य ही यह बहाना तो नहीं करूँगा कि मैं दुःख को दुःख ही के कारण चाहता हूँ। वरन् यही कहूँगा कि दुःख आघात करता है। दुःख महान् नहीं बनाता, बल्कि यह मनुष्य को पशु ही बनाता है, जब तक इस दुःख की विशालता में सभी वस्तुएँ नहीं आ जाती हैं। एक समय मैं प्रथम प्रपात का इंजीनियर-इन-चार्ज था और आज वही मैं एक ग्राम्य लोहार हूँ। इससे दुःख होता है। आँखें ख़राब होने के कारण पढ़ने-लिखने से मैं विच्छिन्न हूँ; जिसके साथ मिलने-जुलने से मैं आनन्द प्राप्त करता, वैसा आदमी यहाँ पर एक भी नहीं है, इसलिए इससे भी मैं वंचित हूँ। अभ्यस्त हो जाने पर भी ये बातें मन को पीड़ा देती हैं। इनमें अच्छी कहने लायक़ कोई बात नहीं है। मैंने बहुत बार ऐसा सोचा है कि बस, दुर्दशा की ढाल पर से लुढ़कता हुआ मैं बिलकुल नीचे आगया हूँ, परन्तु प्रत्येक बार मैंने देखा कि वह केवल क्षणिक विराम है। सबसे अधिक गहराई में पहुँचना अभी बाक़ी है। मान लो, तुम्हें अपना दिमाग़ फटता हुआ मालूम हो रहा है और फ़िर भी तुम काम करते जा रहे हो,

तुम अधिक से अधिक परिश्रम और किफ़ायत कर रहे हो, फिर भी तुम्हारी रोटी में प्रायः दूसरों की करुणा का स्वाद मालूम होता है। यह वेदनादायक है। अगर इस आशा को त्याग दो कि किसी दिन फिर दशा बदलेगी, यदि सब आशाओं, सब स्वप्नों, सब विश्वासों और सब मरीचिकाओं को त्याग दो, तब तुम अवश्य ही कहोगे कि अब इतने दिनों के बाद मैं अन्तिम अवस्था को प्राप्त हो गया हूँ। परन्तु, नहीं; अभी तुम्हारी सत्ता की जो जड़ है वही रह गई है; जो सबसे क़ीमती चीज़ तुम्हारे पास है वह अभी तक बाक़ी है। तुम पूछोगे कि वह क्या है ?

मैं तुमसे वही कहने जा रहा हूँ।

यह घटना तब हुई जब यह मालूम हो रहा था कि हमारी हालत कुछ अच्छी होने जा रही है। कुछ दिनों से मेरे मस्तिष्क की यातना कम हो रही थी। और मैं भी एक नई मशीन बनाने की कोशिश में था। फिर वही इसपात ! यह किसी प्रकार शान्ति से नहीं रहने देता। तुम तो जानते हो कि इसपात के अन्दर अनन्त संभावनायें मौजूद हैं। मार्ले भी नवीन उत्साह से काम कर रही थी। उसकी जैसी नारी ने स्वेच्छा से दुःख-दुर्दशाओं को अपने ऊपर उठा लिया है और निर्धन मनुष्य की जीवन-संगिनी होकर चल रही है ! वह तुमको कैसी लगती है ? आशा करता हूँ कि तुम भी एक दिन उसी की तरह एक नारी का साक्षात् प्राप्त करोगे। उसके केश सफ़ेद हो रहे हैं, उसके चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ रही हैं; यह सच है। पहले की तरह उसके शरीर में वह लावण्य नहीं है, उसके दोनों हाथ लाल और शीर्ण हो गये हैं। तथापि मेरे लिए इन्हीं में एक विशेषता और सौन्दर्य है। क्योंकि मैं जानता हूँ कि जितनी बार नई-नई विपत्तियाँ हम दोनों ने एक साथ पाई हैं, उतनी बार महाकाल ने उसके चेहरे पर एक-एक रेखा अंकित कर दी है।...कभी-कभी वह हँसती है; वह हँसी अब

दुख-भरी और अनिश्चित है। तथापि इस हँसी से हमें उन दिनों की याद आती है, जब हमारे निकट स्वर्ग-मर्त्य हिम-शीतल हो रहे थे और जब अधिक उत्ताप की लालसा से हम परस्पर एक दूसरे को और भी अधिक आलिंगन करना चाहते थे। हमारे सुख और दुःख ने मेरी प्रियतमा को इस प्रकार रूपान्तरित कर दिया है। संसार शायद सोचता है कि वह बुढ़िया होती जा रही है; परन्तु मेरी आँखों में वह दिन-दिन और भी सुन्दर बनती जा रही है।

ख़ैर, अब जो मैं कहने जा रहा था, वही बतलाता हूँ। दो सन्तानों को दूसरे के घर भेज देना आसान काम नहीं है, यह तुम समझ सकोगे। परन्तु जब वे लगातार घर आने के लिए बिनती के साथ पत्र लिखते हैं तब अच्छा नहीं लगता। फिर भी हमारी पाँच साल की लड़की आस्टा है; काश कि तुम उसे देखते! भाई, यदि तुम भी पिता होते और तुम्हारे यन्त्रणा-क्लिष्ट देह और मन के कारण दो बड़े सन्तानों के प्रति तुम्हें निर्दय आचरण करना पड़ता, तो जो सन्तान अब बाक़ी है उसके प्रति ममता और प्यार दिखलाकर अवश्य ही उस अन्याय की क्षतिपूर्त्ति करने की चेष्टा तुम भी करते; करते कि नहीं? 'आस्टा' नाम कैसा सुन्दर है, न? कल्पना करने की चेष्टा करो; धूप से विवर्ण एक छोटी-सी लड़की, काले-काले बाल, अपनी माता की तरह सुन्दर भौंह, हमेशा अपनी गुड़ियों को लेकर व्यस्त रहती है। इधर उसकी माता जब हम सबके लिए रोटी बनाती थी, तो वह कभी लकड़ी लाती, कभी अपने पिता के लिए छोटी-छोटी 'केक' बनाती, कभी छत पर के पक्षियों के साथ बातें करती, कभी कोई विस्मृत सुर याद आने पर उसे गाती। मा जब फ़र्श को साफ़ करने में व्यस्त रहती, तब छोटी आस्टा भी एक भींगा लत्ता लिये कुर्सी साफ़ करती। इसके बाद जब कभी कोई चोट लग जाती, तो चिल्लाती हुई वह दौड़कर निकल जाती लेकिन निकलते ही फिर

गाने लगती। मैं अपने कारखाने में काम कर रहा हूँ, बस, छोटे पैरों के शब्द हुए और उसके बाद एकाएक 'बाबू जी, खाने चलो' कहकर छोटे-छोटे हाथों से पकड़कर मुझे दरवाज़े की ओर ले चली। "बाबू जी, आज रात को मुझे नहला दोगे न ?" या "बाबू जी, यह लो तुम्हारी 'नैपकिन'।" डिनर में संभवतः केवल आलू और दूध हैं, तब भी उसका भोजन इस प्रकार चल रहा है मानो वह भारी भोज में बैठी है। "बाबू जी, आलू और दूध तुम बहुत पसन्द करते हो, न ?" नाना प्रकार के प्रश्नों के समय उसके कितने प्रकार के चेहरे बनते थे! रात को हमारे बिछौने में पैर की ओर के एक बक्स में वह सोती थी; जब रात को मुझे नींद नहीं आती थी, तो प्रायः ऐसा होता था कि उसके हलके और शान्त निःश्वास-प्रश्वास मेरे हृदय को भी शान्ति से पूर्ण कर देते थे। मानो उसके छोटे-छोटे दो हाथ मेरे हाथों को पकड़कर मुझको सुन्दर, स्वर्गीय निद्रा-राज्य में लेकर चले जाते थे।

अब मैं जितना ही उस घटना की ओर अग्रसर हो रहा हूँ, उतना ही लिखना कठिन मालूम हो रहा है; हाथ काँप रहा है। परन्तु मैं आशा करता हूँ कि अन्त में मैंने और मार्लें ने जिस प्रकार सान्त्वना पाई है, शायद तुम भी इससे कुछ सान्त्वना पाओगे।

यहाँ पर हमारे सबसे नज़दीकी जो लोग थे वे भी हमीं लोगों की तरह ग़रीब थे—एक कसेरा और कसेरिन आने के थोड़े ही दिन बाद मैं उस कसेरे से मिलने गया। मैंने देखा कि बेचारा दुबला-पतला और छोटा-सा मनुष्य है और वह तेज़ाब लेकर अव्यवस्थित रूप से काम कर रहा है और केटली, बरतन इत्यादि की मरम्मत करके अपनी रोज़ी कमा रहा है। सन्दिग्ध दृष्टि से मेरी ओर ताककर उसने कहा—"क्या चाहिए ?" इसके बाद मैं जब निकल आया तो दरवाज़े को उसने बन्द कर दिया।

शायद उसके मन में यह भय हुआ था कि मैं उसकी रोटी को छीनने गया था। उसकी स्त्री बहुत मोटी थी और उसकी हड्डियाँ बड़ी-बड़ी थीं; उसकी प्रकृति भी बहुत उद्धत थी। एक लड़की को पथभ्रष्ट करने में सहायता देने के अपराध में उसकी सज़ा हुई थी और थोड़े ही दिन पहले वह जेल से आई थी।

एक दिन रविवार को सवेरे उसके बग़ीचे के पुष्पित सेव-वृक्षों की ओर मैं देख रहा था। एक पेड़ घेरे के इतने निकट था कि उसकी शाखायें मेरी ही ज़मीन के ऊपर झुकी हुई थीं। फूल की सुगन्ध लेने के लिए मेरे एक डाल के झुकाते ही एक चीत्कार हुआ, "ऐ बुद्धू, पकड़ उस आदमी को", और कसेरे का बड़ा कुत्ता कूदकर मेरे गले को पकड़ने को तैयार हो गया। सौभाग्यवश कुछ अनिष्ट करने के पहले ही मैंने उसके गले की पट्टी को पकड़ लिया था। उसे उसके मालिक के पास खींच ले गया और कहा, "अगर फिर ऐसा हुआ, तो मैं मजिस्ट्रेट के आदमी को बुलाऊँगा।" बस, इसके बाद राग अलापना शुरू हो गया, संयम का बाँध टूट गया। मेरे बारे में उसकी जो धारणा थी उसने साफ़ कह दी; "अभागा दलिद्दर कहीं का, मुँह सम्हालकर बात कर; यहाँ आया है भलेमानुस की रोटी छीनने," इत्यादि, इत्यादि। साँप की तरह फुफकारता हुआ वह यह सब कहने लगा और घूँसा तानने लगा। अन्त में मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मेरे मस्तक पर आघात करने के लिए वह छुरा अथवा ऐसे ही किसी शस्त्र को ढूँढ़ रहा है। मैं अपनी हँसी न रोक सका। इस पृथ्वी-व्याप्त प्रतिद्वन्द्विता में दो बड़ी जातियों में जो होता है, उसी का एक उत्तम अभिनय हो गया!

दो दिन के पश्चात् मैं जब अग्निकुंड के सामने खड़ा था, ऐसे समय पर मेरी स्त्री की चिल्लाहट सुनाई पड़ी। क्या है,

कहकर दौड़कर जब बाहर निकला तब तक मार्ले बाड़ के पास पहुँच गई थी। तुरन्त ही मैंने देखा कि ज़मीन पर एक भयानक जानवर के शरीर के नीचे आस्टा पड़ी हुई है।

इसके बाद...हाँ, मार्ले ने कहा कि जानवर के नीचे से, मैं कपड़े के छोटे बंडल में से, इसे छीन लाई। हमारी छोटी लड़की को यह उठा ले गया था।

विपत्ति में डाक्टर एक सुन्दर आश्रय है; परन्तु कितनी भी अच्छी तरह वह एक शिशु के फटे हुए गले को क्यों न सी दे, उससे उपकार होगा ही, यह बात ज़रूरी नहीं है।

लेकिन माता उसे जाने देना नहीं चाहती; रोती हुई, विनती करती हुई, उसे रोकती हुई, फिर भी कुछ कोशिश करने के लिए कहती है। अन्त में जब वह चला जाता है, वह उसको फिर बुलाने जाना चाहती है; ज़मीन पर लोटने लगती है; अपने बालों को नोचने लगती है। उसने जिसे सत्य समझ लिया है, उसे छोड़ना नहीं चाहती; अन्यथा विश्वास नहीं कर सकती है।

उस रात को एक माता और एक पिता ने सामने की ओर अद्भुत और शून्य-दृष्टि से देखते हुए एक साथ जागकर बिताया। माता शान्त हुई। सन्तान को सजाकर सुला दिया गया। पिता खिड़की के पास बैठा बाहर की ओर देखने लगा। वह मई का महीना था। रात्रि धूसर वर्ण की थी।

इतने दिनों में मैंने इस बात को जान पाया कि प्रत्येक विशाल शोक हम लोगों को किस प्रकार उस सत्ता के अन्तिम कूल तक ले जाता है। इतने दिनों बाद मैं बिलकुल अन्तिम तटभूमि पर आ पहुँचा; इसके बाद अब ज़मीन नहीं है।

प्यारे मित्र, मैंने यह भी देखा कि दुःख-दुर्दशा-पूर्ण इन कई वर्षों ने मुझको एक ही साँचे में नहीं ढाला है, बल्कि बहुत-से

साँचों में ढाला है, क्योंकि मुझमें कई सम्पूर्ण व्यक्तित्व गढ़ने के योग्य उपादान थे। अब इतने दिनों में कार्य समाप्त हुआ, अब वे मुझसे अलग होकर अपने भिन्न-भिन्न रास्तों पर चल सकेंगे।

मैंने देखा कि एक मनुष्य स्वर्ग और मर्त्य की ओर घूँसा तानता हुआ रात्रि के अन्धकार में दौड़ता हुआ निकल गया। "इस प्रहसन में मैं और अभिनय नहीं करूँगा", यह कहकर वह पागल नदी की ओर निकल भागा।

परन्तु मैं तब भी चुप होकर बैठा रह गया।

मैंने एक और छोटे-से जीव को मुक्त होते देखा। वह एक दीन साधु था, आघात के सामने सिर झुकाकर उसने कहा—तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो। प्रभु ने दिया था, उसी ने फेर लिया है। दीन-हीन यह मनुष्य, रात्रि में चुपके-चुपके निकलकर अदृश्य हो गया।

परन्तु मैं तब भी चुप होकर बैठा रह गया।

जीवन के अन्तिम प्रान्त में निःसंग होकर मैं बैठा रहा; सूर्य, तारे सब मिट गये; मुझको घेरकर मेरे भीतर और बाहर, चारों ओर एक हिम-शीतल शून्यता विराजने लगी।

परन्तु, मेरे मित्र, उस समय धीरे-धीरे मुझे यह अनुभव होने लगा कि इतना होते हुए भी कुछ शेष रह गया है; एक छोटी-सी दुर्जय अग्नि की शिखा मेरे अन्दर स्वतः उद्भासित होने लगी। मन में ऐसा होने लगा मानो मैं अपनी सत्ता के पहले दिन में लौट आया हूँ और मेरे अन्दर एक शाश्वत इच्छा जाग्रत् होकर बोल उठी—'तमसो मा ज्योतिर्गमय'।

यह इच्छा मेरे अन्दर धीरे-धीरे प्रबल होने लगी और मैं बलवान् होने लगा।

पृथ्वी पर जितने मनुष्य हैं, सब पर मेरे हृदय में करुणा होने लगी; मैं भी उनमें से एक हूँ यह सोचकर मुझे गर्व होने लगा।

अदृष्ट किस प्रकार मनुष्य को सर्वरिक्त कर लूट सकता है, मैंने यह जिस प्रकार समझा, उसी प्रकार यह भी समझा कि अन्त में ऐसी एक वस्तु हमारे अन्दर शेष रह जायगी जिसे जीत सकने की शक्ति किसी स्वर्ग-मर्त्य में नहीं है। शरीर की मृत्यु तो ध्रुव निश्चय है, अहंभाव अथवा व्यक्ति का निर्वाण भी निश्चित है; तथापि हमारे अन्दर वह ज्योति है, ईश्वर और विश्व के लिए ज्योति और समन्वय का नित्य बीज वर्तमान है।

अब मैंने समझा कि मेरे जीवन के श्रेष्ठ वर्ष जिस बुभुक्षा में व्यतीत हुए हैं, वह ज्ञान नहीं है, सम्मान नहीं है, सम्पद् नहीं है; इसपात के राज में मैंने एक बड़ा स्रष्टा होना नहीं चाहा; धर्मयाजक होना भी नहीं चाहा। नहीं, मित्र, मैंने एक मन्दिरनिर्माण करना चाहा था; प्रार्थना-वेदी नहीं, अनुतप्त पापियों के आर्तनाद के लिए गिरजा नहीं, बल्कि महीयसी मानवात्मा की पूजा के लिए मन्दिर; जहाँ पर हम अपनी अन्तरात्मा को एक महान् संगीतरूपी अर्घ्य में परिणत कर उसे स्वर्ग की ओर उठा सकेंगे।

परन्तु अब मैं यह नहीं कर सकता। शायद पृथ्वी पर अब ऐसा कुछ भी नहीं है जो कि मुझसे हो सके। फिर भी मेरे मन में ऐसा हो रहा है कि मेरी ही जीत हुई है।

इसके बाद क्या हुआ ? हाँ, उस साल की वसन्त-ऋतु भर भयंकर सूखी हवा बहती रही। इस घाटी में प्रायः ऐसा ही होता है। वह चिरन्तन उत्तरी हवा सारे देश के ऊपर से बहकर आँधी उड़ाने लगी। हम लोगों को ऐसी शंका हुई कि अगर पानी न बरसा तो इस साल भी भयंकर अकाल पड़ेगा।

अन्त में लोगों ने साहस करके बीज बोया, तब पाला पड़ने लगा। बर्फ़, जल, बीज सब मिट्टी के अन्दर जमकर रह गये। मेरे पड़ोसी कसेरे ने अपनी ज़मीन पर जौ बोया था; परन्तु अब फिर बोने की ज़रूरत थी। बीज कहाँ था ? घर-घर वह बीज

माँगता फिरा, परन्तु आस्टा की उस घटना के पश्चात् लोग उसको घृणा की दृष्टि से देखने लगे थे। कोई उसे बीज उधार देने को तैयार न हुआ और बीज ख़रीदने को पैसा उसके पास न था। रास्ते पर लड़के उसे धिक्कारते थे और कुछ पड़ोसी उसे इस ज़िले से निकालने की बातचीत भी करने लगे थे।

दूसरे दिन रात को मुझे नींद नहीं आई और जब रात के दो बजे, तो मैं उठा। मार्ले ने पूछा—कहाँ जा रहे हो ? मैंने कहा—देखें आधा बोरी जौ हमारे पास है कि नहीं।

"जौ ? इस आधी रात को जौ का क्या होगा ?"

"कसेरे की ज़मीन को बोना चाहता हूँ। इसी समय करना अच्छा है, मेरा यह काम किसी को मालूम न होगा।"

मार्ले उठ बैठी, मेरी ओर विस्मित दृष्टि से ताकने लगी, "क्या ? उसकी ज़मीन में ? उस कसेरे की ?"

मैंने कहा, "हाँ, उसकी ज़मीन गर्मी भर अगर ख़ाली पड़ी रहेगी, तो उससे हम लोगों को तो कोई लाभ नहीं होगा !"

"पीयर, तुम कहाँ जा रहे हो ?"

"कह तो दिया" कहकर मैं निकल आया। पर मैं जानता था कि मार्ले भी जाने के लिए पोशाक पहन रही है। रात को पानी बरसा था। जब मैं निकला उस समय स्वच्छ और कोमल हवा चल रही थी। उषाकाल के अस्फुट धूसर प्रकाश के साथ उत्तरी बादलों से पीली आभा सम्मिलित हुई थी। हवा में खिलनेवाले 'बर्च' पुष्पों की सुगन्ध आ रही थी और पक्षी इधर-उधर उड़ने लगे थे, परन्तु मनुष्य एक भी दिखलाई नहीं पड़ता था। सारा ग्राम निद्रित था।

मैंने टोकरी में बीज लिया और पड़ोसी के बाड़े को लाँघकर बोना शुरू कर दिया। उस मकान में जीवन का कोई चिह्न नहीं मालूम पड़ता था। मैजिस्ट्रेट का कर्मचारी इसके

पहले रोज़ आकर उस कुत्ते को गोली से मार गया था। निःसन्देह पति-पत्नी उस समय सो रहे थे और चारों ओर शत्रुओं का स्वप्न देख रहे थे और यथाशक्ति उनके अनिष्ट करने की चेष्टा कर रहे थे।

प्यारे मित्र, और अधिक कुछ कहने की आवश्यकता है? फिर भी इस बात को तो सोचो, भाई, कि एक आदमी ऐसा है जो एक राज्य दान दे सकता है पर उसे कोई भी कमी नहीं होती; और एक आदमी ऐसा है जो केवल कुछ मुट्ठी अनाज दे सकता है और उसे देने के माने उसका सर्वस्व दे देना ही नहीं है, बल्कि उस दान को देने के लिए उसकी अन्तरात्मा को एक बड़ा भारी संग्राम जीतना पड़ा है। क्या तुम इसे कुछ भी नहीं समझते हो? अगर मेरी बात पूछते हो, तो मैंने मसीह का मुँह ताककर अथवा शत्रु के प्रति प्रेमवश यह काम नहीं किया है; अपने जीवन के ध्वंसावशेष पर खड़े होकर मैंने एक बड़ी भारी जिम्मेवारी का अनुभव किया; इसी लिए ऐसा किया है। मानव-जाति को उठना है। जो अन्ध-शक्तियाँ इसे नियंत्रित कर रही हैं, इसे उनसे अच्छा बनना है। अपने दुःखों के बीच में भी उसे इस बात पर सचेत होना होगा कि उसके अन्दर जो देवत्व है वह नष्ट न होने पाये। एक दिन अनन्त की ज्योति मेरे अन्दर प्रदीप्त हो उठी थी और उसने कहा था—'तमसो मा ज्योतिर्गमय'।

क्रमशः यह बात मेरे लिए और भी स्पष्ट हो उठी कि स्वर्ग और मर्त्य में मनुष्य ही को देवत्व की सृष्टि करनी है। यहीं पर विश्व की असंख्य जड़ शक्तियों के ऊपर मनुष्य की विजय है। इसी लिए मैं निकल आया और अपने शत्रु के खेत में बीज बो आया ताकि ईश्वर की सत्ता रह सके। आहा, अगर तुमने उस मुहूर्त्त का एक बार अनुभव किया होता! मुझको तो ऐसा

मालूम हुआ कि वायुमण्डल कण्ठस्वरों से परिपूर्ण हो गया। जीवन में मैंने जिन हतभाग्यों को देखा और जाना है मानो वे सब आकर मेरे साथी बनने लगे। वे आते ही गये। जो मृत हैं वे भी हमारे साथ होने लगे। अतीत काल के अन्दर से एक वाहिनी भी आकर साथ हो गई। बहन लुइसे वहाँ पर अपना वायोलिन बजाने लगी। उसने जीवन और मृत्यु के संगीत में, समग्र मनुष्य-जाति की प्रार्थना-संगीत में सबके स्वरों को सम्मिलित किया; देखो, हम सब तुम्हारे भाई हैं, तुम्हारी बहन हैं। तुम्हारी जो नियति है, हमारी भी वही नियति है। विश्व के उदासीन नियमों ने हम लोगों को एक ऐसे जीवन में डाला है कि वहाँ पर हम स्वतंत्रता के साथ कुछ भी नहीं कर सकते। अन्याय, रोग, शोक, अग्नि और रक्त ने हम लोगों को विध्वस्त कर रक्खा है। जो सबसे अधिक सुखी है, उसे भी मरना होगा। अपने घर में भी वह क्षण भर के लिए अतिथि है। उसको यह मालूम नहीं कि संभवतः कल ही उसे यहाँ से बिदा होना पड़ेगा। फिर भी मनुष्य अपने इस करुण भाग्य पर हँसता है। अपनी इस पराधीनता में भी उसने पृथ्वी पर सौंदर्य की रचना की है। उसकी यातनाओं के बीच में भी उसकी अन्तरात्मा में इतनी शक्ति बची रहती है जिससे इस हिम-शीतल शून्य आकाश को भी उसने ईश्वर से पूर्ण कर दिया है।

हे मानवात्मा, तुम ऐसे ही परमाश्चर्य हो; तुम्हारी प्रकृति ऐसी ही देवत्वपूर्ण है। मृत्यु की फ़सल काटकर तुमने वहाँ पर अमरता के बीज बोये हैं। इस विश्व को प्रेममय ईश्वर से पूर्ण कर अपने मन्द भाग्य का बदला लिया है।

उनकी सृष्टि में हम लोगों ने अपने काम किये हैं; हम, जो कि आज मिट्टी में मिल गये हैं, जो अन्धकार में बुझी हुई दीप-

शिखा की तरह डूब गये हैं। हम रोये हैं; हमने आनन्द भोगे हैं; तीव्र यातनायें और उल्लासों का अनुभव किया है; परन्तु हम सभी ने ज्योति के विशाल समुद्र में अपनी-अपनी किरण-रेखा को समर्पित कर दिया है। हम लोगों में हर एक ने ऐसा किया है; जिस निग्रो ने अपने मृतक की क़ब्र पर तुच्छ स्मृति-चिह्न अंकित किया है, उससे शुरू करके उस प्रतिभाशाली मनुष्य तक, जिसने आकाश-चुम्बी मन्दिर के स्तंभ निर्माण किये हैं। जिस बेचारी माता ने अपने शिशु के खटोले के पास प्रार्थना की है, उससे शुरू करके उस महावाहिनी तक जिनका स्तवसंगीत ऊपर अनन्त आकाश में जाकर विलीन हुआ है, हम लोगों में से प्रत्येक ने अपना-अपना काम किया है।

हे मानवात्मा, हमारी श्रद्धाञ्जलि ग्रहण करो। तुमने विश्व की प्राण-प्रतिष्ठा की है, उसे उसका लक्ष्य बतलाया है। तुम ही वह स्तवसंगीत हो जिसने विश्व में सामंजस्य स्थापित किया है। इसलिए अपनी ओर मुँह फेरकर देखो और सिर ऊँचा कर गर्व के साथ उस संकट का सामना करो जो तुम्हारे ऊपर आगया है। दुःख-दुर्दशा तुम्हें पीस सकते हैं, मृत्यु तुम्हें लुप्त कर सकती है, फिर भी तुम अजेय हो, तुम चिरन्तन हो।

प्यारे मित्र, मैंने ऐसा अनुभव किया था। जब बीज बोकर मैं लौट रहा था उस समय पर्वत के शिखर पर सूर्योदय हो रहा था। बाड़े के पास मेरी ओर ताकती हुई मार्ले खड़ी थी। किसान लड़कियों की तरह उसके मस्तक पर एक रूमाल बँधा हुआ था जिससे उसका चेहरा छाया में था। परन्तु मेरी ओर देखकर जब उसने मुस्कराया, तो ऐसा मालूम हुआ कि यह शोकार्त्त माता भी दुःखसागर से निकल आई है जिससे वह भी इस उषा-काल में ईश्वर के सृष्टि-कार्य में योग दे सके।

———

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.